श्री सद्गुरुवे नमः

वर्ष १० संख्या ११ — **वियोगाङ्क** — अगस्त सन १९३६

वियोगाङ्क

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

परमं पराणां परमं पवित्रं परंशर्माणं सुरलोकनाथम् ।
सुरासुरैरर्चितपादपद्मं सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरस्या भवत्कृपा श्रीमहिमः प्रसादात् ।
प्राप्ता मया श्रीगुरवे महात्मने नमो नमस्तेऽस्तु पुनर्नमोऽस्तु ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ।

वार्षिक चन्दा २) — सम्पादक :— स्वामी कृष्णानन्द, भूमानन्द — इस अंक का ।)

विषय सूची।

नं० लेख लेखक पृष्ठ

१. वेदोपदेश १

२. सद्गुरु का उपदेश २

३. पद (पूज्य श्री महाराज जी द्वारा रचित) ३

४. वियोग विभूति (ले० पं० हरीराम शर्मा ७

५. उच्च कोटि के संन्यासी (ले० श्री स्वामी आनन्दगिरीजी महाराज ७

६. श्री सरदार सावनसिंह जी साहब व्यास ८

७. छुप गये देव कहाँ तुम (ले० कुमारी सुमित्रा देवी प्रभाकर ८

८. श्रीमहाराज जी के वियोग की अनुभूति हम किस प्रकार कर रहे हैं [ले० केशवानन्द जी ब्रह्मचारी ९

९. मानुष होय के आप पधारे (कविता) ले० श्रीमती ब्रजकुमारी प्रभाकर ११

१०. श्री महाराज जी ने हमारी उन्नति के लिये क्या किया (ले० श्री दयालीराम जी बी. ए. भूतपूर्व डाइरेक्टर १२

११. देव कहाँ ढूंढूं (कविता) [ले० श्रीमती ब्रज कुमारी प्रभाकर १४

१२. श्रीमहाराज जी क्या थे (ले० श्रीमती देवकी देवी) १६

१३. श्री महाराज जी में मेरी भावना [ले० ला० श्रीराम जी रईस दिल्ली १७

१४. श्री महाराज जी के चरणों में श्रद्धाञ्जलि [ले० श्री महात्मा राम १८

१५. चन्द्रमा किते गयो (कविता) ले० श्री दुर्गा प्रसाद जी गुप्त २१

१६. श्री १०८ परम हंस श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज (ले० श्री पं० गंगादत्त जी पाण्डेय बी० ए० २२

१७. मेरे गुरु (ले० श्रीस्वामी नारायणदत्त जी २४

१८. वियोग [ले० राव बहादुर सरसिंह जी रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर २६

१९. श्रद्धा के फूल (ले० श्री फूलसिंह जी वानप्रस्थी २७

२०. वे क्या थे (कविता) ले० श्री प्रभुदत्त जी शास्त्री २८

२१. श्री महाराज जी (ले० श्रीमती श्यामा कुमारी प्रभाकर ३०

२२. सद्गुरु देव [ले० श्रीमती त्रिवेणी देवी ३२

२३. समाधि (कविता) ले० श्री दुर्गाप्रसाद जी ३२

२४. श्री महाराज जी और आश्रम [ले० श्रीमती सावित्री देवी गुजरान वाला ३३

२५. श्री भक्ति आश्रम (कविता) ले० श्री हरिकृष्ण कमलेश ३५

२६. वह महान पुरुष [ले० श्री हरिचन्द्र जी गालिब बी. एस. सी., एल. एल बी. ३५

२७. श्रद्धा के पुष्प [ले० श्रीमती सुभद्रा देवी ३६

२८. मेरे परम आराध्य देव [ले० श्री भूमानन्द जी ३७

२९. महर्षि की पुण्य स्मृति [ले० श्री महावीरसहाय ४१

३०. श्री महाराज जी कौन थे (कविता) ले० श्री दुर्गा प्रसाद जी गुप्त ४४

३१. शोक पंचक (कविता) श्री दुर्गा प्रसाद जी गुप्त ४५

३२. शेखावाटी यात्रा (ले० नवलकिशोर जी माथुर ४६

३३. श्री भगवद्भक्ति आश्रम के उद्देश्य ४७

३४. श्री महाराज जी और आश्रम [ले० श्री केदारनाथ जी शास्त्री ४८

३५. श्री महाराज जी की शिक्षायें [ले० श्री वैजनाथ जी बत्रा एम. ए. ५०

३६. निजधाम गमन (कविता) [ले० श्री राव रामचन्द्र जी यादव ५२

३७. पूज्य श्री महाराज जी (ले० श्री मूलनारायण जी मालवीय ५३

३८. परम पूज्य गुरुदेव की कीर्ति (ले० कुमारी कैलाश देवी श्री वास्तव ५५

३९. श्री भगवद्भक्ति आश्रम (कविता) ले० श्री दुर्गा प्रसाद जी गुप्त ५८

४०. उच्च कोटि के सन्त (ले० आनरेबिल डाक्टर सर गोकलचन्द जी नारंग वज़ीर पंजाब ५९

४१. श्रीस्वामी जी में मेरी भावना [ले० राव रामचन्द्र जी यादव ६०

४२ प्रभावशाली महापुरुष [ले० जमनालाल जी बजाज ६०

४३. एक विशेष पुरुष (ले० महात्मा महानन्द आनन्द कन्द ६२
४४. दीनों के रक्षक [ले० श्री कप्तान राव बहादुर चौ० लालचन्द जी एम. एल. ए. ६२
४५. समाधि (कविता) ले० व्रजकुमारी प्रभाकर ६२
४६. कुछ महानुभावों के भाव ६३
४७. हा! गुरुदेव [ले० कुमारी शान्ती देवी भूषण ६४
४८. श्रीमहाराज जी (ले० श्रीमती द्रोपदी कुंवर ७२
४९. परमहंस जी (ले० श्री सन्त पूज्य सच्चा बाबा ७३
५०. सच्चिदानन्द स्वरूप [ले० श्री महात्मा रामानन्द जी ७४
५१. तिमिरनाशक [ले० श्री भक्त आदिनारायण ७६
५२. पूज्य गुरुदेव [ले० श्रीमती गोदावरी देवी ७७
५३. पूर्ण ब्रह्म श्री महाराज जी [ले० श्री महात्मा शंकर देव जी ७८
५४. श्री महाराज जी कहां गये (ले० श्री प्रेमनाथ कुकराल बी. ए. एल एल. बी. ८०
५५. मेरे इष्टदेव की पवित्र स्मृति [ले० कुमारी सूरज देवी ८१
५६. पूर्ण सन्त (ले० राव श्रीराम यादव ८५
५७. कैलाश पति (ले० माई शिवानन्दी सरस्वती ८६
५८. अन्धों के रक्षक (ले० ला० शिवनारायण जी भटनागर सम्पादक वतन ८७
५९. पूज्य गुरुदेव (ले० ब्रह्मचारी गौरीशंकर ८८
६०. श्री महाराज जी क्या थे [ले० ब्रह्मचारी नवलकिशोर ८९
६१. पूर्ण योगी (ले० श्री मौनानन्द जी ९१
६२. श्रीमहाराज जी क्या थे (ले० ब्रह्मचारी रुद्रदेव) ९२
६३. आदर्श शिक्षक (ले० सरदार सरमुखसिंह जी बी. ए., एल एल. बी ९३
६४. भगवत् के अवतार (ले० श्रीमती रानी निहालकोर ९४
६५. सर्वव्यापी जगद्गुरु की अनुभूति (ले० श्रीमती सच्चिदादेवी ९५
६६. पतितोद्धारक [ले० कुमारी क्षमादेवी प्रभाकर ९६
६७. श्री १०८ श्री महाराज जी की याद (कविता) (ले० हरीराम ब्रह्मचारी ९७
६८. भजन ९८
६९. पत्र (प्रेषक हिज़हाइनेस महाराजा बहादुर सदाशिव राव पंवार देवास ९९
७०. महर्षि पूज्य श्री परमानन्द जी (ले० श्री रघुनाथ स्वामी नरेला ९९
७०. गुरुदेव के संस्मरण (ले० पं० जगदीश शंकर जी पाठक एम. ए. एल एल. बी. १००
७१. सर्वान्तर्यामी जगत् गुरु (ले० श्रीमती चिदानन्द लहरी १०१
७२. मेरे इष्टदेव (ले० कुमारी सुमित्रा देवी प्रभाकर १०२
७३. निष्काम योगी (ले० ब्रह्मचारी हीरानन्द जी १०३
७४. अनुपम ब्रह्म ऋषि (ले० पं० प्यारेलाल जी उपदेशक १०४
७५. दिव्य आत्मा (ले० कुमारी दुर्गा देवी १०६
७६. पूर्ण सद्गुरु (ले० कुमारी विद्या देवी जींद १०७
७७. देवता स्वरूप श्री महाराज जी (ले० ला० बनारसीदास जी सर्राफ़ १०८
७८. हमको दर्शन दो (कविता) ले० कुमारी भगवती देवी आयु ११ वर्ष १०९
७९. मेरे हृदय के स्वामी (ले० महात्मा कृष्णानन्द जी सरस्वती ११०
८०. दया सागर श्री महाराज जी (ले० रानी यशोदा देवी ११४
८१. जीवन्मुक्त श्री महाराज जी (ले० श्री नन्दकिशोर जी श्री वास्तव एम० ए० एल एल० बी० ११५
८२. सद्गुरु (ले० श्री भक्त नन्दकिशोर जी १२३
८३. भजन (संग्रहकर्त्ता गौरीशंकर ब्रह्मचारी १२४

चित्र सूची

१. परम पूज्य श्रीमहाराज जी (रंगीन) टाइटल पेज पर
२. परम पूज्य श्री महाराज जी (रंगीन) १
३. पतितोद्धारक श्री महाराज जी (सादा) ४७
४. योगेश्वर श्री महाराज जी (सादा) ९८

वियोगांक

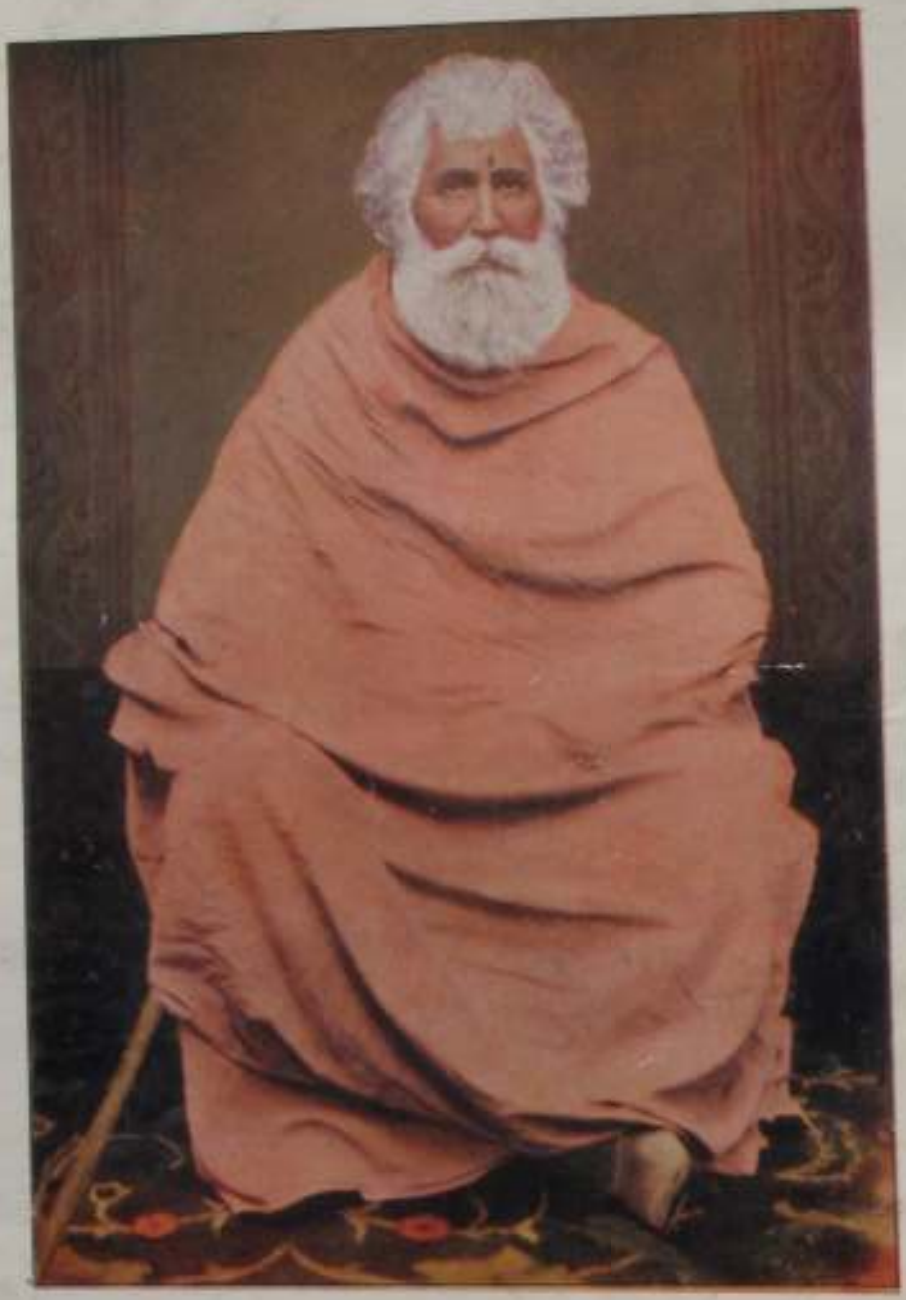

श्री गुरु परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सानिध्यमात्रेण चिदानन्दाय ते तनुः ॥

POPULAR PRESS, DELHI.

ENGRAVED BY
NURANI FINE ART WORKS DELHI.

वर्ष १० | श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी, अगस्त ता० १ महीना १९३६ | अंक ११

वेदोपदेश

**ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्ष्यम्
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षीभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि**

ब्रह्मानन्द स्वरूप, परम सुख के दाता, अद्वितीय ज्ञान की मूर्ति, शीतोष्णादि द्वन्द्व से रहित गगन के सदृश अर्थात् निर्लेप, तत्वमसि आदि वाक्यों के द्वारा जानने योग्य, द्वैत भाव से रहित, नित्य, निष्पाप, विपत्तियों से चलायमान न होने वाले, सम्पूर्ण प्राणियों की बुद्धि के साक्षीभूत, भावना से रहित तथा तीनों गुणों से रहित ऐसे सद्गुरुदेव को प्रणाम करता हूं ।

सद्गुरु का उपदेश

ओ३म् तत्सत् परब्रह्मणे नमः ।

समुद्र जब स्थिर रहता है तब उसे ब्रह्म कहते हैं और उसी समुद्र में जब लहर उठती हैं तब उसी को हम शक्ति या माया कहते हैं वही देश काल निमित्त स्वरूप है । सविशेष सगुण, निर्विशेष निर्गुण, उसके दो रूप हैं । पहिले रूप में वह ईश्वर जीव और जगत् है और दूसरे रूप में वह अज्ञात और अज्ञेय है । सर्वशक्तिमत्ता सर्वव्यापकता, अनन्तदया उसी जगज्जननी जगदम्बा प्रेमरूपिणी भगवती के गुण हैं । प्रत्येक व्यक्ति के पीछे अनन्त शक्ति विद्यमान है । एक कणविन्दु कृष्ण, बुद्ध खीष्ट आदि और जगत् का विस्तार एक विन्दु को प्रकाशित करता है । एक आत्मा ब्रह्म भिन्न २ सर्व उपाधियों में प्रकाशित होता है । बड़प्पन की डींग दलबन्दी ईर्ष्यादि सदा के लिये छोड़ दो, पृथ्वी की भांति सहिष्णु हो-जाओ । लड़कपन की चञ्चलता और युवापन की गम्भीरता दोनों मिला कर सब के साथ प्रेम से रहो ।

आत्मा के स्वरूप का व्यक्त और कभी अव्यक्त भाव होता है । आत्मा मानों बादलों से ढके हुए सूर्य की न्याई है । हृदय को समुद्र के समान महान बना डालो, क्षुद्र भावों को पार कर जाओ, अमंगल के आने पर आनन्द में उन्मत्त हो जाओ, संसार को एक विच की भांति देखो, जगत् में कोई तुमको विचलित न कर सकेगा । अहन्ता को दूर कर दृढ़ता से खड़े हो जाओ काम, कांचन, मान, यश को छोड़ कर ईश्वर को दृढ़ता से पकड़ो । विधि निषेध के घेरे में पड़े रहने से आत्मा का प्रकार नहीं होता । जो जितनी ही आत्मानुभूति का प्रकाश कर सकता है उनके उतने ही विधि निषेध कम हो जाते हैं । दूसरों की सेवा शुभ कर्म है इसी के प्रभाव से चित्त शुद्ध होता है इसी के प्रभाव से सब के भीतर बैठे हुए अन्तर्यामी भगवान् प्रकाशित होते हैं । आदेश के अनुसार संगठन करने का उद्योग करना, धर्म का यही लक्ष्य है यही उद्देश्य है । आदर्श, धार्मिक क्षमा, धृति, शौच, शान्ति, उपासना और ध्यान में परायण आदर्श का अवलम्बन विस्तार ही जीवन और संकीर्णता ही मृत्यु है: जहां प्रेम वहीं विस्तार जहां स्वार्थता वहीं संकोच । अतएव प्रेम ही जीवन का एक आधार है अवश्य अहेतुक प्रेम करना चाहिये वही एक मात्र जीवन गति का नियमन करने वाला है जिस कर्म से जीवों के मन में धीरे धीरे ब्रह्मभाव के उदय होने में सहायता पहुंचे वही कर्म उत्तम है यदि किसी को अधिक सुभीता देना हो तो बलवान की अपेक्षा दुर्बल को अधिक सुभीता दो (सदा दाता बनो) अपना सर्वस्व दे डालो पर बदले में कुछ न चाहो दूसरों से प्रेम करो, सहायता करो, सेवा करो, तुम से जो कुछ बने दूसरों के लिये करो पर सावधान पलटे में कुछ न चाहो । व्यक्तिगत,

देशगत, कालगत, कर्माकर्म का साधन करो ।

आलस्यं मृत्युरित्याहुर्यत्नं जीवन मिष्यते ।
पिपीलिकाः कणशः कणशोऽन्नं समाहृत्य न विरमं प्रदर्शयन्ति । पुत्तिका बहुविकसन्ध्यायां क्षणमपि न विरमन्ति । सूर्यादयो ग्रहा महता वेगेन भ्रमन्तः क्षणमपि विश्रान्ति न काङ्क्षन्ति । क्षणमपि स्तम्भिते सर्माणं कर्षमिव व्याकुला भवन्ति जीवाः

हे सच्चिदानन्द अनन्तज्ञानस्वरूप नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव सर्वशक्तिमान सर्व हृदयान्तर्गत सर्वव्यापक प्रभो । यदि मैं तुमको यहां मनुष्य शरीर में रहते हुए भी अपने आत्मा में साक्षात् नहीं कर पाता तो और कहां पाऊंगा। अय ! मेरे प्यारे परमात्मा मेरे हृदय और नेत्रों में प्रकट हो कर साक्षात् दर्शन दिखाओगे तो इस जीव का कल्याण होगा। परमात्मा यह न वह बरंच सारे पदार्थों में है । सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उसका जीवन चरित्र है जो सब के हृदय में विराजमान होकर वह स्वयं लिख रहा है । सारे पदार्थ परमात्मा के शब्द हैं और बोलते हैं कि आओ आओ मेरी ओर आओ । जो ईश्वर ध्वनि को नहीं सुनता वह बहरा है। जो मनुष्य उत्पन्न हुए पदार्थों के सौंदर्य को नहीं देखता वह अंधा है सौंदर्य विवेक धर्म एक ही हैं । तर्क से हम परमात्मा का चिन्तन करते हैं परन्तु सौंदर्य साक्षात् दर्शन कराता है वह मनुष्य जो इन सकल पदार्थों को निरीक्षण करके भी धन्यवाद गायन नहीं करता वह गूंगा है। संसार की सुन्दर वस्तुयें एक विशेष सौंदर्य की सत्ता की साक्षी है प्रत्येक मधुर वस्तु अत्युत्तम मधु को दर्शाती है। जो अन्य पदार्थों के सौंदर्य और उत्तमता का स्रोत हो उसी को परमात्मा कहते हैं जो वस्तु ईश्वर के समीप है वह उत्तम है और जो दूर है वह निकृष्ट कहाती है। प्रत्येक पवित्रतायें उस पवित्रता के स्रोत को दर्शाती हैं। जो अच्छा है वह अपने से अत्युत्तम श्रेष्ठता के अस्तित्व का प्रमाण है। उच्च स्वर से सकल पदार्थ पुकार रहे हैं कि परमात्मा सब में विद्यमान है । जब हम किसी वस्तु से प्यार करते हैं तो उसके आभ्यन्तर वास करने वाले परमात्मा के कारण से करते हैं । प्यासा मनुष्य जल की अभिलाषा इसलिए करता है कि जल में परमात्मा निवास करते हैं परमात्मा भक्तों के हृदय में प्रकट होते हैं। महान से महान सुख अच्छे कामों के चिन्तन से होता है परमात्मा उन से प्यार करते हैं जो बुरे कामों से घृणा कर श्रेष्ठ कार्यानुरत रहते हैं।

---

*पद

दोहा-घड़ा फड़के सुन्न में, बाजे अनहद तूर।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोई शूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर,
सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर,
हो जावे पूरण ज्ञानी ॥टेक॥
श्याम पुतलिया चदल आंख की,
रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर,

---

*पूज्य श्री महाराज जी द्वारा रचित

भिन्न भिन्न आसन मारे ॥
जिस में थाना सहस्र कमल का,
तीन लोक तहां विस्तारे ।
जनिता सविता देव सबन के,
इच्छ रूप सातों धारे ॥
चूं चूं चैंकला झाल समध की,
घण्टा शंख बजैं न्यारे ।
धूम निहार गगन में धसि चल,
ज्योति जरैं नौलख तारे ॥
पांच कमल के बीच कुण्डलिनी,
सहज सहज ही फुंकारे ।
मेरु दण्ड से सीधा होकर,
तोड़ दिये नभ के तारे ॥
तीन लोक की रचना यहां से,
भई सुरति यहां दीवानी ।

सातों रंग निरखता० ॥ १ ॥

दर्शन यहां तिरलोक पति के,
पाओ मन में हर्षाओ ।
सूची अग्र छिद्र में हो कर,
वंक नाल में घुस जाओ ॥
तिरछा मारग वंक नाल का,
बिन सत्गुरु कछु नहीं पाओ ।
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर,
त्रय मंडल पर चढ़ जाओ ॥
प्रत्याहार धारणा धारो,
सिमट बीच सुख मन पाओ ।
पी पी पपीहा ऊपर बोल्यो,
कूर्म बन कर छुप जाओ ॥
और मरे सब जग का मरना,
तुम जीते जी मर जाओ ।
भृंगी गुरु का शब्द सुनो तुम,
चरण गुरु के चित लाओ ॥
तन मन सौंपो अपना उनको,
हो जावो सर्वस्व दानी ।

सातों रंग निरखता० ॥ २ ॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अंडे से,
त्रिकुटी का मंडल साजा ।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा,
सरे जीव का सब काजा ॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत,
ओ३म् ओ३म् हुइ बाजा ।
रस का उठे सरूर यहां पर,
अनहद का बादल गाजा ॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां,
मदन देख कर ही लाजा ।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से,
जब मोह जाल टूटा तागा ॥
गंगा यमुना और सरस्वती,
इनके भीतर तू आजा ।
अमृत रस में न्हाकर यहां पर,
विश्वनाथ दर्शन पाजा ॥
योजन कोटि सुरत फिर जाकर,
दशो शून्य में मनमानी ॥

सातों रंग निरखता० ॥ ३ ॥

द्वादश गुण प्रकाश यहां का,
त्रिकुटी से शून्य में आई।
रूपवन्त देवों से मिलकर,
सिंधु सरोवर जा न्हाई॥
महा शून्य की छवि को कोई,
कहो कैसे सके गाई।
मान सरोवर अमृत धारा,
आनन्द की नदियां पाई॥
सारंगी सितार बजें हैं बाजे,
श्रुति शब्द में ठहराई।
वसु मरुत वहां वास करे हैं,
कहा कहूं सुन्दरताई॥
अग्नि चन्द्र समान मुखों से,
मंद मंद ही मुसकाई।
आयु षोडश वर्ष सदन की,
ऐसी ही अबला पाई॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहां,
अमृत रस बरसे पानी।
सातों रंग निरखता० ॥४॥

रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके,
उठे प्रेम की लहर घनी।
बाग बगीचे अमर फलों के,
लालों की वहां सड़क बनी॥
अमी सरोवर बाग बाग में,
तट इनका पारस की मणी।
कैसे शोभा कहें यहां की,
सब कुछ जाने आप धनी॥

स्वयं प्रकाश रूप को लेकर,
सुरती फिर आगे को चली।
योजन अरब गई ऊपर को,
आगे मिल गई प्रेम गली॥
दशों दिशा में घोर अंधेरा,
मगन भई नहीं छली चली।
योजन खरब गई नीचे को,
यहां से देखी सैर भली॥
इस पद में दस नील अंधेरा,
यहां से सुरती उलटानी।
सातों रंग निरखता० ॥५॥

योजन खरब गई नीचे को,
थाह वहां की नहीं पाई।
धर सतगुरु का ध्यान सुरतिया,
उलट गगन पर चढ़ि आई॥
महा शून्य से आगे आकर,
सितासिता नदियां न्हाई।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा,
भंवर गुफा भूली जाई॥
एक हिंडोला अद्भुत यहां पर,
झूल रहे मुनिवर राई।
इड़ा पिंगला यहां पर अद्भुत,
सुषमन की पलटी लाई॥
कुंडली लंगर जब खींचा,
पींग गगन झोका खाई।
परा पश्यति और मध्यमा,
सखियों ने वाणी गाई॥

अनहद घोर घटा बिन बरसे,
बंसी मधुरी मन मानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ६ ॥

गोपी मधुरी वाणी गावें,
बंसी बजावें नन्दकुमार ॥
एक एक गोपी संग मिलकर,
सोऽहं सोऽहं रहे उचार ॥
हियरा से हियरा मिलि भेटे,
आनन्द को करें सुमार।
और देव की गम नहीं यहां पर,
महादेव लई मन में धार ॥
गोपी बन कर मिले गले से,
चरणों से गलबैयां डार।
एक होगये स्वयं रूप में,
नयनों से नयनों की धार ॥
गंगा यमुना अचल होगई,
ऐसा अद्भुत किया विहार।
रुद्र साध्य मुनि एक हो गये,
ताड़ी लागी अगम अपार ॥
नाका टूटा सत्यलोक का,
उड़ गये हंसा सैलानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ७ ॥

ज्योति हंस यहां वास करें है
सूक्ष्म चैतन्य हो दर्शाया।
जड़ स्थल नहीं है यहां पर,
ना यहा पर काया माया ॥
प्रेम दिवानी भई यहां पर,
सत्य सत्य आपा पाया।
टक टक धुनि सुनि के बीन की,
फिर आपे में मगनाया ॥
रूप स्वरूपा नदियां यहां पर,
सोना रूपा ले आया।
वन उपवन हैं यहां पै अद्भुत,
कोटि चार उनकी छाया ॥
कोटिन सूर्य चांद समाना,
पहुप वृक्ष पर लगि आया।
परम हंस यहां वास करें हैं,
एक भुशुण्ड काग पाया ॥
रस बस के सीकारे यहां पर,
हंस करे मधुरी बानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ८ ॥

सत्य पुरुष का दर्शन किया,
क्या बरणों सुन्दरताई।
कोटिन सूर्य चांद देख लो
एक रोम से शरमाई ॥
पद्म त्रय लोक बराबर उनकी,
छिति सेज सुख की पाई।
जाकर सोई पिया संग अपने,
सुध बुध अपनी बिसराई ॥
सन्त कहैं अब अलख लोक की,
महिमा और उत्तम ताई।
अरबन खरबन ज्योति चमकें,
कोटि शंख जो मलूकाई ॥
अगम लोक की गम नहीं मुझ को,
गूंगे ने मिसुरी खाई।
परमानन्द गुरु चरणों पर,
कोट कोट ही बल जाई ॥
गुरु मिला आपा जब मेटा,
श्रुति शब्द में मगनानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ६ ॥

वियोग विभूति

(ले० पं० हरिराम शर्मा पानीपत)

परम पूज्य श्री १०८ श्री महाराज जी की वियोग विभूति एक मात्र आश्रम ही है जिसके वृक्ष, जलाशय, पशु, पक्षी तथा संस्थाओं की रक्षा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। इससे श्री महाराज जी की योग माया तथा ब्रह्म चिन्तन ध्वनि द्वारा संशोधित वायुमंडल आध्यात्मिक व शारीरिक उन्नतिदाता बन कर हमको सच्ची शान्ति प्रदान करेगा। ब्रह्म ज्ञानि सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है। हमें भी उनके उपदेशों व उद्देशों पर चलने से पत्ते पत्ते में तथा हर एक अणु परमाणुओं में श्री महाराज जी के ही दर्शन होंगे। इस प्रकार हम सर्वत्र उनको देखते देखते ब्रह्म रूप ही हो जावेंगे।

श्री महाराज जी पूर्णब्रह्म थे और अब ये सर्व उपाधियों को पूर्ण रूप से छोड़ कर विरक्त रूप से शुद्ध ब्रह्म में लीन हो गये। और हमारे लिये आश्रम रूपी अपनी पुण्य स्मृति छोड़ गये।

उच्च कोटि के संन्यासी

(ले० श्रीस्वामी आनन्दगिरी जी महाराज)

श्री महाराज जी उच्च कोटि के संन्यासी और पवित्र जीवन वाले साधु थे। आप ने हमारे लिये ज्ञान का खज़ाना बांटना आरम्भ किया। सत्संग से उन्हें सदा ही प्रेम रहा। वह अपनी युवावस्था में जब पूर्ण वैराग्यवान् थे और निवृत्ति से प्रेम करते थे तब भी लोगों को सत्संग का उपदेश करते थे। जब कार्यक्षेत्र में आये तो उसी उपदेश को कार्य रूप में परिणत किया। सत्संग करवाते सत्संग सभा बनाते रहे। आन्तरिक ज्ञान चक्षुः प्रदान करते २ शारीरिक चक्षुः भी अनेक व्यक्तियों को दिये। कई स्थानों पर अन्धों की आंखें बनवाने का आपने यत्न किया मेले करके निर्धनों के दृष्टि रोगों को दूर किया। आप के अन्दर परोपकार की भावना बहुत थी। वह हर प्रकार से परोपकार करते और दूसरों को परोपकार करने का उपदेश देते थे।

श्री महाराज जी के प्रति हमारे भाव श्रद्धा पूर्ण हैं हम उन्हें महापुरुष मानते हैं क्रोध रूपी महाबली शत्रु पर श्री महाराज जी का पूरा पूरा विजय था। उनकी अवस्था की जांच तो यहां तक की गई कि उन्हें गाली देने पर पत्थर मारने पर भी वह उसका भला ही चाहते थे। आज उनके पञ्चभौतिक शरीर के वियोग को हम असह्य वेदना पूर्वक अनुभव करते हैं। उनकी पुण्य स्मृति आने पर भारी हानि प्रतीत होती है। जिसकी पूर्ति होनी अत्यन्त कठिन है। आप का वियोग हिन्दूजाति का दुर्भाग्य है, इतनी महान् व्यक्ति का लोप होना अत्यन्त कष्ट प्रद है। उनके सुन्दर उपदेशों को स्मरण करके चित्त उनके वियोग की हानि को जो अनुभव करता है वह लेख में नहीं लाई जा सकती।

श्री पूज्य सरदार साहबसिंह जी महाराज

साहब व्यास का पत्र

लग भग ५ या ६ साल का समय बीता जब मैं मि० चानन शाह एम० ए० एल एल० बी० इनकम टेक्स आफीसर देहली के पास ठैरा हुआ था कि मुझे श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी से परिचय होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपसे वार्तालाप करने से अति आनन्द प्राप्त हुआ और इच्छा थी कि फिर भी कभी श्रीमान् जी के दर्शन होते। आप सरल तथा साधु स्वभाव रखते थे। वेद शास्त्र के ज्ञाता होने के अतिरिक्त आप अच्छे अभ्यासी महात्मा थे। भगवद्भक्ति तथा प्रेमारस के आनन्द में मग्न रहते थे। आपके अन्तर्ध्यान होने की सूचना पाकर खेद हुआ कि आपके प्रेमी आप के दर्शन तथा मनोहर वचनों से अब लाभ न उठा सकेंगे!

छुप गये देव कहाँ तुम आज ?

(ले० कुमारी सुमित्रा देवी "प्रभाकर")

दिखा कर अनुपम मूर्ति ललाम, विश्व के स्वामी हे अभिराम!
कहाँ, क्यों चले गये हे नाथ, छोड़ कर हम दीनों का साथ ॥ १ ॥

अरुण अनुपम सुन्दर गम्भीर, अधिक शीतल हरने को पीर।
दया की वर्षा करके नीर, दिलाती थी मनुजों को धीर ॥ २ ॥

श्री विश्व-विमोहन दिव्य मधुर, था भरा हुआ अति स्नेह प्रचुर।
कमल लोचन थे ललित रसाल, शान्ति दायक थे अति विशाल ॥ ३ ॥

हमारे सब कुछ थे वे नाथ, मूंद फिर लिये नेत्र क्यों नाथ ?
दिखा कर अतुल दया प्रभु आप, छुप गये देव कहाँ चुप चाप ॥ ४ ॥

श्रीमहाराज जी के वियोग की अनुभूति

हम किस प्रकार कर रहे हैं।

[ले० श्रीकेशवानन्द जी ब्रह्मचारी]

श्री १०८ परम पूज्य परमहंस श्रीसद्गुरुदेव के अकस्मात अन्तर्ध्यान होने से जो हम लोगों पर वज्रपात हुवा है उसको मैं अपनी लेखनी से वर्णन नहीं कर सका परन्तु फिर भी अपने हृदय रूपी भावनाओं के पुष्पों को उनके चरण कमलों में समर्पित करता हूं। हे हृदयेश्वर ! हे प्राणेश ! हे नाथ ! इस जीर्ण शीर्ण जीवन रूपी नौका के तुम्हीं एक मात्र पतवार हो ! हे प्रभो ! तुम्हारे बिना यह समस्त संसार असार तथा अंधकारमय प्रतीत होता है। हे गुरुदेव ! तुम कौन थे ? यह मैंने नहीं जाना और तुम आंखों से ओझल हो गये। आप सामने से अब कहां जा छुपे ? हे अणु अणु में चमकने वाले ! हे सर्वत्र व्यापक रहने वाले ! आवो, आवो, और इस हृदय में समा जाओ मैं तेरे लिये व्याकुल हुवा जाता हूं। तेरे लिए तड़फ रहा हूं, तेरी बेचैनी मुझ से सही नहीं जाती। बनों, तपवनों में, निर्जन स्थानों में, गुफाओं में, झीलों में, झरनों में, सर्वत्र तुम्हें तलाश किया परन्तु तुम कहीं नहीं मिलते। मैं व्याकुल हूं, विह्वल हूं। हे योग योगेश्वर ! आप अपनी भव्य तेजोमय मन मोहनी मूर्ति का दर्शन क्यों नहीं देते ? तू शान्ति स्वरूप है, तू प्रेम स्वरूप है, तू सुख स्वरूप है, तू ज्योति स्वरूप है, मेरे हृदय में भी अपने दिव्य ज्ञान का दीपक जला दे। दूध में घी, तिल में तेल, पुष्प में सुगन्ध की तरह मेरे रोम रोम में समाजा। हे गुरुदेव ! क्या मैंने तुम्हारे पाने का प्रयत्न नहीं किया ? हां सच्चे दिल से नहीं किया, नहीं तो गुरुदेव तुम्हारा हम से वियोग नहीं हो सका था, परन्तु फिर भी तुम मुझ से पृथक नहीं हो सके। तुम सर्व व्यापक हो समस्त ब्रह्माण्डों में समाए हुए हो फिर भी आप दीखते क्यों नहीं ? क्या हम इस योग्य नहीं हैं ? तूने महान् पतित, नीच पापी और चाण्डालों के समस्त अपराधों को क्षमा कर के उनको अपने हृदय से लगाया। हे करुणा, दया और क्षमा के सागर ! हे क्षमा स्वरूप ! आप हमारे समस्त अपराधों को क्षमा करें। मैं पतित हूं तो तू पतित पावन है। मैं अधम हूं तो अधम उधारन है। मैं अनाथ हूं तो तू नाथ है। मैं भिखारी हूं तो तू दाता है परन्तु फिर भी तू दिखाई क्यों नहीं देता ? क्या मैं तुझे देखने के योग्य नहीं हूं ? हे सर्व गुण निधान, सर्व विश्व का कल्याण करने वाले, सबको अपनाने वाले, सांसारिक यंत्रणाओं से मुक्त करने वाले ! तुमने इस संसार में प्रादुर्भूत होकर समस्त धर्मावलम्बियों को यह ज्ञान दिया।

अयं निजः परो वेत्तिगणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह मेरा है यह तेरा है यह भेद भावना आपने नष्ट की सबको एकता का पाठ पढाया। तू सबका है तेरे सब हैं। तू भावनाओं का भूखा है। तू प्रेम स्वरूप है, प्रेम क्या वस्तु है ? तूने यह पाठ नहीं

पढ़ाया वरन् तूने जीव मात्र से प्रेम कर के प्रेम स्वरूप की उपाधी प्राप्त की। तूने अपनी भक्ति तथा प्रेम रूपी अमृत से तार्किक, नास्तिक तथा अनीश्वर वादियों के शुष्क हृदयों में भी अपने दिव्य ज्ञान का प्रकाश डाला। परन्तु हे इस भारतवर्ष के जगमगाते हुये सूर्य! अब तुम कहां जा छुपे? तुम्हारे लिये हे गुरुदेव योगी, यति, त्यागी, रागी, विरागी, ब्रह्मचारी, गृही, वानप्रस्थि, संन्यासी, पशु, पक्षी, पुष्प, लतायें समस्त शोकाग्नि से व्याकुल हैं हम तेरे प्रेमी हैं, तेरे भक्त हैं, तेरे दर के तुच्छ भिखारी हैं, तू हम अनाथों की झोली में अपने उस प्रेम की भिक्षा डाल जा। हे नाथ! फिर अपनी वो मन मोहनी सूरत दिखाजा तुम्हारा हमसे यह पर्दा कैसा? हे गुरुदेव! आपकी वो प्रेम भरी हंसी, अमृत रूपी वाणी, आपकी वो प्यारी २ मूरत जब याद आती है तब हृदय व्याकुल हो उठता है। हां तेरे देखने के लिये पवित्र हृदय हो, आखों में वो दिव्य तेज हो मन में भावुकता हो। हे प्रभो! हमारे अन्तःकरणों में वो आत्म शक्ति भर दो कि हम तेरे पवित्र भक्ति मार्ग पर चलते हुए महान से महान कष्टों को भी सहन करें। हम तेरे लिए जीवें, तेरे लिए मरें, तेरे लिए सोवें, तेरे लिए जागें, और तेरे बतलाये मार्गों को हम क्रियात्मक रूप में परिणत कर सकें। हे गुरुदेव! तुमने हमें वो आदि सनातन वैदिक धर्मपथ जो ऋषियों का प्यारा भक्तों का प्राणाधारा भूले हुयों का सहारा है, कर्तव्याकर्तव्य विमूढ़ मूढ़ पुरुषों को दिखाया।

हे नाथ! आपने हमें यह सिखाया कि सच्चा धर्म्म वह है जिसके द्वारा दुष्टों का नाश और सज्जनों की रक्षा हो। आपने भक्ति का मार्ग बता कर हम को भगवद्भक्ति, गुरु भक्ति, मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, देश भक्ति, गो भक्ति, के पाठ पढ़ाए। हे प्रभु! आपने हम को सब मज़हबों के आचार्यों का मान करना सिखाया, सब मतों के लोगों से प्रेम करना बतलाया। समाज, मन्दिर, मठों, मसजिदों, गिरजाओं और गुरु द्वारों में जाकर भगवान् की भक्ति को ज्ञापत करने की मनोहर शिक्षा आपने दी सनातनी, जैन, सिक्ख, आर्य समाजी, ईसाई सब को सत्संग सभा में संगठित किया।

तेरे द्वार से कोई खाली नहीं गया। जिसने जो मांगा तैंने उसको वही दिया। कितने ही मनुष्य जीवन यात्रा से निराश होकर तेरे से प्राणों की भिक्षा मांगने आए और तूने उन को प्राण दान दिए जिस समय पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित होकर भारत के युवक श्रद्धा, भक्ति से रहित नास्तिकता के समुद्र से गोता खाने लगे उस समय तूने हिमालय की गुहाओं से उतर कर उनके शुष्क हृदयों को भक्ति रूपी अमृत रस से भर दिया और वह प्रेम में उन्मत्त होकर शिमला में भगवान का कीर्तन करने लगे। जब भारत के युवक पश्चिमि सभ्यता के प्रभाव से अपनी प्राचीन ऋषि मुनियों की सभ्यता से घृणा करने लगे उस समय तूने अपने त्याग और तप के प्रभाव से इनको तपस्वी जीवन का आदर्श दिखाया।

जिस समय ऋषि जीवन प्रणाली का लोप हो गया था उस समय आपने भगवद्भक्ति आश्रम स्थापन करके लोगों को ऋषि जीवन का दिग्दर्शन कराया। भगवान् की भक्ति और मनुष्यों की सेवा इस आश्रम का उद्देश्य बनाया। मनुष्य के हित के समस्त साधन यहां उपस्थित किए। मनुष्य मात्र के लिए ज्ञान के द्वार खोल दिए। राजा और रङ्क के बालकों के साथ समान बर्ताव होने लगा।

भंगी और ब्राह्मण के बालक एक साथ शिक्षा पाने लगे। बालक और बालिकाओं का जीवन ऋषि कुमारों और ऋषि कुमारियों की भांति सादा और पवित्र हो गया। ब्रह्मचर्य्य व्रत, तपस्या, शारीरिक-श्रम, आश्रम की सेवा, गुरुओं की सेवा, भगवान् का भजन, कीर्तन इनके जीवन का अभ्यास बनाया। जिसने एक बार आश्रम को देखा उसके मुख से यही वाक्य निकले "यह तो स्वर्ग भूमि है"।

हे प्रभु! आपने इस भूमि में लाखों वृक्ष लगवा कर इसे उपवन और तपोवन का रूप दे दिया। हे गुरुदेव! यह पवित्र सुन्दर आश्रम जो आपने अदम्य और अनथक पुरुषार्थ से बनाया था आपकी याद करके हज़ारों आंसु बहा रहा है। समस्त आश्रम वासी, गौएं हरिण, खरगोश, तीतर, मयूर आदि सब आपको रो २ कर याद कर रहे हैं। यह सब उदास हैं, इन में वह आकर्षण शक्ति नहीं रही अब इन से प्यार करने वाला इनसे जुदा हो गया। इस लिये यह हृदय शून्य से दिखाई देते हैं। तूने इसको ऐसी तड़पती अवस्था में क्यों छोड़ दिया? इतना प्रेम दिखाकर यह क्या परदा उठा लिया? यह क्या पता था कि तू निरा नाटक करने आया है, तूने इनके प्राणों को इतना आकर्षित किया कि सब यह तेरे सिवाय किसी को याद नहीं करते। वृक्ष कहते हैं कि वह हम से बहुत प्यार करते थे। गाएं कहती हैं कि नहीं इनका प्यार हमारे लिए विशेष था। यही हाल पक्षियों का है। आश्रम वासी स्त्री पुरुषों और बालक और बालिकाओं का तो कहना ही क्या है?

हमारे स्वामी! आओ और इन्हें धीरज बंधाओ और इन्हें सान्त्वना दो। हे प्रेम और भक्ति के अवतार! तेरी दृष्टि प्रेम पर रहती है तू भक्ति का भूखा है और तू निश्छल प्रेम का उपासक है। हे प्रेमाकर! हमारे हृदयों पर अपने पवित्र प्रेम की वर्षा कर और मुझ को ऐसी शक्ति दे कि मैं तेरे सिवाय किसी को न देखूं। हर तरफ तेरा ही जलवा नज़र आए और मैं तेरा रूप हो कर यह राग गाता फिरूं

मन तन शुदम तो जा शुदी ।
मन तो शुदम तो मन शुदी ॥
ताक स्न गोयद बाद अज़ी ।
मन दीगरम तो दीगरी ॥

मानुष होय के आप पधारे

[श्रीमती व्रत कुमारी 'प्रभाकर']

सब धरती कागज़ करूं, लेखनी सब बन राय ।
सात सिंधु की मसी करूं, गुरु गुण लिखा न जाय ॥
आठों सिद्धि नवों निधियां, जिनके चरणों में पड़ी झक मारें ॥
चार पदारथ धूल लगें, उनके चरणों को नित्य पखारें ॥
कोर कृपा भ्रूभंग होते, क्षण सर्जन सृष्टि प्रलय हुंकारें ॥
चाह हुई जब आदि पुरुष को, मानुष होय के आप पधारे ॥

श्रीमहाराज जी ने हमारी उन्नति के लिये क्या किया ?

[ले० श्री दयाली राम जी बी० ए० भूत पूर्व डाइरेक्टर शिक्षा विभाग पटियाला]

परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज ने पञ्चभौतिक शरीर को त्याग कर, शिव लोक प्राप्त किया है। अब वे अपनी निर्मित और जीवन काल में चलाई हुई उन्नति शील संस्थाओं की संरक्षता सूक्ष्म स्वरूप में किया करेंगे:—

प्रसिद्ध अमेरिकन कवि लौंगफैलो ने कहा है:—

"जिन्दगी……
सब आला लोगों की हमें
वेल्वाव करती है कि हम,
बेदार करती है कि हम,
अपनी भी ऊंची कर सकें—
दुनियां से जब हों अलविदा
छोड़ाए आज़म वक्त पर,
ख़ाके ज़माना-ए-हाल पर,
नक़्शे क़दम कुछ छोड़ दें !
जिनको चमकता देख कर,
राहगीर कोई भूला हुआ,
राहगीर कोई भटका हुआ,
अपने को थकता देखकर,
बहरए हस्ती में यूं
गुम राह और बहता हुआ,
बरबाद और बिछुड़ा हुआ,
फिर दिल को अपने थामले ॥"

परम पूज्य श्री महाराज जी वास्तव में एक उच्च कोटि के सिद्ध सन्त थे कि जिनमें योग और ज्ञान पराकाष्ठा को पहुंच चुके थे। उनकी आत्मा एक महान आत्मा थी जो मानुषि प्रकृति के स्वाभाविक सद्गुणों में दृढ़ रूप से स्थिर होते हुए उनकी सीमा को पार कर चुकी कि जो संसार तथा उसके आनन्द को पूर्ण वैराग्य दृष्टी से देखती थी। और जो अपने स्वाभाविक शान्त अवस्था के रहस्य को पूर्ण रूप से जानती थी। वे हमेशा ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मदर्शन के परमानन्द में निमग्न रहते थे। उन के हृदय में मनुष्य मात्र की भलाई और जीवमात्र से प्रेम स्थान रखते थे, और उनको चिन्ताएं छू भी नहीं पाती थीं। उनका मन एक बच्चे के मन की तरह सच्चा और प्रसन्न रहता था, और स्वार्थ तो उस में लेश मात्र भी न था। उनके दर्शनों ही से उल्लास प्राप्त होता था, और उनका क्षण मात्र का ही सत्संग यह उत्कट जिज्ञासा जाग्रत कर देता था, कि मनुष्य यह जानने का उद्योग करे कि उस का वास्तविक स्वरूप क्या है? और ईश्वर क्या है? और आत्मा के आवर्णों को हटा कर उस का मल धोकर इसे निर्मल और उज्वल कर देता था. और कुविचार और मलीन इच्छायें ऐसे भागती थीं जैसे सूर्य के सानिध्य से अन्धकार उनकी दृष्टि और उनके आशीर्वाद में एक आकर्षण शक्ति थी, एक जादू का असर था उनकी आत्मा ईश्वरीय प्रसाद से छलका करती थी? श्री माहाराज जी ने जीवन पर्यन्त (उन्होंने सौ साल से भी ज्यादा पंचभौतिक शरीर को परोपकारार्थ धारण किये रक्खा) अपने शिष्यों

की ओर उन सब की जो उन की शरण में आए मानसिक धार्मिक और आत्मोन्नति के लिए पूर्ण उपदेश साधन तथा सुभीता दिया और उनका, कल्याण और उद्धार किया। जितना ध्यान वह मनुष्यमात्र की आध्यात्मिक उन्नति के प्रति रखते थे उतना ही वह शारीरिक दुःखों तथा त्रुटियों की दूरी की ओर भी देते थे, और अपने अनुयायियों को सर्वदा अपने भाइयों तथा बहनों की आवश्यकताओं को दूर करने के लिये तथा सर्व साधारण की सेवा बिना ज़ात पात या रंग रूप के विचार से करने के लिये आदेश किया करते थे। मनुष्यमात्र के कल्याण और उद्धार के लिये और वज़ीरों, अमीरों, सेठ और साहूकारों तथा दूसरी भटकती हुई मायाग्रस्त संसारिक आत्माओं को अपना दुर्लभ सतसंगामृत पान कराते हुये और अनुभूति, सत्य और ईश्वर के सद्ज्ञान का उपदेश करते हुए, उन्होंने पटियाला और जींद की रियासतों में कई प्रसिद्ध स्थानों में आसन लगाया और सर्व साधारण को धर्म, ज्ञान, भक्ति, सदाचार और भ्रातृ प्रेम का उपदेश दिया, और उनके फायदे समझाये।

श्रीमहाराज जी के भक्त रामपुरे के रईस राव बहादुर कप्तान बलबीर सिंह ने परम पूज्य श्री महाराज जी के उपदेशों से प्रभावित होकर एक दीन विनीत प्रार्थना की कि उनकी ज़मीन के एक हिस्से पर श्री महाराज जी मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए एक आश्रम खुलाने का आदेश करने की कृपा करें। परम पूज्य श्री महाराज जी ने अपनी असीम उदारता से इस पवित्र इच्छा (प्रार्थना) को न टाल कर परोपकारार्थ भगवत् भक्ति आश्रम की नींव डालने का आदेश किया। यह पवित्र और उपयोगी संस्था, जिसकी सीमा बहुत विस्तृत भूमि में फैली हुई है वास्तव में स्वर्गीय उद्यान का नमूना है, और इससे ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों के पालन पोषण तथा शिक्षा सम्बन्धी कई और संस्थाओं और सत्संग भजन कीर्तन और कथा आदि के लिए कई सुन्दर और विशाल भवन और शालायें हैं। आश्रम के मध्य में राम सरोवर नामी सरोवर है। वहां एक प्रेस भी है जहां से एक उच्चकोटि का मासिक हिन्दी पत्र "भक्ति" निकलता है। इस आश्रम में बड़े उच्च व्यक्ति, साधु, संन्यासी, गृहस्थी महानुभाव, अफ़सर, लाट, पादरी और दूसरे पधारा करते हैं। और यह आश्रम देश ही में नहीं बल्कि सारे संसार में विख्यात हो चुका है।

परम पूज्य श्री महाराज जी ने सन् १९३० में शिमले आना शुरू किया और वे हर साल गर्मी के मौसम में शिमला रह कर सत्संग हरि कीर्तन और भजन प्रतिदिन बड़ी धूमधाम से करवाते और बहुत सार गर्भित उपदेश दिया करते थे और श्रोताओं की बड़ी २ मण्डलियों को प्रार्थना विशेष रूप से गायत्री के जाप और गीता वेद आदि के पाठ के प्रभाव को जचा दिया करते थे। अर्थ सहित गायत्री मंत्र की छोटी २ पुस्तकों को मुफ़्त बटवाया करते और इस मंत्र को सत्संग में सारे सत्संगियों से बड़े उच्चस्वर से बाजे और तबले के साथ गवाया करते थे। शनिवार की रात्रियों में रतजगे करवाते और सारी रात बड़ी २ कीर्तन मण्डलियों से हरि कीर्तन करवाते थे कि हिन्दु जनता के मन पर और ख़ास करके उन हिंदु

नव युवकों के मन पर कि जिन पर चढ़कीली भड़कीली पाश्चात्य सभ्यता की कलई चढ़ी होती और जिन के दिमाग में फ़ेशनेबल संसारिक विचारों का धुंआ भरा रहता धर्म सेवा, सहिष्णुता और मानसिक पवित्रता का रंग चढ़ जावे। अपने कई भक्तों की सच्ची प्रार्थना पर परम पूज्य श्री महाराज जी ने कृपा दृष्टि की और देश की प्रधान राजधानी में अर्थात् शिमला में सन १९३३ में सत्संग सभा की नींव डलवाई कि जिसने अपने छोटे से तीन साल के ही अस्तित्व में परम पूज्य श्री माहाराज जी की संरक्षता में एक बड़ी दृढ़ संस्था का रूप धारण किया जिसके सेवक सहायक हिन्दू जाति में प्रसिद्ध बड़े २ नेता और महानुभाव हो गए और जिसके लगभग सौ मैम्बर हैं जो भिन्न ५ जातियों, समाजों और विचारों वाले हैं। इस सभा का ढांचा एक नियमित ढांचा है (Constitution) और इसकी मिटिंगें अर्थात् बैठकें और हरि कीर्तन श्रीमद् भगवद् गीता की कथा भजन आदि प्रायः बड़ी धूम धाम से हुआ करते हैं।

परम पूज्य श्री महाराज जी की सेवार्थ सत्संग डेपुटेशन पहुंचने पर माहाराजाधिराज श्री महाराना धौलपुर ने अपनी श्रद्धा और भक्ति के प्रकाशन में अपनी शानदार सजी सजाई शाही कोठी जो कि जाखू की चोटी पर है, देदी कि उस में श्री महाराज जी विराजें और उनके श्रद्धालु भक्त साधु सज्जन महात्मा लोग आवें और श्री महाराज जी के सत्संग का लाभ उठावें।

श्रीमद् भगवत् भक्ति आश्रम रामपुरा रिवाड़ी के नमूने पर और उसके ही उद्देश्यों को लक्ष्य में रख कर पिछले साल परम पूज्य श्री महाराज जी ने जींद में भी रियासत तथा रियासत के बड़े २ अफ़सरों की संरक्षता में एक आश्रम खुलवाया। इस समय वह आश्रम सावधानी से उन्नति के पथ पर गम्भीर गति से जा रहा है।

धार्मिक संस्थाओं के स्थापन करने के साथ ही साथ परम पूज्य परम हंस श्री महाराज जी बड़े भिन्न २ ठिकानों पर मेले करवाते कि जहां पर आंखों की सब प्रकार की बीमारियों का इलाज होता और जहां पर देश के बड़े २ प्रसिद्ध सिद्धहस्त चतुर और आंखों के विशेषज्ञ डाक्टर (Eye specialists) माहाराज जी की सेवा में मोगा आदि दूर दूर स्थानों से पधारते और आंखों के आपरेशन करते। इन मेलों में दुःखी गरीब आदमी औरतों और बच्चों के गांव के गांव उमड़ आते और श्री महाराज जी से आंखों का दान लेकर प्रसन्न होते हुए वापिस जाते। इन मेलों में मोतिया बिन्द जैसे जटिल रोगों की शल्य चिकित्सा बड़ी सुगमता, सफलता और सुभीते के साथ होती। गतवर्ष शिमले में शान्ति कुटि पर जो मेला हुआ उसमें महारानी वायसरानी श्रीमती लेडी विलिंगडन ने पधार कर अपने आप को सौभाग्यवती समझा कि उन को श्री माहाराज जी के दुर्लभ दर्शनों का लाभ प्राप्त हुआ, और अपनी कृतज्ञता अप्रकाशित न रखने के लिए सभा के नाम के साथ अपने नाम को जुड़वाने में प्रसन्नता प्रकट की और श्रीमहाराज जी से आशीर्वाद मांगा। यह लेडी विलिंगडन ब्लाइन्डरिलिफ (Lady Willingdon Blind Relef Association) शिमला के आस पास के प्रदेश में चक्षु रोग

पिड़ित ग़रीब पहाड़ियों की हर पुकार से बड़ी सेवा कर रही है। श्री कुरुक्षेत्र पर ऐसे एक महान मेले में लगभग पांच हज़ार मनुष्य चतुरोग पिड़ित मालिरकोटला, पटियाला, जींद, नाभा रियासतों से और अंबाला करनाल और हिसार ज़िलों से आए। यहां प्रायः सब रोगियों की आंखें अच्छी हो गईं। परम पूज्य श्री महाराज जी ने कृपा की कि जब तक मेला हुआ, वे गीता भवन में ठहरे और मेले के प्रबन्ध की देख भाल और रक्षा करते रहे। कार्य कर्ताओं को प्रोतसाहित करते रहे और हरि कीर्तन और भजन करवाते रहे और उपदेश देते रहे। तीन और स्थानों पर मेले करने के बाद वे जून में अपनी भविष्य वाणी के अनुसार जो कि उन्होंने बहुत पहले की थी ६ जुलाई को संध्या समय धौलपूर हाउस में ब्रह्म में विलीन होगये, जिससे कि उनके बड़ी संख्या वाले शिष्यों को जिन में शिमले के अगुआ और नेता भी सम्मिलित हैं बड़ा शोक वज्राघात हुआ और जिससे सत्संग सभा के मैम्बरों को एक बहुत बड़ा धक्का पहुंचा।

देव कहां ढूं ढूं ?

[ले० श्रीमती ब्रज कुमारी 'प्रभाकर']

धरा की गोद में प्रभुवर ! क्या थक कर आज सोये हो ?
क्या हम पामर के कर्मों से निकल कर दूर खोये हो ?
क्या गिरि शृंगों ऊपर तुम समाधि जा लगाये हो ?
छिपे हो क्या किसी के तुम जो इकदम ही खिचाये हो ?
किसी के इष्ट आराधन में क्या गुरुवर ! बुलाये हो ?
किसी की गुप्त निधियों में निधि बन कर छुपाये हो ?
किसी की टेर से खिचकर किसी उर में समाये हो ?
क्या माँ की आज स्मृति से मचल कर मां पै धाये हो ?
कलि भक्तों से मुचकुन्दवत् गिरि कन्दर छुपाये हो ?
किसी की प्रेम पाशि में बंधा "ब्रज" [क्या] तुम बिठाये हो ?

श्रीमहाराज जी क्या थे ?

[ले० श्रीमती देवकी देवी]

श्री १०८ महाराज जी सत्गुरु थे, और एक महान् आत्मा थे ! भगवान् विष्णु की तरह दिन रात शान्त और आनन्दमय रहते थे। उनके चरण कमलों में जिसे भी बैठने का सौभाग्य प्राप्त होता वह ऐसा समझता मानों भूलोक के घातक दुःखों से छुट कर देवलोक में पहुंच गया और एक स्वर्गीय आनन्द तथा देवताओं की सी शान्ति को अनुभव करता।

परम पूज्य श्री महाराज जी एक ब्रह्मऋषि थे। और वे उसी कोटि के थे कि जिस के श्री रामचन्द्र जी के गुरु वशिष्ट मुनि थे अथवा श्री कृष्ण जी महाराज के गुरु श्रीसान्दीपन जी महाराज थे।

गायत्री मन्त्र परम पूज्य श्री महाराज जी को अत्यन्त प्रिय था। उसी को वे सर्व श्रेष्ठ मानते थे। उन्होंने अपनी महती कृपा से इस मन्त्र से लाभ उठाने का अधिकार सब को दिया। क्या स्त्री क्या पुरुष, क्या बच्चा क्या द्विज, क्या शूद्र क्या हिन्दु, क्या मुसलमान और क्या इसाई, उन्होंने सब को उपदेश दिया कि गायत्री मन्त्र के बराबर कल्याणकारी और कोई मन्त्र नहीं है। इसलिये उन्होंने सबको समानाधिकार दिया कि वे इस को सच्ची भावना से पक्षपात रहित और इस के गहन भाव को समझ कर जपें और ईश्वर दर्शन करें। यह वही मन्त्र है कि जिसको पाखंडी पण्डित लोगों ने ईर्षा तथा अज्ञान वश छिपा रखा था। श्री परम पूज्य श्री माहाराज जी ने इसी मन्त्र को अपनी महती अनुकम्पा और अनुपम उदारता से छोटी २ पुस्तकों और इश्तिहारों में छपवा कर सर्व साधारण के हित के लिए मुफ्त बटवाया।

परम पूज्य श्री माहाराज जी के उपदेशों का एक मात्र उद्देश्य और लक्ष्य यही था कि अंधकार में पड़ी हुई बीमार हिन्दु जाति का सुधार और कल्याण हो, वे चाहते थे कि इस में ज्ञान का प्रकाश हो आनन्द का प्रस्तार हो और नव जीवन का संचार हो और यह जाती फिर उसी उन्नति के शिखर पर विराजमान हो जिस पर भगवान् कृष्ण अथवा भगवान् राम के युग में थी। वे चाहते थे कि पद दलित स्त्री जाति बुढ़िया पुराण की पद्धतियों और रूढ़ियों के बन्धन से मुक्त होजावे और पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करके अपने प्राचीन गौरव को जिसका जगमगाता हुआ सूर्य श्रीसीता जी का नाम है फिर प्राप्त करें। इसीलिये श्री भगवत् भक्ति आश्रम रूपी एक ऐसी संस्था की नींव डाली और चलाई कि जो केन्द्र रूप से ऐसे उच्च लक्ष्यों को सम्मुख रखते हुए देश भर में शिक्षा और ज्ञान का प्रचार करे और प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित कर दे कि हिन्दु जाति का आदर्श कैसा होना चाहिए। उन का आसन रहने से यह संस्था ज्ञान और अध्यात्म विद्या का केन्द्र बनती जा रही है। विशेष कर इसके मध्यस्थ मान सरोवर नामक तालाब एक तीर्थ से भी उच्च गौरव को प्राप्त हो चुका है। इस

संस्था को उदारता में मनुष्य मात्र का अधिकार दे दिया है।

ऐसे ब्रह्मऋषि 'सिद्ध' योगेश्वर परम पूज्य श्री महाराज जी का वियोग सहन नहीं होता। हृदय की अवस्था वैसी ही ऊजड़ होगई है जैसे श्री कृष्ण भगवान के चले जाने पर गोपियों का साक्षात् वियोग स्वरूप ब्रज था और हमारी विवशता निःसहायता और जीवन धृष्टता वैसी ही है कि जैसी श्रीरामचन्द्र जी को जंगल में छोड़ आने के बाद सुमन्त की थी। अब हमारा कल्याण इसी में है कि हम चरण कमलों में ध्यान लगाते हुए, उन के आश्रम को एक पवित्र तीर्थ स्थान मानते हुए श्रद्धा और भक्ति से, उनके ज्ञान को संसार भर में फैलादें, और मनुष्य मात्र के कल्याण हित उनके उपदेशों को ब्रह्माण्ड में गुञ्जार दें।

श्रीमहाराज जी में मेरी भावना।

[ले० ला० श्रीराम जी रईस क्लाथमिल दिल्ली]

श्री महाराज जी के सम्बन्ध में मेरे जो उद्गार हैं उनको अपने टूटे फूटे शब्दों में आप के सम्मुख उपस्थित करता हूं।

लगभग पिछले १५ वर्षों से श्री महाराज के दर्शनलाभ करने का सौभाग्य मुझे मिलता रहा है। मैं इतना विद्वान् नहीं कि श्रीमहाराज जी जैसे महात्माओं के उच्चतम जीवन पर प्रकाश डाल सकूं तो भी अपने अनुभव के आधार पर मैं इतना तो अवश्य ही कह सकता हूं कि श्री महाराज के सत्संग में आने पर व्यक्ति की मानसिक स्थिति में कुछ ऐसी आश्चर्यजनक विचित्रता आ जाती थी जिसका यथार्थ वर्णन शब्दों में तो हो नहीं सकता तो भी ये कहा जा सकता है कि वह स्थिति बड़ी उच्च और भक्ति भाव से प्लावित होती थी। सांसारिक उलझनों में पड़े हुए व्यक्ति को केवल अपने सत्संग से ऊंचा उठा देने की शक्ति रखने वाले महात्मा इस समय विरले ही होंगे। श्री महाराज जी उसी सिद्ध कोटि के महात्माओं में से एक थे ऐसा मेरा स्वानुभव है। यद्यपि इस समय श्री महाराज जी पंचभौतिक शरीर के बन्धन में हमारे सामने विद्यमान नहीं हैं तो भी उनकी अमर ज्योति और उनका विमल ज्ञान का प्रकाश भविष्य में भी हमारा पथ प्रदर्शक बन सकता है। आने वाले समय में भी हम उस तेजस्वी महर्षि का स्मरण करके अपने हृदय को भक्ति रस से ओत प्रोत कर अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

श्रीमहाराज जी के चरणों में श्रद्धाञ्जलि

[ले० श्रीमहात्मा राम]

आज मैं उस परम पिता परमात्मा को अनन्त कोटिशः धन्यवाद देता हूं जिस सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान, दयालु, कृपालु, सर्वेश्वर, अनन्त, अपार सर्वान्तर्यामि की महती कृपा से हम अपने आपको उस परम पिता का अनुगामी बनाने की चेष्टा कर रहे, हैं और हमारे ऊपर तरकृत उपकारों को हम अनुभव कर रहे हैं। क्या हम उस परम पिता के उपकारों का कभी बदला चुका सकते हैं? नहीं कदापि नहीं, क्योंकि यह उसी पिता की शक्ति है जो हम अनभिज्ञों के लिये भी अपनी दयालुता, उदारता और कृपालुता के भण्डार का दरवाजा खोल रक्खा है। हम बड़े नीच हैं और कृतघ्न हैं जो ऐसे कृपालु को याद भी कभी नहीं रख सकते हैं, परन्तु वह हमारा पिता हमको एक क्षण मात्र के लिये भी कभी नहीं भूलता है।

यह सागर महादुःख रूप है, अति भयानक है और यहां घोर अन्धकार छाया हुआ है। इस दुर्वार भयंकर जगत् के अन्दर अनेकों प्राणी घोर दुःखों के सागर में डूब रहे हैं और घटियंत्र के चक्रवत् अपने कर्म फलवश उछलते डूबते हुए जन्म जन्मान्तर के अनन्त दुःखोपरि दुःखों को भोग रहे हैं। इन दुःखों से बचने के लिये कोई उपाय न सूझने पर और भी हृदय की व्याकुलता बढ़ती जाती है। ऐसी अवस्था में महा कारुणिक भगवान् परम दयावान् पिता हम पुत्रों के ऊपर करुणा करके गुरु मूर्ति को धारण कर हम अनभिज्ञ, अबोध, अशक्त बच्चों को उस भयानक घोर दुःखमय अन्धकार रूप जगत् से अपने आदेशों द्वारा हमारी रक्षा कर हम को अपने हृदय से लगा कर हमारे सब तापों को हर लेता है। जैसे सूर्य के उदय होने पर सब अन्धकार मिट जाता है, तैसे गुरुओं के वाक्य रूप किरणों से हृदयगत मोहान्धकार मिट जाता है। ऐसे महात्मा ऐसे गुरु जन संसार रूप दावाग्नि से संतप्त हुए शिष्य गणों को अपने वचनामृत से इस प्रकार शान्त करते हैं जैसे ग्रीष्म ऋतु की तपी हुई पृथ्वि को शरदऋतु का चन्द्रमा अपनी अमृत मयि शीतल किरणों से शान्त कर देता है। ऐसे सन्त महात्मा बिना किसी प्रयोजन के उन शिष्य गणों की अपने स्वभाव मात्र से ही अपने उपदेशामृत द्वारा रक्षा करते हैं।

ऐसे महापुरुष दुनियां में बहुत कम मिलते हैं जिनका जीवन, रहन, सहन और व्यवहार केवल दूसरों के कल्याणार्थ होता हो। मेरी अवस्था जो मेरे सामने गुजर चुकी है उसके आदि में मेरा विचार था कि मैं किसी योग्य महात्मा की शरण लूं और अपने आप को इस संसार दुःख से उनके उपदेश द्वारा पार करूं। मैंने बहुत सन्त महात्माओं का दर्शन और सत्संग भी किया। मुझे साधु मात्र पर श्रद्धा थी, मेरा विश्वास था की मुझे कोई महात्मा अवश्य मिलेंगे। मैं खोज में था और चाहता था कि हे ईश्वर! तू अन्तर्यामी है और सब के मनोर्थों को पूरा करता है, जो तेरी खोज करता है तू उस को अवश्य मिलता है। जो तेरी राह बतलाने वाले हैं तू उनके द्वारा अपने भक्तों को अपने

मिलने के रास्ते पर लगा लेता है। यदि मेरे अंदर तेरी सच्ची भक्ति है तो मुझे भी आप के भक्त और सन्त जन अवश्य मिलेंगे, ऐसी भावना करते हुए मुझे कुछ काल के अन्तर एक सन्त मिले। उनके दर्शन से मुझे बड़ी शान्ति और हर्ष उत्पन्न हुआ। उनको मैंने अपने हार्दिक भाव प्रकट कर दिये, उन्होंने मेरे भावों को जान कर मुझ पर अनुग्रह किया। मैं चाहता ही था बस उनके उपदेश का मुझ पर असर हुआ और मैंने अपनी निकृष्ट अवस्था को परित्याग कर दिया। तदनन्तर उनके शिष्टाचार से मुझे अनन्त लाभ हुआ जिसका फल आज मैं अपने सामने भले प्रकार देख रहा हूं। उन्हीं की प्रेरणा से मैं उस स्थान को प्राप्त हो गया कि जिस स्थान से उन्होंने दीक्षा ली थी। वह स्थान कहां और कौनसा है, वह जिला गुड़गांवा रेवाड़ी के समीप श्री भगवद्भक्ति आश्रम नाम से प्रसिद्ध है। वह आश्रम श्री १०८ पूज्यपाद श्री महाराज जी के कर कमलों से स्थापित हुआ है। जिस आश्रम के अन्दर मनुष्य, पशु, पक्षी, और अनेक जीव जन्तु आज अपने जीवन को उन्नति के शिखर पर लेजाने का रास्ता बना रहे हैं। जिसको देख कर, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, क्या ईसाई सभी हैरान और आश्चर्य में रह जाते हैं, और देश के भक्त जो बड़े २ लीडर नेता हैं उनको आश्रम देख कर पुराने जमाने के ऋषि महर्षियों की स्मृति हो जाती है और कहते हैं कि यदि देश की अवस्था कुछ सुधर सकती है तो ऐसे ही आश्रमों द्वारा सुधर सकती है। बड़े २ महानुभावों ने आश्रम को देख २ कर अपनी २ रायें भी लिखी हैं। जिन पुण्यात्मा महाशयों ने श्रीपूज्य महाराज जी का एकबार भी उपदेश सुन लिया है वह कौन होगा कि जिसके हृदय रूपी दर्पण पर बिजली के समान अक्स न पड़ गया हो। क्या वह कभी उन उपदेशों को भूल सकते हैं जिनका हृदय प्राणी मात्र को अपनाने के लिए उनको शुभ मार्ग पर लाने के लिए इतना उदार होना, इतना गम्भीर होना, कि जिसकी कोई थाह ही न पा सके। वह कभी किसी पर अप्रसन्न होना तो मानो जानते ही न थे। उनकी दया, उनकी कृपा, उनके अनुग्रह का कोई किस प्रकार बयान कर सका है। मुझे बड़ा संकोच होता है और मैं सोचता हूं कि मैं बड़े साहस का काम कर रहा हूं जो अपनी तुच्छ और क्षुद्र बुद्धि से ऐसे महानुभावों के सम्बन्ध में लिख रहा हूं। भला एक दादुर समुद्र की थाह किस प्रकार ले सकता है। यद्यपि मैं इस योग्य नहीं हूं तथापि मेरा खयाल है कि मेरा जितना समय श्रीमहाराज जी के स्मरण में लगेगा वह मेरे लिये कल्याणप्रद होगा। अतः मैं अपने ऐसे विचारों को लेकर ही यह लेख लिख रहा हूं। वरना उनके गुणों को, उनके उपकारों को लेखनी में लाना तो मानों सूर्य को दीपक दिखाने के समान ही है। अतः सज्जन वृन्द मेरी इस ढिठाई को क्षमा करेंगे।

मुझे जब से श्रीपूज्य महाराज जी का दर्शन हुआ है तब से मेरे हृदय में देश सेवा का भाव उत्पन्न हुआ है। देश की भलाई, प्राणी मात्र का हित करना, गोवंश की उन्नति का तरीका, वृक्ष के लगाने में प्रेम होना तथा सब के साथ मित्र भाव होना इत्यादि दैवी सम्पदा के गुणों का संचार मेरे हृदय में श्री महाराज जी के दर्शन और उपदेश से ही हुआ है। जिस समय श्री महाराज जी का उपदेश होता था उस समय जो कुछ भी उनके मुखारविन्द से शब्द

निकलते थे वह जिस श्रोता के करणछिद्र में पड़ जाते थे उनके हृदय में उन शब्दों का मानों साक्षात् आकार ही बन जाता था। कारण यही निश्चय होता था कि उनके जो शब्द मुखारविन्द से निकलते थे वह भावपूर्ण होते थे परन्तु श्रोता गणों के हृदय जैसे उनके समीप में बन जाते थे वह फिर वहां से अन्यत्र नहीं रहते थे। यह हमारे अन्तःकरण की मलिनता का प्रभाव है। हम सब के ऊपर श्री महाराज जी की अनन्त दया थी, हमारे कल्याणार्थ उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी हमें उन्होंने सब प्रकार से सुयोग्य बना कर रास्ता बतला दिया है। अब यदि हम ही उनके बतलाये हुवे रास्ते पर न चलें तो हमारे ही दुर्भाग्य हैं।

यदि सूर्य के उदय होते हुवे भी उलूकादिक सूर्य के प्रकाश को अपने उपयोग में न ला सकें तो इस में सूर्य का क्या दोष है? श्री महाराज जी के बनाये हुये जो आठ उद्देश्य हैं वह मनुष्य मात्र के लिए सीधा रास्ता है। इसके अलावा और भी सदाचार, प्रार्थना, आदि अनेक उपदेश जो सर्वथा प्राणीमात्र के कल्याण का साधन हैं श्री महाराज जी ने बतला दिये हैं। अनेक बार अपने ऊपर तकलीफें लेले कर श्री महाराज जी ने दूसरों को सुख पहुंचाया है। मोतियाबिन्द वालों की अनेक संख्या में आंखें बनना और ऐसे कई बीमारों को जीवन दान मिलना आदि घटनायें जिन लोगों के साथ हुई हैं उनको इस रहस्य का पूरा ज्ञान है। श्रीमहाराज जी अपने आपको कभी विशेष रूप से प्रकट नहीं होने देते थे, उनकी तितिक्षा, सहनशीलता और गम्भीरता का कोई अन्दाजा नहीं लगा सकता था। श्री महाराज जी के चरणों में आकर कोई भी क्यों न हो जिसने भी कुछ प्रार्थना की उसकी प्रार्थना अवश्य ही सुनते थे और यथा योग्य उसकी बात कराही देते थे। क्या नीच क्या ऊंच सब के लिये श्री महाराज जी के हृदय से करुणा का श्रोत बहा करता था। अधिकतर आश्रम में ऐसे ही बच्चों का पालन और शिक्षण हुआ है कि जिनका अपने घर से कोई प्रबन्ध हो ही नहीं सकता था। उसको आश्रम में रख कर बलवान् ब्रह्मचारी स्वावलम्बी और परोपकारी बनाने के लिये नित्यप्रति उपदेश और सत्संग कराते थे उनकी तृप्ति के लिये आने वाले यात्रियों से भण्डारे कराते थे। यह भण्डारा उन अनाथ बच्चों के लिए ही कराया जाता था जिनको कभी अपने घर पर जाना तो क्या देखने को भी नहीं मिलता था। उन अछूतों के बच्चों को जो विद्या पढना जानते ही न थे उनके घरों से आश्रम के साधुवों, पण्डितों द्वारा बुलवाकर शिक्षा दिलाना, भजन गवाना, अपने पास बिठाना, प्रसाद और भंडारों से उनको प्रसन्न और संतुष्ट करना आदि अनेक प्रकार से उनका पालन करते थे। इसी प्रकार कन्याओं के लिये लड़कों से भी अधिक उचित प्रबन्ध कर के सुशिक्षिता बनाना, गौओं की अच्छी नसल बनाना, उत्तम वृक्षों का लगवाना आदि अनेक काम जो प्राणी मात्र के हित करने वाले हैं वह श्री महाराज जी ने करवाये उन्होंने हमारे कल्याणार्थ जो २ काम करवाये हैं हम उनके उपकारों को किस प्रकार भूल सके हैं। किसी कवि का पद है कि—

जिसका कोई न होय हृदय से उसे लगावे,

प्राणी मात्र के लिये प्रेम की ज्योति जगावें।
सब में विभु को व्याप्त जान सब को अपनावे,
है बस ऐसा वही भक्त की पदवी पावे ॥१॥

इस पद के मुताबिक यदि हमारे सबके भाव बन जावें तो हम इस देश के तथा महेश के जो हमारा वास्तविक पिता है सच्चे भक्त बन जावें। हमको श्री पूज्य महाराज जी अपने उपदेशों द्वारा इसी प्रकार की शिक्षा देते थे कि भाई! सभी उस परम पिता परमात्मा के पुत्र हैं। सब के साथ प्रेम और दयालुता का व्यवहार करो, सबकी उन्नति चाहो, सब के लिए भगवान से प्रार्थना करो कि हे परमेश्वर! सभी तेरे भक्त बन जायें, हम सब तेरी आज्ञा का पालन करें, हम से कभी किसी का अप्रिय न हो इत्यादि अनेक धर्म शिक्षायें हमको श्री महाराज जी दिया करते थे। हम नहीं जानते थे कि श्री महाराज जी अपनी लीला को शीघ्र ही समाप्त कर देंगे। यह हमारे तथा हमारे देश के बड़े ही दुर्भाग्य हैं जो हमारे सामने से अकस्मात् हमारा सूर्य अस्त हो गया है। नहीं २ वह सूर्य जो एक व्यक्ति रूप में था वह अब समष्टि रूप में हो गया है। अस्त नहीं हुवा है बल्कि अधिक विकसित हुआ है। वह तेज वह विकाश अब हमारे हृदय गत होकर हमें और भी अधिक उन्नत करेगा क्योंकि उनके निर्धारित नियम और उद्देश्य हम को रास्ता बतला रहे हैं। मेरे हृदय के जो भाव हैं मैं उनको श्री महाराज जी के सम्बन्ध में लिखने को असमर्थ हूं बस इतना ही लिख कर मैं श्री १०८ श्री पूज्यपाद श्री महाराज जी के चरण कमलों में अनन्त वार कोटिशः धन्यवाद पूर्वक प्रणाम निवेदन करता हूं।

चन्द्रमा कितै गयो ?

दुखद वियोग अन्धियार चहुं ओर फैलो,
सुखद सुयोग सो उजालो हा! कितै गयो।
फैली है उदासी सब ठौर कालिमा सी दिसै,
छाय विपदा को घन हमरे हितै गयो।
मनकी सुभासा मन ही में रही मैली होय,
जीवन सुधा को स्रोत सुन्दर रितै गयो।
आश्रम निवासी चहुं ओर है चकोर हेरें-
परम-आनन्द-रूप चन्द्रमा कितै गयो।

"दुर्गाप्रसाद गुप्त"

श्री १०८ परमहंस श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज

श्री सत्संग सभा शिमला द्वारा प्रेषित।

[ले० श्री पं० गंगादत्त जी पाण्डेय बी. ए.]

तप्यन्ते लोक तापेन प्रायशः साधवो जनाः।
परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः॥

साधु लोग प्रायः संसार के दुःख से दुःखित रहते हैं, अखिलेश्वर भगवान् की वास्तव में सच्ची पूजा यही है। पूजनीय श्री १०८ परम हंस परमानन्द जी महाराज उन प्रातः स्मरणीय उच्च आत्माओं में से थे जिनका समस्त जीवन लोक-सेवा, लोक-कल्याण और दुःखित प्राणियों के कष्ट निवारण करने में व्यतीत हुआ, उन्होंने जो बहुमूल्य सेवाएं मनुष्य मात्र की हैं वे अनन्त काल तक स्थायि रहेंगी और उनकी पुण्य स्मृति को अजर अमर बनाए रक्खेंगी। हमको पूज्य स्वामी जी के दर्शन करने और उनके शिक्षाप्रद उपदेशों को सुनने का गौरव प्राप्त हुआ है, इससे लेखक कह सकता है कि ऐसी उच्च आत्माएं बहुत कम देखने में आती हैं। वह समाज, वह जाति और वह देश धन्य है जहां ऐसे कोटि के महापुरुष जन्म लेकर अपनी दैवी विभूति से उसे अलंकृत करते हैं।

सब से पहिली बात महात्मा जी के दर्शन कर जो दर्शक को प्राप्त होती थी वह उनकी दैवी सम्पदा थी। भक्ति भाव से प्रेरित होकर जब २ हम को उनके चरणों के दर्शन करने का सौभाग्य लाभ हुआ तब २ एक विचित्र-शक्ति, एक अपूर्व ज्योति और विशेष आनन्द का अनुभव हुआ। महात्मा जी के उपदेशों को, उनके सरल बोल चाल की भाषा को सुनने से जो शक्ति तृषित-आत्माओं को मिलती थी, उसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति से परे है। "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" की उक्ति चरितार्थ हो आती है। महात्मा जी संगीत को अत्यन्त प्रिय मानते थे, वे—

"नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ताः यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥"

के कथन को अक्षरशः सत्य मानते थे, यही कारण था कि वे समस्त रात्रि-पर्यन्त कीर्तन सुनने में तन्मय हो जाते थे। हमको अभी महात्मा जी की रुग्णावस्था में जब वे शिमले में धौलपुर हौस जाखू में टिके हुए थे उनके शुभ दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। असह्य वेदना जो उन्हें उस समय हो रही थी उसका विचार न कर आपने अपने प्रिय शिष्य श्री केशवानन्द जी को संगीत सुनाने की आज्ञा दी। डाक्टर साहब उसी समय उन्हें नींद आने की दवा दे चुके थे। असमंजस में पड़कर हम चुपके से बाहर निकल आए। हम को यह क्या पता था कि यही हमें उन महात्मा के अन्तिम दर्शन होंगे। श्री केशवानन्द जी का सुरम्य संगीत महात्मा जी की उपस्थिति

में जिन्हें सुनने का सौभाग्य लाभ हुआ है वे अवश्य ही कह सकेंगे कि ऐसा परमानन्द जीवन में बहुत कम मिलता है। असह्य वेदना होने पर भी इतना आत्म-बल, इतना धैर्य इतना शिष्टाचार कम देखने में आता है। वास्तव में यही मनुष्य का चरित्र-बल है जो उसे साधारण-मानव से उठा कर लोकोत्तर महात्माओं की श्रेणी में पहुंचता है। कविवर भवभूति के शब्दों में "लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हसि"।

महात्मा जी ने अपने जीवन में जितना प्रचार गायत्री मंत्र का किया है उतना कदाचित् ही अब तक किसी ने किया हो, प्रत्येक दर्शक से पहिला प्रश्न आपका गायत्री मंत्र के ही ऊपर हुआ करता था। आपका यह दृढ़ विश्वास था कि:—

गायत्री वेद जननी गायत्री पाप नाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम्॥

इसलिये आपने असंख्य पुस्तकें गायत्री मंत्र की छपवाकर विनामूल्य जन साधारण को वितरण की हैं। महात्मा जी का दिया हुआ प्रसाद आशा है अब तक अनेक श्रद्धालु भक्तों के पास विद्यमान होगा। यदि हम लोग उनकी आज्ञानुसार गायत्री मन्त्र का दिन में ३ समय जैसा वे अपने श्रीमुख से कहा करते थे स्मरण कर सकें तो उनकी आत्मा को अपूर्व शान्ति मिलेगी और हम लोग अपने जीवन को सफल कर सकेंगे।

एक बात जो हमको महात्मा जी के पावन चरित्र में असाधारण प्रतीत हुई वह यह है कि हम ने कभी भी उन्हें क्रोध करते या किसी से कोई अप शब्द कहते नहीं सुना। आप अत्यन्त ही शान्ति प्रिय और कोमल हृदय थे। मनुष्य मात्र को उस सर्व व्यापी भगवान् की-मूर्ति मानकर सब से बड़े प्रेम से मिलते थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक कहा है:—

उमा जे राम चरण-रत, विगत काम, मद, क्रोध।
निज प्रभु मय देखहिं जगत, कासन करहिं विरोध॥

हमें में से कई पुरुषों को भगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी श्रीमान् राय साहिब प० चिन्तामणी पन्त इक्जीक्यूटिव इञ्जीनियर साहब देहली के साथ जाने का सौभाग्य लाभ हुआ था। महात्मा जी ने आश्रम को जिस स्वर्गीय विभूति से अलंकृत किया है वह देखते ही बनता है। हमारे हृदय में आश्रम की वह भव्य-मूर्ति सर्वदा जागृत रहेगी। 'राम' "हलधर" "लक्ष्मण" सड़क विशाल गोशाला, भव्य संगीत-भवन, अतिथि-शाला, भक्ति-प्रेस, पाठशालायें और छात्रालय जिस उच्च कोटि के कौशल से बनाए गए हैं उनको देख कर बड़े से बड़े इन इञ्जीनियरों को अपना शिर झुकाना पड़ता है।

यही नहीं महात्माजी ने शिमले में सत्संग-सभा को जन्म दान दिया है। जो आपके शुभाशीर्वाद से बहुत सुन्दर कार्य कर रही है। आपने Blind Relief Association द्वारा अनेक दीन भाइयों को ज्योति प्रदान की है। स्थान २ पर निशुल्क नेत्रों का औपरेशन करवा कर आपने चक्षुहीन भाइयों को नूतन जीवन प्रदान किया है। धन्य है वे महात्मा जिन्होंने अपने पुण्य मय जीवन से मानव समाज की विविध भांति सेवा की है। वे ही सच्चे हृदय से कह सकेंगे:—

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामर्तिनाशनम्॥

मेरे गुरु

[ले० श्रीस्वामी नारायण दत्त जी]

मैंने प्रथम बार सम्वत् १९४५ विक्रमी में श्री स्वामी जी महाराज की बाबत लोगों से सुना था कि एक सन्त जि० अम्बाला के दीनारपुर और वाज़ीदपुर ग्राम में ठैरे हुए हैं। उस समय श्री महाराजजी केवल दुग्ध पान करते थे। वाजीदपुर में एक मौलवी श्री महाराजजी के सत्संग में जाता था। उससे लोग पूछा करते थे कि यह कैसे महात्मा हैं? मौलवी साहब यह उत्तर दिया करते थे "यह तो ओलिया हैं"।

सं० १९५७ वि० में श्री महाराजजी जगाधरी में लठमारों की धर्म्मशाला में ठैरे हुए थे। वहां रत्नलाल हलवाई श्रीमहाराजजी की सेवा करता था। उसको श्री महाराज जी ने हनुमान जी का जीवन चरित्र सुनाया था।

सं० १९६४ में धबाने ग्राम का धन्ना वैश्य श्री महाराज जी को नरेला लाया। श्री महाराज जी वहां तालाब पर ठैरे। कबूल ब्राह्मण वहां श्री महाराज जी की सेवा करता था। कबूल ब्राह्मण ने मुझसे जिकर किया कि तालाब पर एक सिद्ध महात्मा ठैरे हुए हैं उनके दर्शन करने चाहिएं। मैंने उससे पूछा "वह चिलम तम्बाकू पीते हैं या नहीं" उसने उत्तर दिया कि तम्बाकू तो नहीं पीते। मैंने उससे कहा "जब वह तम्बाकू ही नहीं पीते तो उनके पास चलने से क्या लाभ है?" उसने मुझे समझाया कि वह संन्यासी महात्मा हैं, और सिद्ध पुरुष हैं, दर्शन करने योग्य हैं, उनके दर्शन से मनुष्य के पाप कट जाते हैं। उसकी प्रेरणा से मैं दर्शन करने गया और श्री महाराज जी के दर्शन करने से मेरे चित्त को बड़ा आनन्द और शान्ति प्राप्त हुई और मैंने यही अनुभव किया कि मेरे पापों का क्षय हुआ है।

श्री महाराज जी ने अपने अतुल प्रेम से मेरे चित्त को आकर्षित कर लिया और मेरी यह भावना होने लगी कि मैं हर समय इनके दर्शन करता रहूं। मैंने हीरालाल वैश्य की धर्म्मशाला में पाठशाला खोली हुई थी। मैंने श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि आप कृपा करके उस धर्म्मशाला में पधारें। श्री महाराजजी ने मेरी प्रार्थना स्वीकार करली और धर्म्मशाला में चले आए। वहां तीन चार दिन ठैरे और उस समय राम रत्न पुजारी से वालमीक रामायण लेकर उसका अवलोकन करते रहे। स्थान की अनुकूलता न होने से श्री महाराज जी ने वहां विक्षेप माना और कहा कि हमको ठैराना चाहते हो तो हमारा प्रबन्ध तालाब पर करदो। हम लोगों ने आज्ञानुसार तालाब पर ही प्रबन्ध कर दिया। वहां श्री महाराज जी शरद ऋतु में रहे। मैं साधारण तौर पर सेवा करता रहा परन्तु सन्तोष जनक सेवा करने में असमर्थ रहा।

श्री महाराज जी रात के दो २ बजे तक सतसंग कराते रहते थे। भजन, शब्द और उपदेश होते रहते थे। उन दिनों "सिया रघुवीर भरोसो

ऐसो" और "लज्जा मोरी राखो न श्याम हरे" यह दो भजन विशेष कर गाते थे और जब यह भजन गाते थे तो सारे सत्संगियों को रुला देते थे और आप भी रोने लगते थे। श्री महाराज जी उन दिनों में भी अछूतों से बहुत प्रेम करते थे। शरद ऋतु बिता कर श्री महाराज जी ब्रज का नाम लेकर यहां से चले गए।

श्री महाराज जी ब्रज से लौट कर पालम आए। पालम से नरेले आए और वहां कुछ समय रह कर संगरूर की तरफ चले गए। स० १९६६ में श्री महाराज जी फिर श्रावन मास में नरेले आए और स्टेशन पर नन्दी की धर्मशाला में ठैरे। वहां एक दिन कहने लगे कि श्रावन मास है पूड़े बनने चाहिएं। हम लोग गांव से सामग्री लाने चले गए। प्रबन्ध करते २ शाम होगई। कुछ वैश्य और ब्राह्मण मेरे साथ थे वह चर्चा करने लगे कि अब रात्री होगई है और यदि हम इस समय अग्नि जलावेंगे तो पतंगे जल मरेंगे और उसका पाप हम लोगों को लगेगा। मैंने उनको उत्तर दिया "भाई मुझे तो जो आज्ञा होगी मैं वही करूंगा" मेरी तरफ से जानवर क्या कोई भी जले? यह तुम्हारी अपनी शंका है तुम जाकर श्री महाराज जी से निर्णय करलो। हम सब मिल कर श्री महाराज जी के पास गए। वहां वर्णन करने पर श्री महाराज जी ने फरमाया "भाई पतंग अग्नि पर आसक्त हैं, यह उनका स्वाभाविक धर्म्म है वह आकर्षित होकर उस पर पड़ेंगे और जल जावेंगे। हमको उनके कर्म्म से क्या प्रयोजन हैं हम तो स्वाभाविक रीति से अपना कार्य करते हैं हमको क्यों पाप लगेगा? इस से उपस्थित लोगों की शंका निवृत्त न हुई और वह श्री महाराज जी से शंका निवृत्त करने लगे। श्री महाराज जी ने बहुत समझाया यहां तक की रात के दो बज गए। सब लोग भूख प्यास को भूल गए। अन्त में श्री महाराज जी ने फैसला दिया कि अब दोनों पक्ष ठीक होगए। ओस पड़ने के कारण तुम्हारे तो पतंग सो गए और हमारी रात्री वाली बात भी रह गई अब पूड़े बनाओ।

पूड़े बनाते २ पांच बज गए। श्री महाराज जी ने फरमाया कि शौच स्नान से निवृत्त होकर प्रसाद पाओ। सब लोग निवृत्त होकर श्री महाराज जी के पास आगए। श्री महाराज जी स्वयं भी प्रसाद पाने लगे और सब लोगों को प्रसाद बटवा दिया। श्री महाराज जी ने सबको अपने पास ही बिठा लिया। प्रतापसिंह जिसको श्री महाराज जी ने बाद में संन्यास दे दिया और अब प्रतापानन्द के नाम से मशहूर है श्री महाराज जी को पूड़े देता जाता था और श्री महाराज जी पाते थे, साथ ही साथ महाराज जी उपदेश भी दे रहे थे। बीच में ऐसा दृश्य उपस्थित हुआ कि पं० प्यारेलाल ने अचानक लोगों से पुकार कर कहा कि तुम लोग श्री महाराज जी के चेहरे की तरफ देखो। सबने बड़े ध्यान से चेहरे की तरफ देखा। महाराज जी की आंखें खुली हुई हैं और पलक झपती नहीं हैं। भोजन भी कर रहे हैं और बातें भी करते जाते हैं। पं० प्यारेलाल ने कहा श्री महाराज जी मन से सो रहे हैं, वाणी से बोल रहे हैं और मुख से खा रहे हैं। यह दृश्य देखकर सब आश्चर्य करने लगे। इतने में प्यारेलाल ने श्री महाराज जी के पांव को छूआ। श्री महाराज जी एक दम चौंक पड़े और बोले कि हम तो सो ही गए थे। उस दिन श्री

महाराज जी ने बड़े प्रेम से प्रसाद पाया कम से कम छः सात सेर पूड़े खाए होंगे।

एक दिन एक जाट आया और उसने मुझसे कहा कि माई दास चमार जो बीसा पंथियों का सत्संगी है महाराजजी का भंडारा देना चाहता है। मैंने श्री महाराज जी से प्रार्थना की। श्री महाराज जी फरमाने लगे कि गरीब आदमी है उसको क्यों कष्ट देते हो। वह चौधरी बोला कि महाराज जी वह पैसे वाला आदमी है और सत्संगी है प्रेम से ही प्रसाद अर्पण करना चाहता है। श्री महाराज जी ने उसे बुलवाकर पूछा। वह प्रार्थना करने लगा कि मेरा अहोभाग्य है जो श्रीमहाराज जी मेरा प्रसाद स्वीकार करलें। महाराज ने बड़े प्रेम से भंडारे की आज्ञा देदी। माई दास का भंडारा हुआ और सब लोगों ने प्रेम से प्रसाद पाया। मुझे श्री महाराज जी का सत्संग करते ४० वर्ष हो गए मैंने उनकी अनेक लीलायें देखी हैं जिनको फिर कभी भक्ति के पाठकों के सामने रक्खूंगा। मैं तो उनको साक्षात् शिव का अवतार मानता हूं मुझ पर तो उनकी अपार दया थी, मेरा तो उन्होंने कल्याण कर दिया और मुझको इस दावानल से उबार कर भव सागर पार लगा दिया मेरा उनके चरणों में अनन्त बार श्रद्धा पूर्वक नमस्कार है।

वियोग

[ले० राव बहादुर सरदार सिंह जी एम० बी० ई० रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर मथुरा]

संसारी मनुष्यों के वास्ते सन्त महात्माओं की सेवा या केवल उनका संग ही ऐसा काम देता है जैसे पारस लोहे के लिये। लोहे का इससे अधिक क्या सौभाग्य हो सकता है कि वह पारस से स्पर्श करले और सोना बन जाये। तुलसीदास जी ने क्या अच्छा कहा है।

सुत दारा और लक्ष्मी पापी के भी होय।
सत संगत अरु हरि भजन तुलसी दुर्लभ दोय॥

सब ही जानते हैं कि यह संसार अस्थाई है और इस की सब वस्तु भी ऐसी ही हैं पर तो भी हर मनुष्य इसी के फेर में पड़ा रहता है। केवल वही लोग धन्य हैं जिन्होंने संसार की असलियत को जानकर आगे की ओर भी कुछ ध्यान दिया। जो इस रंग में रंग गये उनका तो कहना ही क्या है? वे तो स्वयं इस जाल से छूट कर औरों को भी छुड़ा ले गये। पर वे लोग भी प्रशंसनीय हैं जो ऐसे महात्माओं की शरण में आगये।

श्री परम पूज्य श्री महाराज जी उन्हीं महात्माओं में से एक थे। उनके दर्शन और थोड़ी सी सेवा करने का सौभाग्य इस दास को भी प्राप्त हो चुका है। उन्होंने दया करके मथुरा में जहां मैं सिटी मैजिस्ट्रेट था पधार कर मेरे स्थान को भी पवित्र किया था। देहली और रेवाड़ी के भगवद्भक्ति आश्रम में भी मैंने उनके दर्शन का

लाभ उठाया। श्री महाराज जी के गुणों का वर्णन मेरे जैसे मंद मति वाले मनुष्य के वास्ते असम्भव है। पर इतना तो अवश्य ही कहूंगा कि उनके दर्शन मात्र से शान्ति और संतोष प्राप्त होता था। उनकी विचित्र मूर्ति अब भी मेरी आंखों के आगे है और मेरा मस्तक स्वयं उनके चरणों में झुकता है।

वे बड़ी ऊंची श्रेणी के सन्त और महात्मा थे देखने मात्र में हम उनका वियोग कह सकते हैं जो केवल संसारिक भाव हैं पर वास्तव में उनका वियोग कैसा? वे तो जैसे पहिले सहायक और रक्षक थे वैसे ही अब भी हैं। गुरु के शरीर के साथ गुरु का अभाव कभी नहीं होता। यदि हमारी सच्ची भक्ति मौजूद है तो गुरु हम से दूर नहीं। शरीर तो किसी शरीरधारी का स्थाई हो ही नहीं सकता। हमको भी यह शरीर एक दिन छोड़ना ही है। ऐसी वस्तु का मोह कैसा?

परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री महाराज के चरणों में उनके भक्तों का प्रेम सदैव बना रहे और श्री महाराज की कृपा दृष्टि हम संसारी जीवों पर नित्य पड़ती रहे जिससे इस संसार सागर से उद्धार हो सके।

श्रद्धा के फूल

[ले० श्री फूलसिंह जी वानप्रस्थी]

श्री महाराज जी एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनकी कार्य्यशैली अद्भुत रीति को लिये हुये थी जिसका प्रभाव देशवासियों के हृदय पर तुरन्त पड़ता था। श्री महाराज जी उच्च कोटि के त्यागी वीतराग साधू होते हुए साथ ही साथ बड़े चतुर प्रबन्धकर्ता भी थे। वह जब तक जीवित रहे तब तक अपनी तपस्या, तथा पुरुषार्थ से देश के स्त्री पुरुष, युवा, वृद्ध, शिक्षित, अशिक्षित धनी, निर्धन, तथा अनेक उच्चपदाधिकारियों की आत्माओं के भीतर उच्चभाव, शुद्धविचार, स्त्री जाति उद्धार, अछूतोद्धार, गोरक्षा, ग्राम सुधार आदि सद्भावों को जागृत करते रहे। उन्होंने इन सद्भावों को कार्य रूप में परिणत करने वाले व्यक्ति देश में तैयार करने के लिए रिवाड़ी में भगवद्भक्ति आश्रम स्थापित किया है। इस आश्रम में अनेक दिशाओं से यात्री दर्शन करने आते हैं और आश्रम के सराहनीय प्रबन्ध को देख कर प्रसन्न चित्त हो घरों को लौटते हैं। हमारे देश को वर्तमान काल में ऐसे ही सच्चे कर्म योगी, देश हितैषी-दुःखियों अनाथों विधवाओं के सहायक साधुवों की आवश्यकता है। श्री महाराज जी को स्त्री शिक्षा की बड़ी लग्न थी। स्त्री शिक्षा से श्री महाराज जी को कितना प्रेम था इस का पता उनके उन दो पत्रों से लगता है जो उन्होंने शिमले से मेरे लिए श्री स्वामी राम के द्वारा जींद भगवद्भक्ति आश्रम में भेजे थे। उन पत्रों से पता लगा है कि श्री महाराज

जी स्त्री जाति हित के लिए कितना उदार हृदय रखते थे । आपने पिछला पत्र ठीक उन दिनों में लिखवाया है जब कि वह २५ दिन अनशन करके इस देह को छोड़ने का पूरा २ निश्चय कर चुके थे । आप अपने अन्तिम पत्र में लिखते हैं "कि भगवद्भक्ति आश्रम जींद में जो स्त्री शिक्षा की संस्था खोली जावे उसका नाम कन्या गुरुकुल रखा जावे" ।

श्री महाराज जी के अनुयाइयों, प्रेमियों, तथा भक्तों का परम धर्म है कि उनकी अन्त समय की शुभ कामना की पूर्ति में कोई कसर उठा न रखें।

मैं बड़ा मन्दभागी हूं कि श्री महाराजजी मेरे लिये केवल पत्रों द्वारा मुझे स्त्री जाति की सेवा सौंप सके। परन्तु मुझे दर्शनलाभ न हो सके । यदि वह जीवित रहते तो न मालूम वह स्त्री जाति हित के क्या २ साधन एकत्रित कर जाते । पर खैर ! हमें भगवान् के न्याय पर संतोष करना चाहिये ।

वे क्या थे ?

[ले०—श्री प्रभुदत्त शास्त्री "आश्रम"]

वे प्रेम के अवतार थे औ ज्ञान के भण्डार थे ।
वे विश्व के आधार थे औ सौख्य के आगार थे ॥ १ ॥
बलहीन के बल थे वही औ भक्त जनके त्राण थे ।
दीन दुखिया आर्त्त जन के हेतु नूतन प्राण थे ॥ २ ॥
थे योग विद्या के प्रशासक ज्ञान के वे केन्द्र थे ।
विषयाग्नि से संतप्त जीवों के लिये वे महेन्द्र थे ॥ ३ ॥
अध्यात्मविद्या के सदुपदेष्टा वही थे विश्व में ।
सुख शान्तिमय साम्राज्य के स्रष्टा वही थे विश्व में ॥ ४ ॥
"है वास्तविक सद्धर्म क्या" थे जान ते इसको वही ।
संसार के कर्तव्य को पहचानते थे बस वही ॥ ५ ॥
मत औ मतान्तर के कलह की औषधी क्या है भला ।
वे जानते थे सांप्रदायिक भेद की क्या है कला ॥ ६ ॥
वेदों के सच्चे अर्थ के केवल वही ज्ञाता हुये ।

वे उपनिषद्, दर्शन, धर्मग्रन्थों के विज्ञाता हुये ॥ ७ ॥
सब ही मतों के मूल ग्रन्थों के बड़े मर्मज्ञ थे ।
उपदेश करते जिस समय जंचते वही सर्वज्ञ थे ॥ ८ ॥
विज्ञान के औ युक्तियों के पूर्णता से विज्ञ थे ।
लौकिक व पारमार्थिक सभी विषयों के वे तत्त्वज्ञ थे ॥ ९ ॥
थे दार्शनिक अद्भुत प्रबल औ मार्मिक वक्ता बड़े ।
सुनते थे भाषण आपके निस्तब्ध हो श्रोता खड़े ॥१०॥
निर्धन धनी सब के लिए समभाव से आराध्य थे ।
अभिलाषि मुमुक्षुओं के मात्र वे संसाध्य थे ॥११॥
थे सिद्ध पूर्णकाम वे भक्तों के अपने इष्ट थे ।
अवधूत आत्माराम थे सर्वज्ञ विश्व अभीष्ट थे ॥१२॥
सन्तों, महन्तों, योगियों सब में वही सम्मान्य थे ।
थे परमहंस विवेकपूर्ण ब्रह्मनिष्ठ, वदान्य थे ॥१३॥
आत्मज्ञ, आत्मक्रीड़, श्रोत्रिय, आत्मरति आचार्य थे ।
निर्द्वन्द्व थे, स्थितप्रज्ञ थे निश्चल परम निष्कार्य थे ॥१४॥
थे आप्तकाम निरीह निर्भय नित्य ही स्वस्थ थे ।
निर्मोह निर्मम निर्विकारी शुद्ध ब्रह्म तटस्थ थे ॥१५॥
गौरव परम पुरुषार्थ औ परमार्थमय योगीश थे ।
सत् चित् परम आनन्दघन सद्भावगम्य मुनीश थे ॥१३॥
बन्धन रहित थे तत्त्ववित् सब भांति से स्वच्छन्द थे ।
सब के परम कल्याणकारक आप्त आनन्दकन्द थे ॥१७॥
विज्ञानमय आनन्दमय हृदयेश जीवन्मुक्त थे ।
सब से परे सुख रूप थे नरदेह देह विमुक्त थे ॥१८॥
कुछ भी न थे सब कुछ ही थे प्राणों के सब के प्राण थे ।
प्रियतम सखा सद्बन्धु थे सद्गुरु हमारे त्राण थे ॥१९॥
जीवमकला के जीव थे प्राणेश थे वे पीव थे ।
जो कुछ यहाँ है विश्व में सब कुछ ही करुणासींव थे ॥२०॥

दुःख का कभी संसर्ग भी होता न उनके साथ में ।
ऐश्वर्य भर की थी विभूति उनके बाँयें हाथ में ॥२१॥
जिनके अलौकिक दिव्य दर्शन से हृदय खिल जाय था ।
पामर हठी शठ दम्भिकों का भी हृदय हिल जाय था ॥२२॥
उनके लिये मैं क्या कहूं मन बुद्धि से जो दूर थे ।
उनकी अकथ महिमा बड़ी सब भांति से भरपूर थे ॥२३॥
वे दीप्त तेजःपुंज थे अन्तुल मृदु निर्वान थे ।
ज्योतिःस्वरूप अनूप थे गुरुदेव मम भगवान् थे ॥ २४ ॥

श्री महाराज जी

[ले० श्री मती श्यामा कुमारी 'प्रभाकर']

उनका जन्म कब हुवा था यह स्मृतियों से बाहर की समस्या थी । उनकी आयु कितनी थी, यह डाक्टरों और वैज्ञानिकों के लिए जीवित आश्चर्य था। वे मर गये यह कोई नहीं कह सका और जिसने उनके दर्शन किए हैं वह कभी विश्वास नहीं कर सका क्योंकि अभी कल ही तो नव विकसित पुण्डरीक की तरह उनका तेजस्वी मुख मण्डल था । मृत्यु के लिए इतने नवीन, इतने युवक थे कि अभी यदि दो सौ वर्ष का अन्तर और पड़ता तो भी जीवन कला अपने प्रियतम को मृत्यु के प्रति समर्पण न करती। परन्तु असीम शोकमयी, कठोर, हृदय विदारक यह दुर्घटना सत्य है कि उन्होंने ६ जुलाई सन् १९३६ की संध्या के समय उत्तराखण्ड में कैलाश की एक शिखर पर शरीरान्त कर दिया ।

जिन सौभाग्य शालियों से ईश्वर प्रेम करता है वे अवश्यमेव युवा ही स्वर्ग वास करते हैं । सत्य है वे स्वयं प्रेम के सागर थे और ईश्वर के लाड़ले थे । उनसे मृत्यु ने भी प्रेम किया और अन्त में उन्हें वर ही लिया । वे भक्तवत्सल थे सच्चे प्रेमी के प्रियतम थे, करुणा के सागर थे, दया के निधान थे, दीनों के बन्धु, अनाथों के नाथ, दरिद्रों के स्वामी थे और स्वयं परमानन्द स्वरूप थे । वे प्रियतम की प्रेम मिलन की आशा को कैसे भंग कर सके थे । उन के यश का गायन अपनी झूठी चरम जिह्वा से किस प्रकार करें । जब वे परमानन्द स्वरूप में थे तब हम से उनकी सेवा ठीक ठीक न हो सकी। अपनी निद्रा, तन्द्रा, आलस्य सांसारिक व्यवहार और दुर्भाग्य के कारण उनकी सेवा सुश्रूषा में शायद त्रुटि हुई । अपने कलुषित हृदय के बनावटी प्रेम और चिकनी चुपड़ी बातों की भक्ति से उन को बहुत देर तक धोका न दे सके, जो कुछ किया, स्वार्थ और भय से किया और वह इतना थोड़ा और ऊपरी कि यदि आज ही प्रेम की नगरी में दंड की व्यवस्था हो जावे तो हमें सदैव के लिए कारवास अथवा देश निकाला मिल जावे । परन्तु क्षमा के अगाध समुद्र स्वरूप स्वयं वे ही थे जो क्षमा करके चल दिए । वे अपनी शक्ति स्वरूप माता गौरी के कितने भक्त थे कोई नहीं कह सकता । फिर जब वह स्वयं पर्वत पर खड़ी

प्रेमाश्रु बहा बहा कर बुलाने का संकेत कर रही थी तो वे कैसे न जाते।

उन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य का पालन और व्रत का आचरण किया था। क्या कभी गुलाब के फूल की पंखड़ियों पर सूर्योदय की पहली किरण पड़ते देखी है? अथवा शरद् में हिमाच्छादित पर्वत शिलाओं पर प्रातःकालीन भगवान् रश्मिमाली के हृदय का सुनहरी प्रकाश पड़ते देखा है? क्या कभी आवण में किसी दुःख दायिनी सायंकालीन बर्से हुये बादल की क्षणिक और जाती हुई किंचित् रक्त-ताम्र की सी अरुण आभा देखी है? अथवा लालों की खान में मुस्क्याता हुआ सूर्योदय देखा है? इन सब से भी कई गुना सौंदर्य परिपूर्ण उनका मुख मण्डल विशाल दैवी आकृति लिये हुये सुमेरु पर्वत पर नवोदित तरुण अरुण के समान तीव्र सुनहरी आभा से दीप्तिमान था। प्रेमारुण कितनी सुन्दर आंखें थीं जो दृढ़ महाव्रत और निरन्तर यौगिक हरि चिन्तन से अत्यन्त रसीली और मस्त रहती थीं। इनके बीच में भगवद्ध्यानाश्रय, और ब्रह्म-लोक तक प्राण वाहिनी सुन्दर नासिका इस लिये स्थापित थी कि कहीं आंखें एकदूसरी को देख कर स्वयं मोहित न हो जांय। रसान्वित उन्नत ललाट और तेजोमय मस्तिष्क इस चैतन्य तेजपुञ्ज परमानन्द सूर्य के लिये आकाश पटल बनाते थे। मुख में दिव्य प्रकाश था। दांत मोतियों की तरह चमका करते थे। सिंहनाद रखते हुए भी वाणी में अनुपम सरसता, मधुरता, कोमलता, कृपालुता और सहिष्णुता थी और उस में अभयदान और आशीर्वाद का भण्डार था। लम्बे २ श्वेत बाल और जटायें ब्रह्मर्षियों और महर्षियों की छवि प्रदान कर रहे थे। ऐसा मुखमण्डल एक तेजोमय मण्डल में गम्भीर चेष्टा करता दिखाई देता था। गर्दन एक विशाल सुडौल शंख की तरह थी और वक्षस्थल और स्कन्ध पराक्रमी चक्रवर्ती वीर क्षत्री राजर्षियों के समान विशाल थे। बाहें महारथी धनुषधारी योद्धाओं की तरह लम्बी और बलवती थीं। शरीर देवताओं का सा ऊंचा और गम्भीर था। तपस्या और योग से कृश हुए पैर आसन सिद्धि से कुछ असाधारण थे। मुट्ठियां ऐसी दृढ थीं कि मानो अकेले ही कितने घमासान युद्ध तलवार चला कर हो जीते हों। फिर भी कान्ति, शील, और गाम्भीर्य के समुद्र थे।

जब उपदेश करते तो घण्टों तक बिना थके उपदेश ही किए चले जाते और सब श्रोताओं की चित्तवृत्ति को इस प्रकार खींचे और मोहित रखते थे कि बस निस्तब्ध आनन्द का समा बन्ध जाता। ऐसा जादू का असर होता था कि उस उपदेशामृत को पीकर पातकियों के पाप नष्ट हो जाते और पापी पाप छोड़कर भक्त बन जाते। सिद्ध होते हुए भी कभी सिद्धि अथवा चमत्कार का दावा नहीं किया। ज्ञान के भण्डार थे, विद्या के अत्यन्त प्रेमी, कलाकारों और विद्वानों के चाहने वाले, सहायक और संरक्षक और क़दर करने वाले थे। उनमें विश्व भर का ज्ञान केन्द्र रूप से विराजमान था। स्वयं बड़े धुरन्धर विद्वान् थे, रातों पुस्तकें पढ़ा और सुना करते थे। रामायण से बहुत प्रेम था पूर्ण योगी थे। सम्पूर्ण ज्ञानी थे विरक्त वैरागी और उच्चतम कोटि के संन्यासी थे। सम्पूर्ण कलाओं और गायन वादन के आचार्य थे, ब्रह्मनिष्ठ थे, ब्रह्मवेत्ता थे, ब्रह्मज्ञानी थे, साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे और इसीलिए शरीर छोड़ने के दृढ विचार को कई महीने पहिले प्रकट कर चुके थे।

सद्गुरु देव

[ले—श्रीमती त्रिवेणी देवी]

आज मैं श्री १०८ श्री महाराज जी के चरणों में सिर झुकाती हूं कि जो मुझ अभागी को भी श्री प्रेम पूज्य श्री महाराज जी ने २२ वर्ष तक दर्शन दिए। जब मैं सात साल की थी जब श्री पूज्य महाराज जी के दर्शन हुए उस दिन से आज तक की क्या २ बातें वर्णन करूं इस जीभ से तो सात जन्म तक वर्णन नहीं कर सकती। सब से पहिले भटिन्डे में श्री पूज्य महाराज जी के दर्शन करके मैंने अपना जन्म कृतार्थ किया था। तब यह भी पता न था कि आश्रम चीज क्या होती है ? जब श्री परम पूज्य श्री महाराज जी के चरण भटिण्डे में टिके तो वहां पर श्री महाराज जी की कृपा से आश्रम बना। फिर दादरी चरण टिके तो दादरी में भी आश्रम बना, जिसमें अतिथि और साधू सन्त को कितना आराम पहुंचता है। रोटी, पानी तथा रात के निवास के लिये स्थान मिलता है। इसी प्रकार गढ़ी में, जींद में, आश्रम बनें यह सब श्री महाराज जी की कृपा है। जो जो कार्य श्री महाराज जी ने मेरी भलाई तथा मेरे हित के किये उनको तो मैं क्या वर्णन कर सकती हूं क्योंकि मैं तो बहुत मूढ़ और अनपढ़ ही हूं। बस मेरा एक यही सौभाग्य था कि मेरा ध्यान उनकी कृपा से उनके चरणों में बना रहता था। मैं अपना समय एक साल दुनियां के धन्धे में लगाकर १ महीना आश्रम में श्री महाराज जी के चरणों में रहा करती थी। उस एक महीने के प्रसाद से मेरे ११ महीने आनन्द में गुजरा करते थे। आज वोह समय आगया है कि १ महीने का आनन्द भी छुड़ाकर, हमें निराश करके श्री महाराज जी अपने निज रूप में समागये। हमें धीर नहीं बंधती और पछतावा होता है कि हम उनकी कुछ भी सेवा न कर सके, मनकी मन में ही रह गई। उन्होंने तो हमें दुनियां तथा धर्म के सब रास्ते दिखलाये परन्तु हम कुछ भी नहीं निकले। खैर ! अब तो श्री पूज्य महाराज जी से यही प्रार्थना है कि आप स्वप्न में ही मुझे शिक्षा और सदुपदेश देकर मेरा उद्धार कीजिये।

समाधि

वृक्ष औ लताओं पर छाई है उदासी आज,
हाय ! हाय ! शब्द भर गया है पवन में।
पीत धाम कालिमा पते से जान पड़ें सब,
उपवास सा हुवा है पशु–पक्षी गन में।
शोक लीन आश्रम निवासी दीन हीन हुये,
दुःसह वियोग हूक उठती है मन में।
परम आनन्द रूप सतसंग भवन था,
बना है समाधि हाय ! यही एक छन में॥

—दुर्गाप्रसाद गुप्त

श्रीमहाराज जी और आश्रम

[ले० श्रीमती सावित्री देवी विग गुजरानवाला]

इस परिवर्तन शील संसार में अनेक व्यक्ति उत्पन्न होते हैं और यथा समय मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं। परन्तु ऐसे कितने व्यक्ति हैं जो अपने जीवन से इस असार संसार को वह मार्ग दिखा जाते हैं जिस पर चल कर मनुष्य वास्तविक मनुष्य बन जाता है। यद्यपि महापुरुष बनने का ढोंग तो अनेक करते हैं और अपनी वाहवाही के गीत गाकर तथा अपने मुंह मियां मिट्ठू बनकर लोगों को धोखा देना भर जानने वाले हैं तथापि वन में खिले हुए फूल की भांति आस पास के जंगल को सुगंधित करके उसी निर्जनता में प्रवीण होने वाले अथवा दीपशिखा की भांति स्वयं कष्ट सह कर भी दूसरों को प्रकाश देने वाले, श्रेष्ठ महापुरुष विरले ही देखने में आते हैं। हमारे चरितनायक इसी कोटि के महापुरुषों में से थे। श्री महाराज जी के जीवन वृत्तान्त के विषय में आश्रमवासी या अन्यान्य जन कभी परिचय नहीं पा सके। यदि कोई उनसे नाम धाम अथवा जन्म परिचय के विषय में वार्तालाप करता था तो वे प्रायः मुस्कराकर यही उत्तर देते थे कि संन्यासियों का परिचय नहीं पूछना चाहिए। किन्तु महाराज जी के सुडौल शरीर, भाषण एवं लम्बे कद को देखकर यही अनुमान किया जा सकता है कि आप का जन्म स्थान ब्रज होगा। जिस किसी ने भी देखा है आप की आयु का अनुमान १०० वर्ष से अधिक किया है। आप अन्तिम समय तक दिव्य तेजोमय दीखते थे। २५ दिन निराहार रहने पर भी आप का चेहरा बड़ा दिव्य मालूम पड़ता था। आपका जीवन एक तपस्या का जीवन था, आपका प्रेम आकाश की तरह व्याप्त, समुद्र की तरह स्वच्छ, पृथ्वी की तरह सहनशील, प्रातःकाल के सूर्य की तरह प्रकाशमान, माता के स्नेह की भांति शान्त और किसी की उपेक्षा न रखने वाला तथा निर्मल था। आप अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक ज्ञानयोगी के साथ कर्मयोगी भी थे। आप के मुख से वह दिव्य ज्योति फूटी पड़ती थी जिससे आप आलोकित होते हुए दूसरों के लिये लाइट हौस (Light house) बने हुये थे। आश्रमवासियों तथा पास के निवासियों के लिए आपका जीवन एक आदर्श जीवन था। आपका व्यक्तित्व इतना ऊंचा था कि जो दर्शन करता था झुक जाता था। आश्रम का संचालन आप स्वयं करते थे और आश्रम वासियों को कार्य करने का उपदेश करते थे जब कभी कोई आश्रमवासी अपने व्रत में प्रमाद करता था उसे उसी समय उसका स्मरण करा देते थे। आपको प्राकृतिक दृश्य बड़े प्रिय थे। आप आश्रम को सदैव नवीन नवीन पौधों और बेल बूटों से सजाया रखते थे। आपका हृदय बड़ा कोमल था। मनुष्य या पशु पक्षियों की तो कथा ही क्या है आप एक पौधे को सूखता देखकर विह्वल हो जाते थे। आपकी उदारता से आस पास के लोग भी इतने प्रभावित थे कि आपके आदेश

को साक्षात् ईश्वर वाक्य समझते थे। आपकी सत्ता गरीबों और निराश्रयों के लिये सदैव धैर्य बंधाती थी। यद्यपि वे आज स्थूल रूप से हमारे बीच में नहीं हैं, तथापि उनका आश्रम रूपी पंच भौतिक शरीर आज भी हमको प्रकाश दे रहा है। आशा है आश्रम वासी इस स्मारक को बनाए रखेंगे और जीवन की उस ज्योति को कभी न बुझने देंगे जिसे श्री महाराज जी ने आज से बीस वर्ष पूर्व प्रदीप्त किया था।

जो एक दिन भूत प्रेतों का निवास स्थान था आज बड़ी शोभा पा रहा है। इस जंगल से मनुष्य इतना डरते थे कि कोई भी उसके समीप नहीं जाता था न ही कोई खेती बाड़ी होती थी। एक भी वृक्ष दृष्टि में नहीं आता था और मुख्य बात यह है कि वहां का पानी खारा था जिस से वृक्ष पैदा नहीं होते थे। आज इस भूमि में बहुत अन्तर हो गया है कम से कम ७०-८० किस्म के वृक्ष लगे हुये हैं पानी भी मीठा निकल आया है। अब उसकी शोभा वर्णनातीत है। आश्रम में सब अपने हाथ से काम करते हैं। सेवा भाव करने के लिए सब सदा तत्पर रहते हैं। वहां सब प्रकार के अमीर गरीब अनाथ लड़के लड़कियां शिक्षा पाते हैं और अपने जीवन का सच्चा मार्ग प्राप्त करते हैं लड़कियों की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। वहां दोनों प्रकार के स्कूल कन्याओं के लिए विद्यमान हैं एक में कई प्रकार की दस्तकारी सिखाई जाती है और दूसरी में मिडल तक का स्कूल है। हिन्दी रत्न-भूषण प्रभाकर आदि की भी परिक्षायें होती हैं। इसके अतिरिक्त इलाहबाद की परिक्षायें विद्या-विनोदनी विदुषी सरस्वती सब का केन्द्र स्थान है कहीं बाहिर जाने का परिश्रम नहीं करना पड़ता है। संस्कृत को मुख्य माना जाता है आश्रम के नियम बहुत अच्छे हैं। ब्रह्मचारी गण भी संस्कृत शिक्षा पाते हैं। प्राज्ञ-विशारद शास्त्री आदि। वहां आश्रम के केन्द्र में एक विशाल सतसंग भवन है जिसमें सब आश्रम वासी सत्संग करते हैं, ऊपर कमरे में श्रीमहाराज जी रहते थे उपदेश के पिपासु लोग हर समय उनके दर्शनों के लिये उन्हीं के द्वार पर बैठे रहते थे कि कब दरवाजा खुले और कब दर्शन करके चित्त को शान्त करें। आज हमारे पास वह साक्षात् रूप में नहीं हैं हमें इस का बहुत वियोग है परन्तु वह हमारे ऊपर एक अभौतिक रूप में हमारे सहायक होंगे और इस स्मारक को सदा उन्नति के पथ पर ही चलाने के उपदेश देते रहेंगे। यह सब कुछ आज हम उन्हीं की कृपा से देख रहे हैं हम उनके उपदेश से कठिनाई का जीवन व्यतीत करना ग्रहण करते हैं। मैंने अपने जीवन के कई साल वहां व्यतीत किये और बहुत अच्छी शिक्षा पाई है। मैं उस आश्रम के इस भारी अहसान को कभी नहीं भूल सकती हूं। हमारे आश्रम की लड़कियों और लड़कों के बड़े उच्च भाव हैं हमने श्री महाराज जी की कृपा से बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण की है। मेरा उन ब्रह्म रूप शान्त स्वरूप, कल्याण दाता, प्रेम और भक्ति के अवतार के चरणों में अनन्तवार नमस्कार है।

श्री भक्ति-आश्रम

[ले०-हरि कृष्ण कमलेश, कृष्ण कुटीर]

(१)

भारत की पावन तपोवन सुभगशान्त-भक्ति-साधन की थल विमल महान है।
संस्थापक जाके ऋषिराज 'परमानन्द', से-तिनके हिय भावको प्रतीक भास मान है॥
देश के उदीय मान गौरव की सुचारुचिह्न, सब ही को प्यारो प्रिय प्राण के समान है।
भक्ति सुधा स्रोत सों भगाय भीति भारत की, करत पुनीत नव-जीवन प्रदान है॥

(२)

आत ऋषि राज, कृष्ण भक्ति सों विभूतिमान गौरव गुण वान, कृष्ण-धाम को पधारे हैं।
किन्तु करि करुणा अनेक उपदेश दये-हये जो पुनीत मीत आपु चित धारे हैं॥
तिन को परचार ध्रुव धर्म के उधार हेत कीजै जागरूक बनि आपु ही सहारे हैं।
भक्ति सुधा दान रहै, आश्रम को मान रहै, भारत की शान रहे "कृष्ण" प्राण प्यारे हैं॥

वह महान् पुरुष

[ले० श्री हरिश्चन्द्र गालिब बी० एस० सी० एल० एल० बी०

पिछले ४-५ वर्ष से श्री १०८ परम हंस पूज्य महाराज श्रीस्वामी परमानन्द जी शिमले निवासियों के उत्सव भाग्य होने पर शिमले में १-२ मास के लिये आया करते थे। जिस दिन से श्रीस्वामी जी शिमले में आने लगे शिमला जैसा स्थान जो कि पश्चिमी सभ्यता में डुबकी लगा रहा है को जगा डाला। हरसाल जहां शिमले में आरगन, हारमोनिय आदि की आवाज आती थी वहां अब राम नाम तथा हरि कीर्तन की ध्वनि भी घर घर से निकलती है। इसका कारण केवल स्वामी जी का शिमले में आना और अमृत वर्षा करना है। जिन भद्र पुरुषों को स्वामी जी का उपदेश सुनने का सुअवसर हुआ है वह ही भली भांति उस आनन्द को जो वह पाते थे प्रतीत कर सकते हैं। तुलसीदास जी ने कहा है—

सन्त समागम हरि कथा एतत दुर्लभ दोय।
सुत दारा और लक्ष्मी पापी घर भी होय॥

सन्तों के समागम की महिमा की व्याख्या करना अति कठिन है। कठिन ही नहीं परन्तु लेखनी से वर्णी नहीं जा सकती। (यदि होसका तो सन्त महिमा पर फिर कभी लिखा जावेगा)

स्वामी जी को मैंने सन्त प्रतीत किया। स्वामी जी की जितनी भी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। मेरा विश्वास आज कल के जो सन्त हैं (कलि-युगी सन्त) उनसे उठ गया था। परन्तु पूर्व जन्म के किसी अच्छे कर्म से श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज के शिमले आने की खबर सुनकर दर्शन करने के लिये चित्त व्याकुल हो उठा। दर्शन पाकर और अमृत वर्षा रूपी उपदेश सुनकर मुझ को विश्वास हुआ कि संसार में ऐसी व्यक्तियां हैं जिनको सन्त कहा जा सकता है।

थोड़े अक्षरों में मैं कह सकता हूं कि स्वामी जी उच्च कोटि के योगी थे। उन्होंने काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी शत्रुओं पर विजय पाली थी। वह संसार को एक समान समझते थे। वह पाखण्ड का खण्डन करते थे, अज्ञान का नाश करते थे ज्ञान का प्रकाश देते थे। वह अनेक मत मतान्तों को एक बनाते थे। यहां तक कि स्वामी जी हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सबको एक समझते थे। वह कहा करते थे कि "गायत्री" का मन्त्र हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सब को पढना और जपना चाहिये सब को एक जैसा फल देता है। गायत्री मन्त्र का जाप और हरि कीर्तन का उपदेश स्वामी जी के हर एक भक्त को याद रहेगा।

स्वामी जी के एक २ लक्ष पर जुदी २ पुस्तक लिखी जा सकती हैं। परन्तु इस भक्ति लेख में बहुत से लेख होंगे और सब लेखों को जगह मिलनी चाहिये अतः मैं समाप्त करता हूं।

श्रद्धा के पुष्प

[ले० श्रीमती सुभद्रा कुमारी]

हम आर्तनाद कर विलख रहे, हा ! कहां गये श्रीमहाराजजी हम दीन दुखित हो टेर रहे फिर दर्शन दो श्रीमहाराज जी

कहां गये, मेरे परम पूज्य गुरुदेव कहां गये ? मुझे निराधार छोड़ कहां जा छुपे, बताओ कहां ढूंढूं किधर खोजूं ? गुरुदेव ! क्या यही दिन दिखाने के लिये अब तक जीवित रक्खा था ? हा ! हम आपके वियोग में जल रहे हैं, अच्छा हो यदि जल कर एक मुट्ठी भस्म हो जावें। पर नहीं-ऐसा तो कभी सौभाग्य से ही होगा ! आओ गुरुदेव ! एकबार फिर इस अपवित्र हृदय को पवित्र करने आओ, इस मन मन्दिर में अपनी व्यापक ज्योति जगाने आओ, और आओ हम भूले भटकों को रस्ते पर लगाने आओ।

मृत्यु ! तू बड़ी ही वज्रहृदया है, सच तू बड़ी ही नीच प्रकृति की है जो किसी की विभूति को भी सहन नहीं कर सकती ! मृत्यु ! तेरी उत्पत्ति होते ही क्यों न मृत्यु हो गई ? हे गुरुदेव ! विश्व के पालन करने वाले, चराचर पर दया दृष्टि

रखने वाले ! हम अभागों पर भी दया करो और अपनी कृपा के दो चार कण इधर भी आने दो। पूज्य ! याद करो, याद करो भारत में अर्जुन के सम्मुख जो वचन दिया था और प्रण किया था उसे याद करो। आओ ! आओ मेरे देव ! मेरी करुण पुकार पर करुणार्द्र होकर आओ ! और स्वरचित धाम में एक बार फिर तड़पते हुये भक्तों को निहारने आओ। हे अनाथों के नाथ ! इन अशरण शरण-चरणों को छोड़ कहां जाऊं, क्या करूं ? स्वामिन् ! किसके द्वार पर जाकर हाथ पसारूं ? आओ मेरी डूबती हुई नैया को सहारा दो। कहो प्रभु ! क्या अब नहीं आवोगे। नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। आओगे और अवश्य आओगे। हे भक्त वत्सल ! निरधारों के आधार ! अबलाओं के सबल ! आह ! इन दुःखित प्राणियों की आह ! और पुकार को सुन कर भी क्या हृदय द्रवित नहीं होगा ? इष्टदेव ! क्या यह सब देखते हुये भी चुप साधे रहोगे और आखें बन्द रक्खोगे ? हा ! प्रभु यह तुम्हें शोभा नहीं देगा ! गुरुदेव हमारी तरफ से बन्द की हुई आखें अब खोलनी, होंगी और गीता का अपना "यदा यद हि धर्मस्य' वचन याद करना होगा। आओ भगवन् ! आओ तेरे बिना कहो मेरा कौन त्राण करेगा और सारे दुःखों को कौन हरेगा ?

हे करुणा के सागर ! क्या मेरे करुण क्रन्दन पर जरा भी तरस नहीं आवेगा। आवेगा जरूर आवेगा। इसी विश्वास के आश्रित और ओट में मेरे प्राण मेरे हृदय में छुपे हुये हैं।

हे गुरु देव ! तुम परम कृपालु थे आपने कभी भी हमारे कर्मों पर ध्यान न दिया। यदि कर्मों पर ही ध्यान करते तो हम जन्म जन्मान्तरों के पापी क्या इन पवित्र चरणों के दर्शन करने के अधिकारी हो सकते थे ? गुरुदेव ! अब अपनी उस स्वभाविक आदत को भुला कर और हमको दीन, हीन, बलहीन बना कर कहां गये ? वचन दो, भगवन् ! अपने एक बार फिर अवतरित होने का वचन दो, हा ! इतना ही इष्टदेव इतना ही सही, कि एकबार फिर प्रत्यक्ष अपनी उस माधुरी मूर्ती का दर्शन दो, जिससे कि मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि के दो चार पूर्ण विकसित पुष्प ही श्री चरणों में समर्पित कर सकूं।

मेरे परम आराध्य देव

जो महान् आत्माएं संसार के उद्धारार्थ किसी महान् व उच्च लक्ष को लेकर संसार में अवतरित होती हैं वे सर्वदा विशेष गुण सम्पन्न होती हैं ऐसा श्रुति व स्मृतियों के आधार पर कहा व माना जाता है। संसार में जब से सृष्टि का क्रम चला है तब से ऐसा ही नियम चला आया है। जब जब संसार में राक्षसी वृत्ति का प्राबल्य हुआ है तब तब भगवान् को किसी न किसी रूप में अवतरित होना पड़ा है। कभी नरसिंह के रूप में आते, हैं कभी वराह के, कभी राम के और कभी कृष्ण के। जब जिस बात की आवश्यकता हुई उसी की पूर्त्यर्थ भगवान् संसार में पथप्रदर्शनार्थ आये ही रहे हैं। इस युग में जब कि सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति छाई हुई थी भगवान् को

शान्ति और परम आनन्द का सम्राज्य स्थापित करने के लिये परमानन्द के रूप में अवतरित होना पड़ा। जैसे कि कई एक अवतारों के सम्बन्ध में हम उनके बालपकाल तथा प्रकट होने के पूर्व के समय के विषय में कुछ नहीं कह सकते ऐसे ही इन महा पुरुष का प्रकट होने से पूर्व का समय अज्ञात सा ही है। परन्तु ऐसे भक्त जिन्होंने इन शान्ति के अवतार के ५० या ५५ वर्ष पूर्व दर्शन किये थे उनके द्वारा विदित हुआ है कि उन्होंने इनको उस समय भी इस ही अवस्था में देखा था।

इतिहास में यह बात सर्वदा सत्य है कि महान् पुरुषों का जिस स्थान में पदार्पण होता है उस स्थान के भाग्योदय हो जाते हैं। उनकी अलौकिक शक्ति से जंगल में भी मंगल हो जाते हैं। यह बात यहां पर भी अक्षरसः सत्य ही घटती है। अब की बार पूज्य चरणों की सेवा में रह कर कुछ काल जींद में रहने का सौभाग्य हुवा। वहां बन-खण्डी नाम का एक स्थान है। कहते हैं कि ३०, ३५ वर्ष पूर्व एक बार श्री महाराज जी घूमते २ उस स्थान पर आकर ठहर गये। वहां पर एक छोटे से टूटे फूटे चबूतरे पर महादेव की मूर्ति थी और एक छोटी सी कुटि थी जिसमें आदमी भली प्रकार खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसी में श्री महाराज जी ने आसन लगाया। लाल कभी छिपाये छिपता नहीं है फिर ऐसी महान् आत्मायें कैसे छिप सकती थीं? उस निर्जन स्थान में ही दर्शनार्थियों का तांता लग गया। वह स्थान जहां दिन में भी कोई मनुष्य नहीं फटकता था स्वर्ग की भांति रमणीक होने लगा। रात्रि के एक एक दो दो बजे तक जिज्ञासु भक्त श्री महाराज जी का उपदेश सुनते थे। उपदेश में हिन्दू ही नहीं बड़े २ मुसलमान भी आया करते थे। वहां के लोगों ने बताया कि रियास्त के एक प्रतिष्ठित मुस्लिम अहलकार तो अपनी शाम की नमाज़ जब तक श्री महाराज जी वहां पर विराजे नित्य इनके पलंग के पास बैठ कर पढ़ते थे। जब लोगों की बहुत भीड़ होने लगी और चौबीस घंटों में घंटा भर भी एकान्त नहीं मिलने लगा तो श्री महाराज जी शाम को बीड़ (सरकारी जंगल) में चले जाया करते थे परन्तु लोगों में इतनी अच्छा भक्ति और लगन थी कि जिस भयानक बीड़ में दिन छुपने के पीछे लोग भूलकर भी नहीं जाया करते थे जिज्ञासु भक्त श्री महाराज जी की खोज में इस प्रकार पागल होकर फिरते थे जैसे किसी काल में गोपियां कृष्ण को लताओं और कुंजों में ढूंढ़ती फिरती थीं। जब वे परेशान हो जाते और पता नहीं लगता तब श्री महाराज जी जोर से 'हर हर महादेव' का शब्द करते। उस समय उन लोगों को उस 'हर हर महादेव' में कितनी प्रसन्नता होती होगी यह पाठक स्वयं ही अन्दाजा लगालें। जब सब लोग जाकर बैठ कर जाते थे तो श्री महाराज जी का उपदेश आरम्भ होता था। भक्तों को कितनी रात्रि चली गई है इसका उस अमृत वर्षा के कारण कुछ भी ज्ञान नहीं होता था। अब वही निर्जन बनखण्डी स्थान श्री महाराज जी के प्रताप से ऐसा रमणीक बना हुआ है कि उस में एक तालाब और दो बड़े सुन्दर मकान तथा सैंकड़ों बड़ पीपल के वृक्ष लगे हुये हैं। इसी प्रकार जींद में जयन्ती देवी नामक स्थान है जो

पहले प्रायः अज्ञात सा ही था। श्री महाराज जी जब पुनः जींद पधारे तब वहां पर ही एक नीम के नीचे आसन लगाया था। आज वह स्थान भी बड़ा रमणीक होगया है, वहां पर कई एक मकान बन गये हैं और प्रातःकाल बहुत से मनुष्य स्नान व भजन ध्यान निमित्त वहां पर जाते हैं।

रामपुरा को जो कि आज दूर दूर तक प्रसिद्ध है सन् १९१६ से पूर्व कौन जानता था इस इलाके के जहां भूमि में कांटा, पानी में कांटा, खारी पानी है) अन्त में कांटा जो (पैदा होता है) बोली में कांटा (बोली बड़ी कड़ी है) है उसी समय भाग जाग्रत हो गये थे जब की श्रीमहाराज जी ने इस भूमि में पदार्पण किया। हम सबको राव बहादुर राव बलवीर सिंह जी जो कि इस ग्राम के रईस हैं का भी कृतज्ञ होना चाहिये जिन्हों ने प्रथम दर्शन में ही इन दिव्य व महान् आत्मा को पहचान लिया। पूज्य महाराज जी को इस इलाके पर कुछ विशेष ही कृपा करनी थी वर्ना स्थान तथा अनुकूलता तो इससे अधिक और भी कई एक स्थानों में मिल सकती थी। भक्तों को आश्चर्य होता था कि जिस स्थान में दाल बनाने के लिए भी पानी दो तीन मील से लाना पड़ता है, जिस स्थान में वृक्षों की तो बात ही क्या घास भी उगना पसन्द नहीं करती, जहां सर्वत्र भुरट (विरविटे) और झाड़ों का एक छत्र सम्राज्य व्याप्त है उस स्थान को श्री महाराज जी ने अपना प्रधान कार्य क्षेत्र चुना है। उनको क्या मालूम था कि यह व्याधियां मनुष्यों के मार्ग में बाधक हो सकती हैं, भगवान् की अलौकिक शक्तियों के समक्ष इनकी क्या गणना है? वहां तो पदार्पण करते ही खारी पानी तुरन्त ही मीठे पानी में परिवर्तित हो गया था और ब्रह्मचारियों को आज्ञा देदी गई कि अपने पीने के लिये जहां अनुकूल जचे कूप खोदलें। वे अपनी रसोई के पास कुवा खोदते हैं और पानी मीठा ही नहीं स्वादिष्ट पाचक तथा आस पास के सब कूवों के पानी से हलका निकलता है। फिर क्या था आश्रम में स्थान स्थान पर मीठे पानी के कूवे हो गये। वह भूमि जहां झाड़ और भुरट अपना सम्राज्य जमाये बैठे थे आज एक स्वर्गीय उद्यान के रूप में परिवर्तित होगई। भूमि में घास भी नहीं उगती थी उसी भूमि में हज़ारों गगन चुंबी वृक्ष ऊपर सर उठाये हुवे अपने एक मात्र आराध्यदेव का पत्ते पत्ते से यशोगान कर रहे हैं।

पूज्य श्रीमहाराज जी ने इस संसार में जहां घोर अशान्ति छाई हुई है हमारे समक्ष आठ ऐसे उद्देश्य रख दिये हैं कि जिनको व्यवहार रूप में लाने मात्र से अशान्ति का मूलोच्छेद होकर शान्ति और सुख का साम्राज्य स्वतः ही स्थापित हो जाय। महाराज जी श्रीभगवद्भक्ति आश्रम का श्रीगणेश किया। यह आश्रम अपना आप उदाहरण है और प्रत्यक्ष शिक्षा दे रहा है।

पूज्य महाराज जी ने देखा कि भारत में पढ़े लिखे लोगों में से भगवान् के प्रति श्रद्धा और विश्वास उठता जा रहा है, वे नास्तिकता की ओर तेजी से दौड़े जा रहे हैं परस्पर में साम्प्रदायिकता इतनी बढ़ गई है कि दो चार मनुष्य भी एक स्थान पर मिल कर बैठ नहीं सकते, सब अपनी २ ढपली से अपना २ बेसुरा राग अलाप रहे हैं तो उन्होंने इसके प्रतिकार के लिये शिमला जहां पर

कि ग्रीष्म काल में भारत का इतर स्वतः ही इकट्ठा हो जाता है को अनुकूल स्थान समझ कर एक सत्संग सभा नामक संस्था की नींव डाली । दो ही वर्ष के भीतर इस सभा से जो लाभ हुवा वह शिमला वासी भली प्रकार से जानते हैं । उन्होंने इस सभा के द्वारा आर्य समाजी, सनातनी जैन, बुद्ध, सिक्ख यहां तक कि ईसाई और मुसलमानों को भी एक प्लेट फार्म पर लाकर खड़ा कर दिया।

भारत में कई एक अनिवार्य कारणों से अन्धापन नित्य बढ़ता जा रहा है । जिनके पास कुछ पैसे हैं वे तो हस्पताल आदि में जाकर अपना इलाज करा सकते हैं, परन्तु वे गरीब अन्धे जिनको अपनी गरीबी के कारण विवश होकर अन्धा ही रहना पड़ता था उनके नेत्र खुलाने के लिए पूज्य श्री महाराज जी ने स्थान २ पर अन्धों के मेले कराये । इस प्रकार के मेले दो ढाई वर्ष के भीतर सोलह स्थानों पर किए गए । जहां पर कई हज़ार गरीब अन्धों को नेत्र मिले । हरेक मेले में श्री पूज्य महाराज जी स्वयं जाते थे और इस बात का पूरा पूरा ख्याल रखते थे कि किसी गरीब अन्धे को तकलीफ न होने पावे ।

सार्वजनिक कामों में इतना भाग लेने पर भी वे सर्वदा कमल पत्रवत् इनसे असंग रहते थे । उनको न तो हमने किसी कार्य की सफलता पर प्रसन्न होते देखा न असफलता पर उदास वे सर्वदा एक रस रहते थे, उनको सर्वकाल ब्रह्म में लीन रहने के कारण देहाध्यास तो था ही नहीं वे विदेह मुक्त की भांति सब कार्य करते थे । मैं पाठकों के समक्ष नित्य घटनाओं में से एक दो घटना यहां पर लिखता हूं । वैसे तो सिद्ध पुरुष कभी भी अपनी सिद्धि या अलौकिकता को मुंह से कहना तो दूर रहा अपने किसी कर्म से भी प्रकट नहीं करते परन्तु कभी कभी असाधारण अवस्था में ऐसी घटना हो जाती हैं जिस से कि दर्शकों को उसका ज्ञान हो जाता है । एक बार श्री महाराज जी के पैर के अंगूठे में एक आंटन हो गई । भक्तों ने आग्रह किया कि इसको गर्म जल से सेका जाय । मैंने एक बड़े पात्र में जल गरम किया और खौलता हुवा पानी चूल्हे से उतार कर श्री महाराज जी के पलंग के पास रख दिया और कार्यवश नीचे चला गया । मैं बदकिस्मती से यह निवेदन करना भूल गया कि पानी बहुत गर्म है । श्री महाराज जी पलंग से उठे और उस गर्म जल में पैर रख दिया । १५,२० मिनट पीछे मैं आया और पैर पानी में देख कर निवेदन किया कि पानी तो बहुत गर्म था । मैंने देखा कि वे उस समय किसी और ही अवस्था में थे उनकी वृत्ति उस समय अन्तर्मुख थी । उन्होंने मेरे इन शब्दों से आंखें खोलीं, वृत्ति बहिर्मुख हुई और पैर बाहर निकाला तो जो भाग पानी में था उस सब पर छाला पड़ा हुवा था । मुझे अपने कर्म पर बड़ा पश्चाताप हुवा । जनक राज विदेह थे और मिथिला को जलती देख कर यह कह सकते थे कि 'मिथिलायां दह्यमानायां न मे दह्यति किञ्चन' परन्तु ऐसे महापुरुष विरले ही होते हैं कि जिनका शरीर जल रहा हो और उनको उसकी खबर भी न हो ।

कभी कभी जब चलते थे तो जूती यदि ढीली होती थी तो वह पैरों में से निकल जाती थी

जब किसी भक्त की दृष्टि चरणों पर पड़ती तो पता लगता कि जूती पैर से निकल गई है। वह लाकर जूती पहनाने के लिए निवेदन करता तो उस समय ऐसा मालूम होता था कि हमने बलात् उनके ध्यान को बहिर्मुख किया है। वे पैर बढ़ा देते थे और फिर चल पड़ते थे। संसार में ऐसे महापुरुष और भी हुये होंगे जो चलते, फिरते उठते, बैठते, सर्वदा तल्लीन रहते हों परन्तु हमने तो अपने जीवन में इनके अतिरिक्त किसी को देखा नहीं। ऐसी अनेक घटनायें हैं जो कि ईश्वर ने चाहा तो फिर कभी पाठकों की सेवा में भेंट करेंगे।

अज्ञान रूपी अंधकार को ज्ञान रूपोशलाका से निकालने वाले, दीन दुःख हरण, पतित पावन, अनाथों के नाथ, गरीबों के सहायक, भारत की उज्वल कीर्ति, सर्वदा ब्रह्मानन्द में तल्लीन रहने वाले, परम सुख के दाता, ज्ञान की मूर्ति, सारे द्वन्द्वों से अतीत, त्रिगुण रहित एक मात्र हमारे सबके आराध्यदेव को हा! निष्ठुर व निर्लज्ज दैव! तूने असमय में, बिना संकेत दिये, हमसे बलात् छीन कर हमको सर्वदा के लिए अनाथ असहाय, दीन हीन व दुःखी बना दिया।

भूमा

महर्षि की पुण्य स्मृति

[ले०—श्री महावीर सहाय महकमा खास संगरूर]

प्यारे पाठको! आज मैं जिन महर्षि की पुण्य स्मृति में कुछ लिखने लगा हूं उनसे 'भक्ति' के पठन पाठन तथा अनुशीलन करने वाले तो लगभग सब ही सज्जन अच्छी तरह परिचित होंगे उनके अतिरिक्त समस्त भारत वर्ष में उनका व्यक्तित्व एक विशेष स्थान रखता था। कहने की आवश्यकता नहीं कि वे महान आत्मा, सिद्ध योगी राज, परम हंस श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज थे जिन्होंने पांच वर्ष की अवस्था से घरबार छोड़ कर आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत को पालन करते हुए भारतवर्ष के अनेक स्थानों में भ्रमण करके संसार ताप से परितप्त मनुष्यों को अपने मधुर और सार गर्भित उपदेशों द्वारा भक्ति मार्ग की शिक्षा देकर सीधे रास्ते पर लगाया। जींद, रामहद (कुरुक्षेत्र) पालम, देहली, शिमला, रामपुरा, दादरी आदि अनेक स्थानों पर सतसंग और हरिकीर्तन का प्रचार किया और रामपुरे के जागीरदार कैप्टिन राव बलवीर सिंह जी बहादुर को सतमार्ग की शिक्षा देकर और धर्म कार्यों में प्रवर्त करके उनकी काया ही पलट दी।

यथार्थ में स्वामी जी केवल एक बड़े धुरंधर योगीराज, पूर्ण ज्ञानी और बड़े महात्मा ही नहीं थे वरन् उत्तम कोटि के संत थे। जिन सज्जनों को उनके उपदेश सुनने और उनके सतसंग से लाभ

उठाने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है वे भी भली प्रकार उन्हें जान सके हों इसमें संदेह ही है। वास्तव में उनकी महिमा गुप्त ही थी। वे अपने भक्तों की सहायता सहस्रों मील की दूरी पर बैठे हुए ही सन्त रीति से करते रहते थे। स्वयं मुझे ऐसे अनुभव अनेक बार हुए हैं। भीमताल, अजमेर, संगरूर, जींद आदिक अनेक स्थानों पर जब भी किसी सहायता की आवश्यकता हुई तत्काल ही किसी न किसी विचित्र ढंग से काम बन गया। परोपकार के कामों में सत संगियों को प्रवर्त्त करते थे और स्वयं भी बड़ी तत्परता से भाग लेते थे। रामपुरे का भगवद्भक्ति आश्रम साक्षात पुराने समय के ऋषिकुलों और गुरुकुलों का नमूना है। इसकी शाखाएं भी दादरी, भटिन्डा, आदि कई स्थानों पर खोली हुई हैं। गत कार्तिक मास में जींद में भी भक्ति आश्रम की नींव डाली। इनकी महत्ता का यह एक साधारण सा प्रमाण है कि देश के अनेक बड़े बड़े व्यक्ति राजे महाराजे तक जो उनके दर्शनों का लाभ उठाते थे अपने आपको कृत-कृत्य समझते थे और स्वामी जी के अतुल प्रभाव से प्रभावित हुए बिना न रहते थे। कुछ दिन हुए शिमले में लेडी विलिंगडन ने उनके दर्शन किये थे और अपना नाम उस संस्था के साथ लगाये जाने की अनुमति दी थी जो कि स्वामी जी महाराज ने आंखों की चिकित्सा मुफ्त करने के लिये स्थापित की हुई है। यह संस्था प्रति वर्ष भारत वर्ष के किसी विशेष स्थान पर अन्धों के लिये खाने पीने और रहने का प्रबंध करती है और उसमें डाक्टर मथुरादास जैसे प्रसिद्ध आंखों की चिकित्सा के विशेषज्ञ मुफ्त चिकित्सा करते हैं। गरीब लोगों के लिये भोजन आदि भी संस्था की ओर से ही दिया जाता है। सौ वर्ष के लगभग आयु होने पर भी उनके मुखारविन्द की कान्ति सूर्य के समान थी। यह था अखंड ब्रह्मचर्य का तेज और योग का प्रताप। इस क्षुद्र लेखक को भी स्वामी जी के चरणों में उपस्थित होने का अनेक बार सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बल्कि कई बार तो ऐसे अवसर भी उन्होंने अपनी कृपा दृष्टि से प्रदान किये हैं कि मेरे और उनके अतिरिक्त और कोई वहां न था, जब जब उनके दर्शनों से लाभ उठाया है अपार शान्ति प्राप्त हुई है। दर्शन का विचार करके घर से चल पड़ने पर ही हृदय एक पुकार का आनन्द अनुभव करने लगता था, उनकी स्मृति कुछ कम आनन्द दायक नहीं है।

उनके विषय में यह कहना बहुत ही कठिन है कि वे किस कोटि के सन्त थे, कभी कभी उनकी कृपा होने पर कोई कोई शब्द मौज में उनके मुखार-विन्द से निकल जाता था जिससे यह गुमान अवश्य लग सकता है कि उनके विषय में यह समझना कि वे किस कोटि के सन्त थे साधारण साधुओं का भी काम नहीं है, और हम जैसे क्षुद्र प्राणियों की बुद्धि के लिये तो सर्वथा अगम्य ही है। उसको वेही लोग कुछ समझ सकते हैं जिन पर गुरु और सन्तों की पूर्ण कृपा हुई है।

जाको गुरु ने रंग दियो कबहुं न होय कुरंग।
दिन दिन बाणी ऊजली बढ़े सवाया रंग॥
सन्तन की दया से उपजे बहु आनन्द।
कोटि विघ्न पल में टरें मिटे सकल दुख द्वन्द॥

एकबार एकान्त में किसी मत के उपदेश के सम्बन्ध में कुछ वार्तालाप हो रहा था, मुझे याद है उस समय स्वामी जी ने यह शब्द कहे थे "यह तो निरंजन तक ही है"। और उनके एक पद में "सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी" यह शब्द आये हैं। जिससे जान पड़ता है कि वे केवल एक पूर्ण योगी ही नहीं थे बल्कि सच्चे सन्त थे परन्तु साधारण बात चीत में कभी यह प्रतीत न होने देते थे कि वे इतने बड़े सन्त हैं, वे अपने आप को बहुत ही गुप्त रखना चाहते थे। वाक् सिद्धि के तो अनेक अनुभव लेखक ने और दूसरे अनेक व्यक्तियों ने किये हैं।

कुछ दिनों से स्वामी जी इधर उधर न जाकर प्रायः आश्रम में ही अधिक वास रखते थे, इसका कारण विशेष करके आश्रम वासियों का प्रेम और अटल श्रद्धा ही है, यह लेखक जिस डिपार्टमैन्ट में मुलाज़िम है उसके अनेक भक्त लोग स्वामी जी पर बड़ी श्रद्धा रखते हैं। उनके अचानक देहावसान से हम लोगों ने सचमुच अपने एक सत मार्ग प्रदर्शक के अभाव को अनुभव किया। शास्त्रों का वचन है कि सन्तों की विभूतियां लोक कल्याण के लिए हुआ करती हैं। सचमुच ही स्वामी जी महाराज ने लोक कल्याण का जितना काम किया, जनता में भक्ति भावों को जाग्रत किया, भगवद्भक्ति आश्रम की नींव डाल कर पिछले समय के गुरुकुल और ऋषि कुलों का जो आदर्श हमारे सामने रखा उसकी देश के प्रमुख नेताओं ने भूरि भूरि प्रशंसा की इस आश्रम में निम्नलिखित संस्थायें हैं। ब्रह्मचारी आश्रम, विधवा आश्रम, कन्यापाठशाला अछूतपाठशाला, गोशाला, पुस्तकालय, प्रेस इत्यादि यह स्वामी जी के व्यक्तित्व का प्रभाव था कि आश्रम में अनेक धनीमानी लोग समय पर उनके दर्शनों के लिए आया करते थे और अनेकों ने तो अपनी लागत से अच्छे अच्छे मकान आश्रम में बनाये हैं। ब्रह्मचारियों ने अपने रहने के लिए गुफायें बनाई हैं, स्वयं कूप खोदे हैं। यद्यपि यह आश्रम ऐसी भूमि में है जहां नहर का पानी नहीं लगता परन्तु आश्रम के वृक्षों पर दृष्टि डालने से आप कदापि यह न समझ सकेंगे कि यहां नहर का पानी नहीं आता। आश्रम में पशु पक्षी निर्भय हो कर विचरते हैं यह कई लोगों का अनुभव है कि आश्रम में जो मोर आजाते हैं वह लोगों के हाथ पर रखे दाने तक बेखटके चुग लेते हैं, एक हिरन को मैंने स्वयं देखा है कि जब स्वामी जी संध्या समय वायु सेवन के लिये आश्रम में घूमते थे तो वह उनके साथ साथ निर्भय रूप से रहता था और जब स्वामी जी आपने कमरे में चले जाते थे तो वह भी न जाने कहां गायब हो जाता था। कई लोगों ने ऐसा अनुभव भी किया है कि जब वे लोग भोजन करने बैठते थे तो चिड़िया आदि पक्षी उनकी थाली के किनारे पर बैठ कर चुगा ले जाते थे। यह हिरन, मोर, चिड़िया आदि पालतू जानवर नहीं थे। आश्रम में लगे हुए कदम्ब के वृक्ष किसी भी व्यक्ति को आज से पांच सहस्र वर्ष पहले की स्मृति कराने में पूर्ण रूप से समर्थ हैं। कीर्तन, नृत, और बांसुरी बजाने का आश्रम में अच्छा प्रबंध है। सच तो यह है कि स्वामी जी का व्यक्तित्व संसार के लिये अन्धेरे में दीप शिखा के तुल्य था। परन्तु बनना और बिगड़ना संसार का नियम है

और यह अटल है। जब ब्रह्मा भी अपनी आयु पूरी करके एक दिन "नहीं" हो जाते हैं तो और किसी के लिये तो कहना ही क्या है ? परन्तु यह बनना और बिगड़ना शरीर तक ही सीमित है विशेष कर संतो की विभूतियां तो प्रत्येक दशा में संसार को कल्याण मार्ग में अग्रसर होने के लिए सहायक होती रहती हैं। भगवान् की यह विभूति भी जितने समय के लिये शरीर द्वारा संसार के कल्याण का कार्य करने आई थी अपना काम करके चली गई अब हम लोगों का कर्त्तव्य है कि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखते हुए हमें उनकी महान् आत्मा से भी सहायता लेनी चाहिये यदि हम विश्वास रक्खें तो अवश्य ही उनकी महान् आत्मा परोक्ष रूप से हमारे अन्तर मार्ग को स्पष्ट करेगी और हम उनके शरीर से वियोग होते हुए भी उतना ही लाभ उठा सकेंगे।

अन्त में मेरी उनके श्रद्धालु भक्तों से करबद्ध सानुरोध यह प्रार्थना है। कि स्वामी जी ने जिस जिस कार्य को लोक कल्याणार्थ जारी किया था उसको उसी प्रकार चालू रखें।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अब भी स्वामी जी केवल उन कार्यों में ही नहीं अपितु जो लोग पूर्ण दृढता से विश्वास रखेंगे उनके अन्तर मार्ग के गुप्त पथों में निर्गुण रूप से उनकी सहायता करते हुए उनको परम सिद्धि को ले जावेंगे श्री सन्त कबीर जी ने संतों के विषय में क्या ही अच्छा कहा है ?

गुरु को मानुष जो गिनें चरणामृत को पान।
ते नर नरके जायेंगे जनम जनम हों श्वान॥
गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध।
होय दुःखी संसार में आगे यम को फंद॥

श्री महाराज जी कौन थे ?

गायत्री के परमोपासक भक्ति महारानी के दूत,
ज्ञान तथा वैराग्य सिंधु सच्चे भारत माता के पूत।
शान्त, सुशील, सुहृद, सज्जन, श्रीकृष्ण चन्द्र के भक्त अनन्य,
भक्ति, भक्त, भगवन्त एक ही रूप सदा, श्री गुरुवर धन्य!

दुर्गाप्रसाद गुप्त

भक्तों से करा
ामी जी ने जि
ं जारी किया

अब भी स्वा
नहीं अपितु
ंगे उनके अ
रूप से उन
परम सिद्धि
संतों के वि

ामृत को पान।
नम हों ध्यान॥
कहिये अन्य।
यम को फंद॥

दुर्गाप्रसाद गुप्त

वियोगांक–

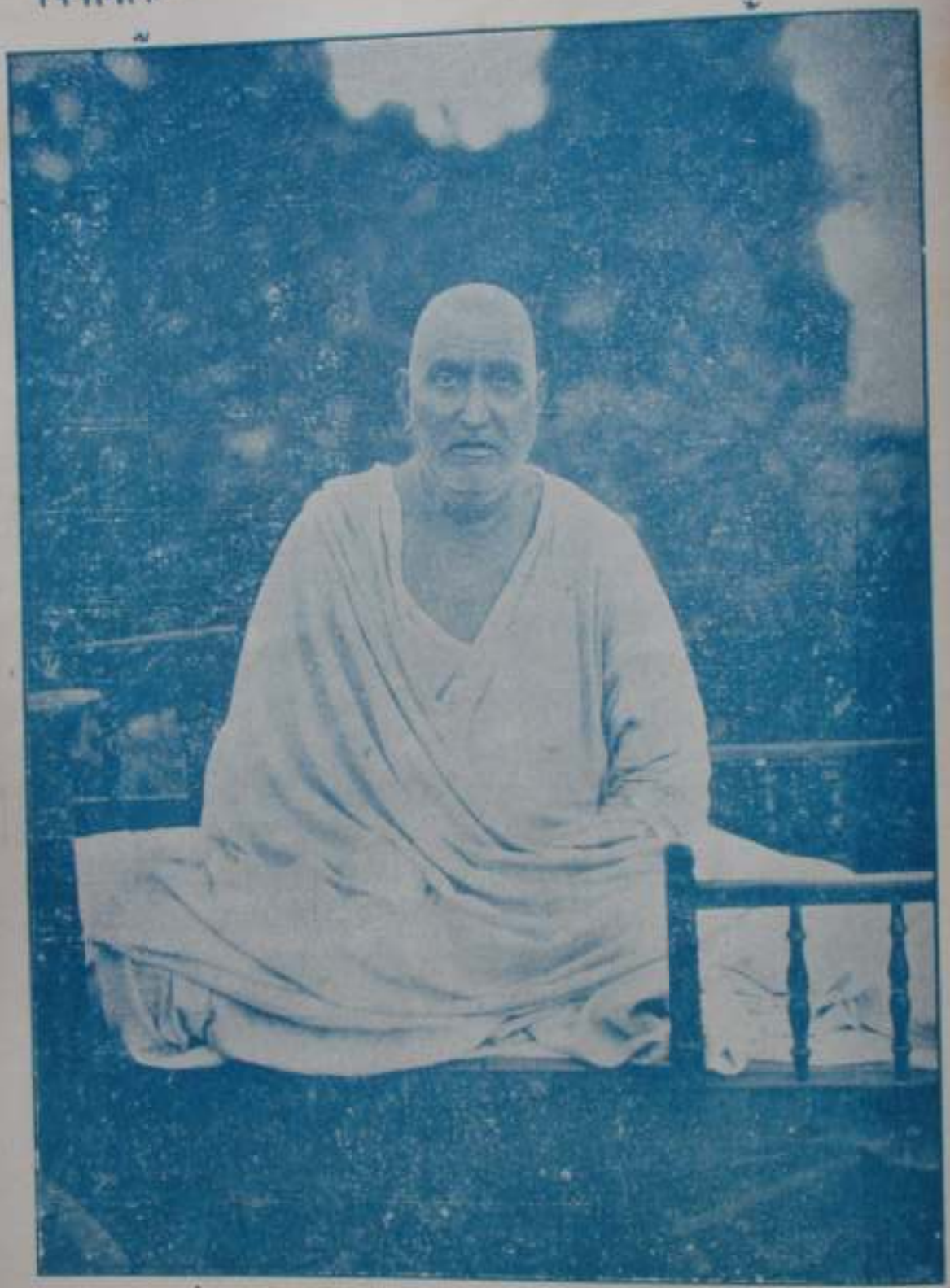

पतितोद्धारक श्री महाराज जी

वन्देऽहं परमानन्दं भावातीतं जगद्गुरुम् ।
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं स्वात्मसंस्थितम् ॥

शोक-पंचक

(१)

श्री भगवद्भक्ति आश्रम पर काली घटा घिरी है आज,
हाय असह्य दुःख की ऐसी कैसी घड़ी फिरी है आज।
कुछ दिन हुए पधारे शिमले हंसते हंसते श्रीमहाराज,
वहाँ महा बाधा की ठानी छोड़ विलखता सभी समाज॥

(२)

भक्त वृन्द "शव" शिमले से आश्रम में सत्वर लाते हैं,
उधर देवगण स्वागत के हित देवलोक से आते हैं।
इधर आश्रम वाले सुनकर हा हा कार मचाते हैं,
अन्तिम-दर्शन को नर नारी दूर दूर से आते हैं॥

(३)

अपना आश्रम छोड़ के स्वामी स्वयं सिधारे अपने धाम,
नहीं जानते वहां कठिन क्या ? कोई अटक रहा था काम।
देखो भक्त वियोग शोक में, रोते हैं हृदयों को थाम,
एक बार ही वज्रपात यह तूने हाय किया क्या राम!

(४)

ओम् ओम् की ध्वनि मनोहर हाय लगायेगा अब कौन ?
गायत्री की विस्तृत व्याख्या हमें सुनायेगा अब कौन ?
उपनिषदों की गूढ़ गुत्थियां, हा ! सुलझायेगा अब कौन ?
श्री मद्भगवद्भक्ति रस की, सुधा बहायेगा अब कौन ?

(५)

हे करुणा वारी केशव ! हम पर ऐसी करुणा कर दो ?
भरदो सेवा भाव हृदय में और हमें भक्ति वर दो ?
श्री स्वामी जी के चरणों में बैठ बैठ जो कथा सुनी ?
रहे गूंजती सदा हमारे कानों में बस वही धुनी ?

दुर्गा प्रसाद गुप्त

शेखावाटी यात्रा

[लेखक—श्री नवल किशोर माथुर आबकारी इन्सपेक्टर]

ता० १५मार्च को रानी सतियों के मंदिर (झुंझुनू) में मेरा अचानक जाना हुवा। उस रोज एक मोर पंख धारी मूर्ति (भगत नन्दकिशोर जी) से मेरा पहली बार परिचय हुवा। उन महापुरुष के द्वारा भगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी का सूक्ष्म परिचय तथा यहां आने का उद्देश मालूम हुवा। आप के द्वारा श्री लेडी चिलिंगडन ब्लाइन्ड रीलीफ् ऐसोसियेशन की देख रेख में तथा भगवद्भक्ति आश्रम के ब्रह्मचारियों तथा संचालकों के तत्वाधान में चक्षु-यज्ञ होने की सूचना मिली।

चक्षु-यज्ञ शुरु होने पर डाक्टर साहबान व आश्रम वासिनी महिलाओं की प्रसंशनीय सेवा तथा भक्ति को देख कर चित्त में आनन्द तथा भक्ती का संचार हुवा और आप लोगों की भक्ति और सेवा का इस कदर दिल पर असर पड़ा कि कि मैंने अपने आपको भी सेवा में शामिल होने में धन्य समझा! डाक्टर साहिबान व आश्रम की महिलायें रोगियों की सेवा में रात दिन एक किये हुवे थे, सेवा के सामने अनेक कष्ट जो कि हम लोगों की असुविधा के कारण हो रहे थे भूले हुवे थे। उनके त्याग तथा सेवा व सेठ मोतीलाल जी झुंझुनू वालों के सात्विक दान के फल स्वरूप जब रोगियों की आंखों की पट्टियां खुल रही थी तो मालुम हुवा कि आश्रम के संस्थापक श्री १०८ श्री महात्मा परमहंस श्री परमानन्द जी महाराज पधारते हैं।

महात्मा जीके दर्शन से पूर्व हृदय में कई भावनाएँ तथा तरंगें उठ रही थीं। मन में एक प्रसन्नता छा रही थी आप का दर्शन होने से पहले जब आप का परिचय मिला था उस कल्पना के आधार पर जो चित्र आप का हमारे हृदय में अंकित हुवा था उससे कई गुना अधिक पाया। यद्यपि मुझे थोड़े समय के लिये ही श्री स्वामी जी महाराज की चरण सेवा का शुभ अवसर मिला था मगर उसी से यह अन्दाजा हुवा कि यह केवल आप के त्याग, तपस्या तथा योगशक्ति का ही प्रसाद था कि झुंझुनू जैसे मरू तथा साधन हीन जगह में इतना बड़ा यज्ञ सानन्द सम्पन्न हुवा। आपके दर्शन से हृदय में एक अपूर्व आनन्द तथा भक्ति उत्पन्न होती थी। आप जैसी महान विभूति जब जब इस भूमंडल पर अवतार लेती हैं तो उनके पीछे एक विशिष्ट तथा महान् उद्देश छिपा रहता है।

अब श्री राव बहादुर साहब बलवीर सिंह जी के पत्र द्वारा उस महान् विभूति का इस संसार में न होना मालूम हुवा तो हृदय को एक गहरी चोट पहुंची और एक बहुत बड़ी कमी का अनुभव हुवा। लेकिन फिर आत्मा को यह कह कर संतोष देना पड़ा कि जिस उद्देश से ऐसे महापुरुष यहां अवतार लेते हैं उसकी पूर्ति होने पर यहां से प्रस्थान कर जाते हैं। भगवत् भक्ति आश्रम जैसी स्मृति जब तक यहां मौजूद है तब तक उनकी मृत्यु नहीं मानी जा सकती। ऐसी महान विभूतियों के जीवन तथा मृत्यु दोनों ही से संसार को महान शिक्षा मिलती है। आशा है आश्रम के संचालक उनकी स्मृति रूप इस आश्रम को उसी प्रकार जारी रखेंगे।

* ॐ *

श्री भगवद्भक्ति आश्रम के उद्देश्य ।

१. श्री भगवान् की भक्ति का प्रचार करना ।
२. गोरक्षा और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना ।
३. जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना ।
४. शिक्षा का प्रचार करना जिसमें मनुष्य मात्र विद्यालाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना ।
५. बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।
६. आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढाना ।
७. सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना ।
८. राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना ।

—

श्री महाराज जी और आश्रम

[ले०—श्री केदारनाथ शास्त्री]

वह परम पिता परमेश्वर संसार के कल्याण के हेतु सब कुछ करता रहता है। जब जब जिस जिस वस्तु की अवश्यकता समझता है तब तब उसको किसी विशेषात्मा के द्वारा उपस्थित कर प्राणियों को अनुगृहीत करता है। चुनाचे आधुनिक काल के प्रारम्भ में जब मनुष्यों का ज्ञान नष्ट होने लगा, वेदों को लोगों ने पढ़ना छोड़ दिया, उनकी मनोवृत्तियां कलुषित हो गईं, पाखंडियों ने अपने पाखंड से स्वार्थ सिद्धि प्रारम्भ कर दी, तो भगवान् ने एक विशेषात्मा को संसार में भेजा, वह महान आत्मा स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रथित हुई। स्वामी जी ने संसार में आकर वेदों का प्रचार किया, पाखंडों का नाश किया और ज्ञान के प्रचार से अज्ञान का नाश किया। इसमें सन्देह नहीं कि उनको इस कार्य के सम्पादन में अपने जीवन में अनेक कष्ट उठाने पड़े परन्तु सत्य की विजय होती है, अतः वे अपने कार्य में सफल हुए और उनका यश इस पृथ्वी पर सर्वदा के लिये अमर हो गया। उन्होंने अनाथालय, विद्यालय, गुरुकुल आदि उत्तमोत्तम संस्थाएं खोल कर भारत का बड़ा उपकार किया और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, तथा संन्यास चारों आश्रमों का क्रमशः पूर्ण विधान किया। जिन आश्रमों में क्रमशः रहता हुआ मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर सकता है। परन्तु स्वामी जी आश्रमों के विधान के अतिरिक्त किसी संस्था के स्थापन में प्रयत्न न कर सके। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक आश्रम में रह कर अपने जीवन को उच्च बनाने का इच्छुक हो।

आज कल के मनुष्यों की प्राथमिक अवस्था ऐसे वायु मंडल में व्यतीत होती है कि वे ब्रह्मचर्य के पश्चात् गृहस्थ में प्रविष्ट हो कर वानप्रस्थ का नाम ही नहीं लेते तथा ईश्वर भक्ति का कोई समय ही नहीं रखते और गृहस्थाश्रम में ही रह कर मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं। वास्तव में यदि ब्रह्मचारी की अवस्था किसी ऐसे वायु मंडल में व्यतीत हो कि जहां वानप्रस्थी और संन्यासियों की संगति हो और ईश्वर की भक्ति की ध्वनि उनके कान में पड़ती रहे, जिससे वह गृहस्थाश्रम में जाने पर उत्तमाश्रमों में जाना न भूलें। ईश्वरोपासना को अपने जीवन का उद्देश्य समझें तो अधिक से अधिक सुधार की आशा हो सकती है। इसी उद्देश्य को सम्मुख रखते हुए भगवान विष्णु ने महर्षि स्वामी दयानन्द के पश्चात् पुनः एक विशेषात्मा को जन्म दिया। विशेषात्मा कहिये अथवा महान आत्मा 'न किमप्यन्तरम्'। अभिप्राय यही है कि उपर्युक्त कार्य की पूर्ति के लिये उस महान आत्मा ने रेवाड़ी नगर के समीप जंगल में एक आश्रम की स्थापना की और उसका नाम रक्खा "श्रीमद्भगवद्भक्ति आश्रम।

मैंने तो जिस दिन प्रथम बार श्री भगवद्भक्ति आश्रम के तथा आश्रमाध्यक्ष श्री महाराज जी

के दर्शन किए मेरी आत्मा में आनन्द का पारावार न रहा। ज्योंही आश्रम में मैं ने प्रवेश किया, आश्रम वासी जन से "ॐ ॐ जय श्री कृष्ण द्वारा कृतार्थ हुआ। आश्रम में उत्तमोत्तम वृक्षों की पंक्तियां देखीं जिनके दर्शन मात्र से सतोगुण की उत्पत्ति होगई, यत्रतत्र कुटीरों में ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थियों के झुंड देखे जो अपने अपने आश्रमानुसार कर्त्तव्य पालन में तत्पर थे। बटुक पाठशालाओं में हिन्दी संस्कृतादि विद्याओं का उपार्जन कर रहे थे। बालिकाएं भी कन्यापाठशाला में शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। वानप्रस्थी वैराग्य का अनुभव कर रहे थे। मैंने आश्रम वासियों के कृत्यों को देख सतोयुग का स्मरण किया। उस समय मेरी आत्मा ने उस शुद्ध स्वरूप सच्चिदानन्द का अनुभव किया। इसके पश्चात् एक आश्रम वासी द्वारा मैं श्री पूज्य श्री महाराज जी के समीप भगवत्प्रेम भवन में पहुंचाया गया। वहां मैंने साक्षात् जाबालि ऋषि को ही विराजमान पाया। भगवद्भक्ति परिपूर्ण भजनों की झड़ी लगी हुई थी। उस समय श्री महाराज जी की विशाल मूर्ति को देख कर मैं आश्चर्यान्वित रह गया। मैंने अपने जीवन में ऐसे दिव्य स्वरूप के दर्शन कभी न किये थे। नाभि पर्यन्त श्वेतश्मश्रु, आजानु बाहुओं तथा विशाल एवं ओजस्वी नेत्रों से यही समझा कि ये मनुष्य रूप में कोई देवता हैं। कुछ देर के लिए मैं भी उस समूह के साथ ही भगवत्प्रेम में प्रलीन हो गया और अपने आपको भूल गया। इसके पश्चात् श्री महाराज जी को साष्टांग अभिवादन करके भवन से बाहर निकला भवन में कोई आता था, कोई जाता था, किसी प्रकार का बन्धन न था। आश्रम के मध्य में मैंने एक बड़ा रमणीक सरोवर देखा जिस में से जल ले जाकर सब आश्रम वासी अपने अपने निवास स्थान पर उसका प्रयोग करते थे। सरोवर पर किसी प्रकार की अशुद्धता बिलकुल न थी जल सर्वथा पवित्र था। आश्रम में बालक बालिकाएं, वृद्ध, वृद्धाएं, युवक, युवतियें, प्रत्येक अवस्था के मानव विचरण करते थे। किसी प्रकार का किसी को भी भय न था। स्वतन्त्रता का सर्वथा स्वराज्य था। वहां पर मैंने गोशाला में बड़ी बड़ी नसल की गौवें भी देखीं बटुक जिनकी सेवा करते थे।

जब आश्रम में जाकर मुझ सांसारिक मनुष्य को भी भगवदानन्द का इतना अनुभव हुआ और मेरे हृदय पर सद् विचारों ने अधिकार कर लिया तो मैंने अनुमान लगाया कि जो आश्रम में रात्रि दिवस निवास करते हैं उनके आनन्दानुभव का क्या ठिकाना है? वास्तव में श्री महाराज जी अपने शुभ कार्य में सफल हुए और उनकी महान् आत्मा ने एक महान् कार्य कर दिया। भगवद्भक्ति के वायु मंडल में रह कर शिक्षा पाते हुए बालक तथा बालिकाएं अपने जीवन को उच्च बनाने में अवश्य सफल होंगे। उस दिवस से लेकर मैं यदा कदा आश्रम तथा श्री महाराज जी के दर्शनों से अपनी आत्मा को पवित्र करता रहा परन्तु यह विदित न था कि श्री महाराज जी जिस कार्य के लिए संसार में आये थे वह उनका कार्य सम्पूर्ण हो चुका है और अब अपने साकार रूप को अदृश्य कर अपने अनुरागी भक्तों को अपने प्रेम में रुलायेंगे। उन्होंने अकस्मात् चोले को छोड़ दिया और अपने धाम में पहुंच अपने कार्य

की पूर्ति का समाचार आ सुनाया। आज हमारे चक्षुओं के सामने महात्मा जी की वह तेजस्विनी मूर्ति नहीं है जिस मूर्ति के दर्शन कर हम अपने आपको सनाथ समझा करते थे, अपने भाग्य को सराहा करते थे। हा! आज हमारे लिए सहसा दुःख के युग ने पलटा खाया। महात्मा जी के वियोग की अग्नि हमें जला रही है। आज उनके वे उपदेश हमारे लिये स्वप्न की सी बात हो गये। क्या करें? कहां जावें? कुछ समझ में नहीं आता हृदय से करुणारस का प्रवाह रोके नहीं रुकता वास्तव में उनकी उस महान् आत्मा ने हम लोगों के ऊपर बड़ी कृपा की है। मुक्ति प्राप्त करने के उत्तमोत्तम प्रकारों का व्याख्यान किया है। ब्रह्मचर्य द्वारा बालक बालिकाओं की शिक्षा प्राप्ति का एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। आज कल के हाईस्कूलों में बच्चों की शिक्षा के साथ साथ उनके आचरण उत्तम बनाने का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं होता। महात्मा जी ने बच्चों के हृदयों में प्राचीन सभ्यता कूट कूट कर भर दी है। आश्रमवासी बालक साधारण जीवन पसन्द करते हैं।

यदि विचार पूर्वक देखा जाय तो श्री महात्मा जी ने कलियुग में ही सतोयुग उपस्थित कर दिखलाया। हम उनका अहसान कभी नहीं भूल सकते और उनके मूर्त शरीर के न होते हुए भी उनको ही अपना संरक्षक समझते हैं और आशा करते हैं कि वे निराकार रूप से ही हमको सन्मार्ग पर चलाते रहें। अपने बच्चों का पूर्ण ध्यान रक्खें तथा स्वयं श्री परम ब्रह्मानन्द सदोह का अनुभव निरन्तर करते रहें।

आश्रमवासी जनों से भी यह प्रार्थना है कि वे महात्मा जी के वियोग को धैर्य धारण कर सहन करें और उनके संचालित कार्य को भली प्रकार इसी उत्साह से संपादन करते रहें और जगत् में इसी प्रकार के अन्य अनेक आश्रम स्थापित करके संसार के वायु मण्डल को शुद्ध बना दें।

श्री महाराज जी की शिक्षायें

[ले०—बा० बैजनाथ खन्ना एम० ए० शिमला]

मुझ को श्रीमद्भगवत् भक्ति आश्रम रामपुरा रिवाड़ी और श्री महाराज जी की महान् आत्मा के देख रेख में आश्रम के काम करने के ढंग को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। परम पूज्य श्री महाराज जी के दर्शनों और उपदेशों के लाभ के साथ साथ आश्रम के साधारण जीवन के निरीक्षण का भी अवसर प्राप्त हुआ। मैं देख कर चकित रह गया कि वह प्राचीन उन्नत तथा गौरववती हिन्दू सभ्यता के चित्रपट पर अंकित होते हुए भी एक विशेष नवीन आधुनिकता अथवा नवयुगता की उषा कालीन झलक दिखला रहा था।

दशहरा के अवसर पर मुझे परम पूज्य श्री

महाराज जी के पवित्र दर्शनों का सुअवसर प्राप्त हुआ। आश्रम के ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणियां उसमें अपने ही ढंग से भाग ले रहे थे। वहां पर भी साधारण गावों और नगरों की तरह राम लीला हो रही थी। परन्तु इस रामलीला में एक अनोखापन था एक नवीनता थी, एक मौलिकता थी, जिसको कि मैं नवयुगी अथवा आधुनिक कहूंगा। वह यह थी कि ब्रह्मचारिणियां श्री तुलसी दास की रामायण में से चौपाई के बाद चौपाई पढती जाती थीं और ब्रह्मचारी उसी का अभिनय दिखलाते जाते थे। हिन्दुओं के लिए इसमें एक शिक्षा थी कि वे अपने धार्मिक त्यौहार किस प्रकार सुधार सके हैं। कोरा तमाशा, कोरा हुड़दंगा, नाचना कूदना इत्यादि, (जैसा कि और सर्वत्र बड़े से बड़े शहरों से लेकर छोटे से छोटे गांवों हुआ करता है) कुछ फ़ायदा नहीं पहुंचा सका। सिवाय इसके कि चंचल लोगों को एक बहाना मिल जाय कि वे इकट्ठा होकर राम लीला मचालें।

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी मुझ को अपने विचारों और दृष्टि कोण में मौलिकता रखता हुआ दिखाई दिया। प्रतीत हुआ कि परम पूज्य श्री महाराज जी हिन्दु धर्म के उन्नतिशील विचार को एक नई लीक (लाइन) पर लेजा रहे हैं जो हर प्रकार से क्रियात्मक (Practical) है। श्री महाराज जी पूर्ण योगी थे परन्तु मनुष्यों के सम्मुख वे एक उच्चतम कर्म योगी का आदर्श रखते थे। इसका मैं निम्नलिखित घटना से साक्षी हूं।

एक बार प्रातःकाल दूसरे अन्य भक्त शिष्यों की भांति मैं भी आश्रम वाटिका में घूमने गया। इस खोज में कि 'गड्डी' (श्री महाराज जी जिस यान में घूमने जाया करते थे वह इस नाम से विख्यात है) कहां है? 'गड्डी' शब्द की रटन लगाता हुआ और जगह २ यह पूछता हुआ कि गड्डी कहां है, वहां पहुंचा और मैंने बहुत भक्ति भाव से उनको शीश झुकाया। उन महर्षि की गड्डी वास्तव में एक अद्भुत यान था। उनके शिष्य, पुरुष तथा देवियां, वहां उपस्थित थे और घास काट रहे थे और बड़ी ही प्रसन्नता से उद्यान के एक पथ को बना रहे थे। गड्डी के सुखदायी सूर्योदय में मैं कुछ देर खड़ा रहा और मुझे अनुभूत हुआ मानो मेरे मन और शरीर में एक बिजली की लहर दौड़ रही है। तत्क्षण जब कि मैं खड़ा हुआ था, एक दम आदेश मिला- हैं! क्या वह आदेश था, वह तो एक कल्याणकारी मन्त्र था, अथवा एक रोचक शिक्षा थी कि जिस की मुझ को बहुत ही आवश्यकता थी और श्री महाराज जी से मुझे प्राप्त हुई-यह थी कि "प्रसाद लो"। मैं चौंक गया और विस्मित होगया। परन्तु एक ही क्षण में बहुत ही सौभाग्य मान कर मैं उस स्थल की ओर बढ़ा कि जिधर श्री महाराज जी का संकेत था और मैंने वही आरम्भ कर दिया कि जिसके लिए मुझे संकेत किया गया था। वह यह था कि मैं घास काटूं। वह प्रसाद यही था। कितनी बड़ी शिक्षा है! वह प्रसाद लड्डू, जलेबी, हलवे, मिठाई का नहीं था वरन उनसे भी मीठा था। वह एक अद्भुत प्रसाद

था। पाठकगण समझ गये होंगे वह प्रसाद कैसा था। परन्तु इस पर एक विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता है जो मैं किसी और अवसर लिखूंगा।

निज धाम गमन

[ले० राव रामचन्द्र जी यादव मेडीकल अफ़सर राजगढ]

श्री स्वामी परमानन्द जी, ईश्वर के प्यारे भक्त थे।
शोक सागर में हमें, तजकर सिधारे जगत से॥
परम था आनन्द उनको, उस प्रभु की भक्ति में।
आयु सारी थी बिताई, उस प्रभु की भक्ति में॥
लोक सेवा भी जिन्होंने, शक्ति भर भरपूर की।
आज उन के शोक में, जनता विकल हो रही॥
जो अनाथों दीन दुखियों, से सदा स्नेह था।
कर दिया जंगल में मंगल, वाटिका उपवन लगा॥
बीज भक्तों का वहां, बोया जिन्होंने प्रेम से।
भक्ति आश्रम छोड़ कर, हा! स्वर्ग वासी वे हुए॥
जगदीश से विनती यही, सब के हृदय को शान्ति हो।
श्री स्वामी जी को शान्ति हो, भक्तों को उनके शान्ति हो॥
उस ऋषि के कर्म अरु गुण, सब के हिरदे में रहें।
धार्मिक विश्वा जो उनके, फूलते फलते रहें॥
ईश भक्ति में सभी, नरतन सफल करते रहें।
उन के ही सदृश लोक सेवा, में भी मन धरते रहें॥

पूज्य श्री महाराज जी

[ले०—श्री मूल नारायणजी मालवीय]

जिस समय मुझे पूज्यपाद १०८ श्री परमानन्द जी महाराज के परमधाम जाने का दुखद समाचार मिला उस समय थोड़ी देर के लिये मैं संज्ञा शून्य सा हो गया था। पूज्य महाराज जी का दर्शन इस वर्ष मुझे अर्धकुम्भी के अवसर पर प्रयाग में हुआ था और केवल प्रयाग में ही आपके चरणों में बैठ कर सतसंग का लाभ प्राप्त हुआ। पूज्य महाराज जी क्या थे और आप में क्या विशेषता थी इसके बतलाने की न तो योग्यता है और न मैं यह बतला सकता हूं कि आप क्या थे? किन्तु इतना तो मैं कह ही सकता हूं कि पूज्य महाराज जी सद्गुरु थे और जो गुण गुरुओं में होने चाहियें वह सब आप में विद्यमान थे साथ ही इसके आप प्रेम की जीवन्त मूर्ति और पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे।

अर्धकुंभी पर आप प्रयाग में कई दिनों तक श्री निरंजन लाल जी भार्गव के बाग में रहे। वहां मुझे, प्रयाग म्युनिसिपल बोर्ड के एग्ज़ीक्यूटिव आफिसर राय बहादुर पं० ब्रज मोहन जी व्यास, व युनिवर्सिटी के प्रोफेसर श्रीपरमानन्द जी और प्रयाग के ख्यात नामा सार्वजनिक कार्य के प्राण पं० मूलचन्द जी इत्यादि गण्यमान सज्जनों के साथ में आपके समीप जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। एक दिन रात्रि को इंजिनियर मि० राबी साहब और दो एक वकील साहबान के साथ पूज्य महाराज जी के चरणों के पास बैठे थे। बड़ी कृपा कर महाराज जी ने उस दिन दो घण्टे के करीब अपने वचनामृत का पान कराया। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और कर्म उपासना का स्रोत उस समय महाराज जी ने अपने मुखारविन्द से ऐसा प्रवाहित किया कि वहां पर बैठी हुई मंडली आनन्द के समुद्र में डूब गई। उसी वक्त यह प्रतीत हुआ कि महाराज जी पूर्ण हैं और हम सबों के पूज्य हैं। महाराज जी मतवाद से परे थे। आप प्राणी मात्र के हितचिंतक थे। जहां आप भक्ति-ज्ञान का उपदेश देते थे वहां आप सेवा धर्म का भी सुन्दर उपदेश दिया करते थे। आप हरिनाम कीर्तन के बड़े प्रेमी थे। ऊपर मैंने जो यह लिखा है कि आप मतवाद से परे थे उसका अभिप्राय यह है कि जहां आप हिन्दू देवताओं का नाम कीर्तन में कहते कहाते थे वहां आप।

अल्ला अकबर अम्बा देवी।
परमानन्द कहैं टेरे सबी॥

इत्यादि ध्वनियों का भी पाठ पढ़ाते थे। मैं मतवादी हूं किन्तु ईश्वर की सत्ता को मैं मंदिर मसजिद और गिर्जे में एक समान देखता हूं। ईश्वर के पास मतवाद नहीं रह सकता। ईश्वर में भिन्नता नहीं है! ईश्वर एक है और वह सब जगह है। मैंने जब महाराज जी का सतसंग पाया तो उससे मुझे बड़ा लाभ हुआ। ईश्वर सम्बन्धी मेरे जो विचार थे वह और दृढ़ होगये।

यद्यपि मुझे सद्गुरु प्राप्त होने का सौभाग्य प्राप्त है किन्तु महाराज जी के सत्संग से जो लाभ मिला वह "अधिकस्य अधिकं फलम्" हुआ।

सेवा धर्म के आप जीवन्त मूर्ति थे। क्यों कि जिस समय आप जीव सेवा का उपदेश देते थे उसका अच्छा प्रभाव पड़ता था। मनोविकार निकल जाता था। आप ही की प्रेरणा से आप के अनन्य भक्त और शिष्य, भक्त नन्दकिशोर जी ने प्रयाग आकर दो सौ के लगभग गरीब अन्धों की आंखें खुलवाईं। उनके भोजन शयन और चश्मों और दवाईयों का प्रबन्ध किया। आश्रम के ब्रह्मचारियों और देवियों ने अन्धों की जो सेवा की वह सेवा धर्म के अनुयायियों को अनुकरणीय है। ब्रह्मचारी और देवियां मृदुभाषी और शान्त हैं। स्वामी कृष्णानन्द जी योग्य साधू हैं। क्या कहें? मुझे तो जो मिले सब सुन्दर ही प्रतीत हुए।

एक दिन की बात तो बिसारने पर भी नहीं बिसरती है। पूज्य महाराज जी और ब्रह्मचारी भूमानन्द जी के साथ कार में बैठ कर मैं प्रयाग नगर के मुख्य स्थानों को दिखलाने चला। वह त्याग मूर्ति स्व० पं० मोतीलाल जी के आनन्द भवन में पहुंचे। महाराज जी ने कार से उतर कर "हर हर महादेव" का घोष किया। उस समय महाराज जी के कण्ठ से निकले हुए नाद की ध्वनि आनन्द भवन को आनन्दित करती हुई चारों ओर गूंज उठी।

महाराज जी के सतसंग की किस किस बात की प्रसंशा करूं सभी अनोखी थीं। एक दिन मैं रात्रि के दस साढ़े दस बजे महर्षि सच्चा बाबा जी और नई गद्दी के कुंवर दिवाकर सिंह और मिस्टर गवी के साथ सत्संग में पहुंचा। मुझे भय था कि कहीं महाराज जी शयन न करते हों किन्तु जब वहां पहुंचा तो दृष्टि उस ओर गई जिधर एक सुन्दर तपस्वी काषाय वस्त्रधारी विराजमान था और उसके तेज से कमरा जगमगा रहा है और वह ऋषि ग्रन्थावलोकन कर रहा था। मैं शून्य रह गया इतनी रात और वृद्ध शरीर अपने कार्य में लगा है। आगन्तुओं के स्वागतार्थ ब्रह्मचारी केशवदेव ने कीर्तन किया। सुन्दर कण्ठ से निकली हुई भाव भरी वाणी ने सभी को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

मुझे थोड़ा गोरक्षा के कार्य से प्रेम है। कुछ करने की चिन्ता किया करता हूं। सन् ३० में मध्य प्रान्त के वकील श्रद्धेय गोरक्षा की मूर्ति स्वर्गीय ब्रज मोहन लाल जी वर्मा (हा! वर्मा जी!!) ने मुझसे स्वामी आत्माराम जी संन्यासी का जिन्होंने भारत वर्ष में गोशालाओं का बड़ा कार्य किया है चित्र मांगा। क्योंकि पूज्य महाराज जी के भगवद्भक्ति आश्रम से निकलने वाली "भक्ति" पत्रिका का "गवांक" निकलने वाला था उसके लिए स्वामी जी को चित्र की आवश्यकता थी। पत्रिका निकली महाराज जी के आश्रम की गोशाला का चित्र देखा तभी से आश्रम की ओर मेरा झुकाव हुआ। बाद में यह सुनने में आया कि पूज्य मालवीय जी भी श्रीमहाराज जी को बड़ी ऊंची दृष्टि से देखते हैं। एक बार पूज्य मालवीय जी भगवद्भक्ति आश्रम गये। वहां की गौशाला देखकर आपने कहा कि आश्रम में, गौपालन न कह कर यह कहें कि गोपूजन होता है

तो ठीक है आश्रम के गौशाले की बात सुन कर महाराज जी के प्रति मेरी श्रद्धा खूब बढ़ी हुई थी। दर्शन की अभिलाषा थी वह प्रयाग में पूरी हुई किन्तु एक हार्दिक कामना रह गई कि महाराज जी के दर्शन उनके आश्रम में करें। सो अभाग्यवश प्राप्त न हुए। महाराज जी मुझे "मूल" मालवीय कहते थे। मैं उस समय अवश्य जड़वत होगया था जब कि यह सुना कि महाराज जी एकाएक अपने स्वरूप को प्राप्त हो गये।

परम पूज्य गुरुदेव की कीर्ति

[ले० कुमारी कैलाश देवी श्रीवास्तव]

श्री परम पूज्य श्री महाराज जी की कृपा से आज हम लोगों (स्त्री समाज) में वही गौरव है जो पोरूष तथा अन्य स्वतन्त्र जातियों में—

आप की कीर्ति का वर्णन अतीव अपार है। केवल हमीं उनका गुण गान नहीं करते बल्कि समस्त संसार उनका गुण गान कर रहा है। आप के दर्शन करने ही से सब पापों का नाश हो जाता था, हृदय का संताप मिट जाता था। आप के उपदेश शान्ति-दायक और शोक का निवार्ण करने वाले थे समस्त लोक उनका भक्त था और आप सब लोक के हितैषी थे।

वह स्थान तथा रज भी भाग्य शाली है जहां आप के पवित्र चरण कमल रक्खे गए और वह प्राणी तथा जीव जन्तु पशु भी धन्य है जिसने प्रेम मूर्ति के दर्शन करे। आप सत्संग गीता तथा रामायण के प्रेमी थे। जिस समय पूर्ण चन्द्रमा की चान्दनी में आप की गाड़ी स्वरगा-रोहण के ऊपर से निकलती थी, उस समय आप की सौम्य मूर्ती के दर्शन करने के लिये चन्द्रदेव हर्ष के मारे किलोल करते हुए सरयू की धारा के समान अपनी जोती में हिलोरें लेते थे। तारागण आप के श्रीमुख को निहार २ कर चान्दनी के आंचल में लज्जा के मारे तथा प्रेम के मारे मुख ढांप लेते थे। उनके मुख ढ़ांपने से भाव यह था कि हे प्रभो यदि चन्द्र देव न निकलेंगे तो क्या हम आप के दर्शनों से रहित रह जाएंगे। तब आप उन्हें निहार कर संतुष्टता का तथा प्रेम रस का आचमन कराते थे।

प्रातःकाल के समय जब सूर्य्य नारायण स्वर्ण समुद्र में से अपनी शोभा को दिव्य जोति की तरह चमत्कार करते हुए निकलते थे उस समय का दृष्य स्वर्ग से भी अधिक रमणीक होता था। वृक्षों में से तथा लताओं में से जब धूप छन २ कर आप के ज्योतिर्मय मुख पर पड़ती थी तो वृक्षों को व पत्तों को इतना कष्ट पहुंचता था कि वह आप की तेज धूप बचाने के लिए इस प्रकार रक्षा करते थे जिस प्रकार सर्प मणी की

रक्षा करता है। जब आप गड्डी में विराजमान होते थे और आप की गड्डी उन भाग्य शाली सड़कों पर से निकलती थी तो घास की शोभा मखमल से भी अधिक मनोहर लगती थी। ओस की बून्दें जो घास के ऊपर होती थी वह कामिनी के शीश-फूल से भी अधिक शोभायमान होती थीं। आप की गड्डी को देख कर वह आप के कमल रूपी चरणों को प्रणाम करने के लिये दौड़ती थीं परन्तु भाग्य वश ज़मीन पर गिर जाती थी, गिर कर वह यही प्रगट करती थी कि हे दीनों की रक्षा करने वाले भगवन् ! आप इसी प्रकार दर्शन देने की कृपा सदैव करते रहें।

आप की सौम्य मूर्ती को देख कर लतायें जो वृक्षों में छिपी होती थीं बाहर निकल कर आप को तरह २ से निहारती थीं और वृक्षलता आदि आप से आप उनके ऊपर पुष्पों की बौछार करते थे। लतायें पत्तों में से निकल २ कर और छिप २ कर तरह २ की अठ खेलियां करती थीं और यही प्रार्थना करती थीं कि हे अनाथों के नाथ, दीनों की रक्षा करने वाले ! आप इसी प्रकार दर्शन देने की कृपा करें और हमारी आपके अन्दर अनन्त भक्ति बढ़े।

आप के दर्शन कर के वृक्षलता आदि आप से आप बिना वायु के झूमने लगते थे उनसे यही सिद्ध होता था कि वह झोके नहीं खा रही हैं बल्कि श्रीपरम पूज्य श्री महाराज जी के कमल रूपी चरणों को झुक २ कर प्रणाम कर रही हैं और आशीर्वाद पाने की बाट जोह रही हैं। आप के दर्शन करके रज बिना वायु के उड़ने लगती थी उससे यह मालूम होता था कि हे दीनबन्धु ! क्या मैं भी आपके कमल रूपी चरणों को चूम सकती हूं ? इस दशा को निहार कर आप अत्यन्त प्रेम के साथ अपने ज्योतीर्मय नेत्रों से देख कर उसे भी भव सागर पार कर दिया करते थे। रास्ते में लगी हुई त्रिवेनियां जो प्यास के मारे व्याकुल हो २ कर मुरझाया करती थीं आप के दर्शन करके एक प्रसन्नता से ऐसी झूमने लगती थी जैसे मत वाला हाथी। आप के साथ २ आश्रम वासी अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक चलते थे उस समय की प्रसन्नता और उस समय का दृश्य इन्द्र की पुरी को भी लज्जित कर रहा था। चारों ओर सघन वृक्षों और लताओं का सुन्दर वन और बीच में विशाल सड़कें ऐसी प्रतीत होती थीं जैसे वर्षा ऋतु में होने के बाद आकाश में इन्द्र धनुष शोभायमान होता है। उन सड़कों पर से चारों ओर जो फल फूल अनेक रंग और अनेक तरह के लगे दिखते थे वह ऐसे मालूम पड़ते थे जैसे किसी कारीगर ने झूमर की लड़ियों पर अनेक रंग को मणी नीलम और लाल जड़ रक्खे हों। पवन के साथ फूलों की मन्द २ सुगन्ध हृदय को अत्यन्त मोहा करती थी।

जिस समय आप की सौम्य मूर्ति के दर्शन करते हुए और सत्संग करते हुए हम सब आश्रम वासी आप की गड्डी के साथ २ चलते थे उस समय गाड़ी विमान से भी अधिक शोभायमान लगती थी। हमें सब को आप के दर्शन मधुर मुसकान तथा अमृत के समान वचन इसी प्रकार पोषते हुए चलते थे जैसे चन्द्रमा अपनी सुन्दर किरणों से कमल के समूह को पोषता है। आप के साथ मीलों का रस्ता भी थोड़ी सी देर में बिना

थकावट के पार हो जाता था। मार्ग में आप के सद् उपदेशों का जो अमृत के समान संन्तुष्ट करने वाले थे आचमन करते हुए ऐसे प्रेम में मग्न हो कर चलते थे कि उस समय यदि मार्ग में कितनी कठिन से कठिन धूप हो या कितने ही भयानक रूप से इन्द्रराज बिना विचारे वर्षा में मग्न हों उन सब को हम आनन्द पूर्वक सह लेतेथे।

जब आप की आज्ञा मट्टी खोदने तथा डले डालने की मिलती थी तो हम सब अपने हृदय में यह विचारा करते थे और डले फैंकते जाते थे कि वह कौन सा बड़े से बड़ा मट्टी का डला है जिसे हम फैंकें। इतना विचार २ कर बड़े से बड़ा डला डालते थे। वोह आप ही का तेज तथा असीम कृपा थी कि जिन डलों को सरकाना भी असम्भव सा मालूम होता था उसे हम फुल के समान आनन्द पूर्वक फैंक देते थे।

आप ही की कृपा तथा सद् उपदेशों से आज हम लोगों ने इस हृदय विदीर्ण दुःख को अत्यन्त धैर्य पूर्वक सहन कर लिया। क्या वह सुख पूर्ण चन्द्रमा की किलोलें करती हुई और तारागणों की छाया करती हुई रात्रियां स्वप्नवत् हो गई। क्या फिर हमारे भाग्य का सूर्य्य उदय न होगा जो परम पूज्य श्री महाराज जी के कमल रूपी चरणों को क्षण २ में निहार कर तृप्त हो और दर्शन करेंगे। क्या फिर हम महाराज जी के सद् उपदेशामृत का आचमन करेंगे? क्या फिर कभी वह दिन होंगे कि पूज्य महाराज जी गड्डी में विराजमान होंगे और हम सब बहिन भाई प्रेम पूर्वक आप की गड्डी के साथ २ तथा आगे पीछे हरि भजन सत्संग करते हुए चलेंगे?

हा! वही रातें वही दिन वही सूर्य चन्द्रमा और अपने २ स्थान पर सरयू गंगा आदि नदियां उसी प्रकार वेग से प्रवाह कर रही हैं परन्तु इस निर्जन वन में मुझे कोई उत्तर नहीं देता।

हैं! यह क्या? मैं इस समय शून्य हृदय से निर्जन प्रान्त में किस से प्रश्न कर रही हूं और किसके उत्तर की प्रतिक्षा कर रही हूं। मेरी अन्तरात्मा कहती है अवश्यमेव यदि मेरा सच्चा और निस्वार्थ प्रेम है तो अवश्य मुझे श्री परम पूज्य महाराज जी के दर्शन मिलेंगे। यह सब क्रीड़ा इस मृत्युलोक में नहीं तो स्वर्ग लोक में अवश्य फिर एक बार, केवल एक बार दुबारा फिर होगी।

तुलसीदास जी के आदेशानुसार हमको धैर्य रखना चाहिए और सच्ची लगन से अपने प्रीतम को भजना चाहिए।

तुलसी दास जी कहते हैं:-

जाका जापर सत्य सनेहू, सो तेही मिले न कुछ सन्देहू।

पहले श्री परम पूज्य महाराज जी एक स्थान में विराजमान थे, परन्तु अब अपने निज रूप में समाने के कारण से सर्वव्यापी भगवान् हो गए। गीता के आदेशानुसार वह सब के हृदय तथा इस लोक परलोक की प्रत्येक वस्तु में बिरामान हो गए हैं। इन्हीं सब उपदेशोंसे और स्वयं श्री परम पूज्य महाराज जी के सत्संग और शिक्षा से हमको धैर्य धर कर उनके उद्देश्यों का पालन करना चाहिए। जैसे भगवद्भक्ति का प्रचार, परोपकार, दीन दुखियों की सहायता, विद्या अध्ययन करना तथा करवाना आदि जो उनकी आज्ञा है वही हमारे लिए परम धर्म है।

श्री भगवद्भक्ति आश्रम

है आश्रम आज जहाँ शुभ सुन्दर, पहिले वहां बड़ा जंगल था ।
कुछ पेड़ निरर्थक से थे उगे, लगता जिनमें न कोई फल था ।
उड़ती थी वहां पर धूल घनी, पथिकों के लिये दुःख का दल था ।
असमय में कभी कभी लूट भी थी, वहाँ क्योंकि लुटेरों का भी बल था ।

(२)

अभी बीस ही वर्ष की बात है वे, महाराज जी आन पधारे यहां ।
लगा आसन, भक्त एकत्र किये सब, ओम् ही ओम् पुकारे यहां ।
जगे भाग तभी इस जंगल के हुए, मंगल कारज सारे यहां ।
फिर तो हरि-भक्ति-सुधा-रस पीने को, आने लगे हरि प्यारे यहां ।

(३)

कई राजा व राव रईस सभी, नर नारि यहां जमा होने लगे ।
महाराज के प्रेम भरे उपदेशों से, ताप हिये का वे खोने लगे ।
परमारथ के हित खोदें तालाब रु मिट्टी सिरों पै ही ढोने लगे ।
अथवा श्री भगवद्भक्ति-सुआश्रम का शुभ बीज थे बोने लगे ।

(४)

बने कूप तालाब तथा हरि मंदिर, सुन्दर भवन सजाये गये ।
उपकार के काम भी हैं जितने "परोपकार" सभी बनाये गये ।
सड़कें बनीं सुन्दर, फूलों फलों के मनोहर वृक्ष लगाये गये ।
विधवा, गऊ रक्षादि शिक्षा प्रचार के कार्य आदर्श दिखाये गये ।

(५)

कहीं गूंजते भृंग उमंग भरे व विहंग मनोरम बोलते हैं ।
लगी पेड़ों की पांतियां मग्न हुये मृग शावक कूदते डोलते हैं ।
ब्रह्मचारी कहीं कहीं पेड़ों तले कुछ ग्रन्थों से रत्नों को रोलते हैं ।
हरि कीर्ति गाते हैं मस्त हुये कहीं भक्ति सुधारस बोलते हैं ।

(६)

कूजता विहंग वृन्द वृक्षों पै आनन्द भरा चलता शीतल मंद मंद वायु मचला ।
कीर्तन हो रहा है कहीं हरि चरित्रों का गूंजता है स्व कहि वेद धुनि का भला ।
ऋषियों के आश्रमों की झलक है आश्रम में हरि की दया से शीघ्र ही तो फूला है फला ।
बालिकायें मिल जुल सींचती हैं पेड़ों को जो देखकर हृदय याद आती है शकुन्तला ।

दुर्गाप्रसाद गुप्त

उच्च कोटि के सन्त

[ले०—श्री आनरेबिल डा० सर गोकुलचंद जी नारंग एम० ए० पी० एच० डी० वज़ीर पंजाब]

कुछ साल हुए लाहौर में मुझको परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, और मैं उनके तेजस्वी दर्शनों तथा उच्च और गहन उपदेशों से बहुत प्रभावित हुआ। दो साल हुए जब मैंने भगवद्भक्ति आश्रम रिवाड़ी देखा तो मुझे प्रसन्नता और आश्चर्य दोनों ही हुए थे वह कितना अनुपम अद्वितीय रमणीक स्थान है। राव बहादुर कप्तान बलवीरसिंह जी ने कई सौ एकड़ भूमी आश्रम के लिये दान दे रक्खी है, और विभिन्न संस्था के मध्यस्थ रखते हुए वह सारा स्थान एक मनोरम स्वर्गीय उद्यान सहित एक पवित्र ऋषि आश्रम प्रतीत होता था। इन सब संस्थाओं का सतसंग भवन, कन्या पाठशाला अछूत पाठशाला, गऊशाला, हिन्दी प्रेस इत्यादि, परम पूज्य श्री महाराज जी ही की विमल प्रेरणा से अस्तित्व प्राप्त है। जिस किसी को भी उनके दर्शनों अथवा सत्संग का लाभ प्राप्त हुआ है। अथवा जिस किसी सौभाग्यशाली को उनके चरण स्पर्श करने का सुअवसर मिला है उससे सिवाय धन्यवाद तथा उनका यशोगान के मैंने और कुछ नहीं सुना। पिछले पांच छः साल से श्री स्वामीजी महाराज शिमला निवासियों पर अत्यंत कृपा करके शिमला पधारा करते थे। और उनकी दिव्य उपस्थिति का लाभ शिमला निवासियों ने इस प्रकार उठाया कि उन्होंने श्री महाराजजी की शरण लेकर और उनके कृपापात्र बन कर शिमले में अपने कल्याणार्थ एक सत्संग सभा बनाई। जिसमें शिमला निवासी एक बड़ी संख्या में एकत्र होकर श्री महाराज जी की अमृत वाणी का श्रवण करके उनके उपदेशों को श्रद्धा भक्ति से अपने हृदय में स्थान देकर अपने को कृत् कृत्य मानते थे।

परम पूज्य श्री महाराजजी को आंखों के दुःख निवारण करने में और उनको फिर दुबारा आंखें दान करने में बड़ी ही रुची थी, और मुझे उस वार्तालाप की बहुत रोचक स्मृति है कि जो लेडी विलिंगडन के साथ उन्होंने की जब कि वे शान्ति कुटी में श्री महाराज जी की पवित्र प्रेरणा से स्थापित "नेत्र दुःख निवारिणी समिति" द्वारा रचित अंधों के दुःख निवारणार्थ मेले में पधारी थीं। श्री महाराज जी के तेजस्वी दर्शनों से तथा उनके गंभीर थोड़े से वचन पुष्पों से जिनकी वर्षा करने की कृपा उस समय उन्होंने श्रीमती जी पर की और जिनको कि श्रीमती जी को मैंने अंग्रेज़ी में अनुवाद करके समझाया। श्रीमती लेडी विलिंगडन बहुत ही प्रभावित हुई। निःसन्देह परम पूज्य श्री महाराज जी एक परम सिद्ध और असाधारण उच्च कोटि के संत थे और मैं यह सुन कर बहुत प्रसन्न हूं कि उनकी पवित्र अमर स्मृति को श्रद्धा और भक्ति से हरी भरी रखने के लिये एक स्मारक चिन्ह बनाने के लिये उद्यम किया जा रहा है।

श्री स्वामीजी में मेरी भावना

[ले०—राव रामचंद्र मेडीकल अफसर राजगढ़]

श्री १०८ स्वामीजी महाराज के स्वर्गवास का मुझे हार्दिक शोक है। वे ईश्वर भक्ति परायण तथा परमार्थी साधु थे। उनके जीवन का अधिक समय लोक सेवा और ईश्वर भक्ति में ही व्यतीत हुआ था। पाठशाला, अनाथालय तथा भक्ति आश्रम आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। उन्होंने रेवाड़ी नगर में ही नहीं बल्कि इस प्रान्त के अन्य स्थानों में भी लोक सेवा के अनेक कार्य किये थे। तथा प्रभु भक्ति का बीज बोया था। श्री स्वामीजी महाराज एक कर्म योगी थे। उनके सतसंग में पहुंचने का मुझे कई बार सुअवसर प्राप्त हुआ था उनकी दिव्य मूर्ति, मधुर वाणी तथा सदुपदेश आज भी मेरे सन्मुख होकर उनका स्मरण दिला रहे हैं। उनके परम-पावन आश्रम सुन्दर वाटिकाओं द्वारा घिरे हुए देखने से प्राचीन आर्यऋषियों के आश्रम की स्मृति आजाती है। पवित्र जीवन का एक मात्र रमणीक स्थान है।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि ऐसे ही कर्मयोगी साधु महात्मा संसार में उत्पन्न करें जिनकी कि इस युग में परम आवश्यका है। तथा उनकी धार्मिक संस्थाओं को सदैव अजर अमर रक्खें ताकि उनके साथ २ श्री स्वमाजी महाराज की विमल कीर्ति ससार में बनी रहे और उनके उद्देश्यों की पूर्त्ति होती रहे।

प्रभावशाली महापुरुष

[ले०—श्री जमनालाल जी बजाज]

१—श्री महाराज जी का एक प्रभावशाली व्यक्तित्व था।

२—श्री महाराज जी ने हमारे सामने निष्काम सेवा व निःस्वार्थ प्रेम का आदर्श रखा।

३—तीव्र मतभेद होते हुए भी श्री महाराज जी के प्रति मेरे आदर व प्रेम के भाव हैं।

४—श्री महाराज जी का जीवन हमें सिखाता है कि उनके आदर्श के अनुसार हम भी जाति पांति के भेद भाव भूलकर त्याग और प्रेम से व्यक्ति मात्र की (जनता जनार्दनकी) सेवा करें।

५—श्री महाराज जी के पीछे अब इस भगवद्भक्ति आश्रम को एक प्रभावशाली सार्वजनिक ट्रस्ट बना दिया जावे। आश्रम किसी भी सज्जन की कोई भी हालत में खानगी जायदाद न बनने पावे। आश्रम द्वारा श्री महाराज जी के सिद्धान्तों के अनुसार सेवा कार्य चलाया जावे।

एक विशेष पुरुष

श्री महाराज जी क्या थे? इसका उत्तर देने के लिए कलम खामोश, बुद्धि ग़ायब और ख़याल भी बहुत पीछे रह जाता है। उनका एक रूप व्यास था अर्थात् वह अनन्त विद्याओं के भण्डार थे। एक रूप से वह महात्मा थे। मेरी सम्मति में वह अवतार थे, वह एक अपार और महान् शक्ति थे कि जिससे परे कोई शक्ति नहीं है। वह इन्सानी जामे में प्रवेश हो कर संसार के उपकार के लिए बहुत जगह फिर २ कर यह ढूंढते रहे कि कोई ऐसी जगह मिले कि जहां से थोड़ा सा फूस इकट्ठा करके और उसमें वह आग की चिंगारी कि जिसको वह लिए फिरते थे डाल दें और उसको जलाने का यत्न करें ताकि वह अग्नि धीरे २ सुलग कर अज्ञान रूपी ईन्धन को जलादे। उन्होंने अग्नि को सुलगा दिया, जला दिया जो कि शनैः शनैः समस्त ब्रह्माण्ड में फैल जायगी और अज्ञान रूपी ईन्धन को भस्म कर डालेगी। यह कहो कि अज्ञान रूपी संसार में एक ज्ञान रूपी बीज बो दिया, उसके पौधे का पालन पोषण स्वयं किया और फिर उसके पालन पोषण का पूरा प्रबन्ध कर गए, जैसा कि एक राई के दाने से लाखों बीज पैदा हो जाते हैं। इसी तरह समय आने पर वह बीज फल देगा।

श्रीमहाराज जी के वियोग की अनुभूति हम किस प्रकार कर रहे हैं इसके विषय में जो शुद्ध और पवित्र आत्मायें हैं या जो ज्ञान की रोशनी में देख रहे हैं वो ऐसा महसूस करते हैं कि जैसे मनुष्य फटे और पुराने चोले को उतार कर फौरन छोड़ देता है इसी तरह से श्री महाराज जी ने भी किया और न इसका हर्ष करना चाहिये और न शोक! लेकिन जो लोग अज्ञानी हैं और जिनका अन्तःकरण शुद्ध नहीं है वो ऐसा महसूस करते हैं कि जैसे कंजूस और कृपण मनुष्य के पास से एक बहुमूल्य रत्न जो उसको बड़ी मेहनत से मिला था चोरी चला जाय।

श्रीमहाराज जी के जीवन और उपदेश से हम क्या शिक्षा लेते हैं। इस विषय में सब को यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि जिस तरह से श्री महाराज जी ने निष्काम तौर पर परोपकार के लिये जो जो कष्ट सहे हमको भी कम से कम निष्काम तौर पर उतने ही कष्ट सहन करने चाहियें और जिस तरह वो हमारे लिये मरे हमें उनके लिये मर जाना चाहिये। और अपने लिये तथा मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये कौनसी बातें करने का प्रयत्न कर सकते हैं इसका जवाब कुछ आगया और बाकी यह है कि जो छोटी सी पुस्तक सदाचार जो उन्होंने अपने अन्तिम समय में बनाई है उस पर स्वयं अमल दरामद करदें और दूसरों को भी अमल दरामद करने के लिये तैयार किया जाय।

अगरचे श्रीमहाराज जी ने अपने ज़बानी विचारों और उद्देश्यों को बहुत दफ़ा प्रकट कर दिया है उन उद्देश्यों और प्रचारों के द्वारा सदाचार के कोठे पर इस तरह चढ़ने लगो जिस तरह मनुष्य सीढ़ी दर सीढ़ी कोठे पर चढ़ता है।

श्री महाराज जी ने भक्ति का बीज आश्रम में बो कर उसका पौदा सब के देखने के लिये खड़ा कर रक्खा है इस पौदे से बीज निकालो और जावजा बखेरने शुरू कर दो।

वर्त्तमान युग जो कलियुग के नाम से पुकारा जाता है ऐसा समझो जैसे एक अन्धेरी रात में एक अन्धेरा घर और श्री महाराज जी को ऐसा समझो जैसे दीपक।

जैसे एक कलियुग रूपी लम्बी रात्रि के पश्चात् पहले कुछ थोड़ा सा प्रकाश होने लगता है और वो बढ़ते २ एक ऐसे सूर्य को ला खड़ा करता है कि जिसको देख कर सब को पता लग जाता है कि सूर्योदय हो गया और अन्धेरे के जाते ही रोशनी हो गई या यह कहो कि कलियुग के पश्चात् सत्युग का दौर आने वाला है, पौ फटनी शुरू हो गई। बिस्तरे छोड़ दो और महान् प्रकाश के दर्शन करने के लिये कमर बान्ध कर तैयार हो जावो।

महात्मा महानन्द आनन्द कन्द

दीनों के रक्षक

[ले० कप्तान राव बहादुर चौ० लालचन्द एम० एल० ए०]

पूज्य श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज के दर्शन करने का मुझे दो तीन बार ही अवसर मिला। प्रथम बार ही उनके दर्शन करके मैंने यह महसूस किया कि श्री महाराज जी को मज़दूरों और गरीबों से बड़ा प्रेम है। उनका समस्त प्रयत्न इस बात के लिए था कि लोग मज़दूरों का मान करना सीखें। उन्होंने बहुत कम समय में रामपुरा आश्रम को कामयाब बनाकर जंगल में मंगल कर दिया। राव बहादुर बलबीर सिंह जी से मेरा परिचय तीस वर्ष से है। उनमें जो परोपकार और ईश्वर भक्ति के भाव मौजूद हैं वह सब श्री महाराज जी के सत्संग का फल है और महाराज जी की सफलता का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनका लगाया हुआ वृक्ष (भगवद्भक्ति आश्रम) मनुष्य मात्र के हितों का साधन है। आशा है उनके अनुयायी इस संस्था को सफल बनाने में कोई कसर न उठा रक्खेंगे।

समाधि

श्री परमानन्द परम योगेश्वर, परम हंसजी स्वर्ग सिधारे।
उनकी महिमा गा २ कर हम जीवन सर्वस्व बलिहारें॥
जै! जै!! जै!!! सतगुरु देव की, नत मस्तक हम आराधें।
जै! जै!! जै!!! गुरुदेव कृपामय तुम्हरी समाधि को हम साधें॥

—व्रज कुमारी

* कुछ महानुभावों के भाव

श्री आनरेबिल बख्शी टेकचन्द एम० ए० जज हाईकोर्ट लाहौर

मुझे यह सुन कर बड़ा दुःख हुआ कि श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज ने ६ जौलाई को शिमले शरीर त्याग दिया। गतवर्ष गरमी के मौसम में कई बार महाराज जी के दर्शन करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्री महाराज जी की पवित्रात्मा और उनके ज्ञान का मेरे चित्त पर बहुत उत्तम प्रभाव पड़ा। ऐसे सन्त बिरले ही होते हैं।

—

श्री ठाकुर धोकल सिंह जी पचेरी (शेखावाटी)

मुझे श्री पूज्य स्वामी जी परमानन्द जी महाराज के स्वर्गवास होने की खबर सुन कर बड़ा दुःख हुआ। प्रारब्ध वश मैंने श्री महाराज जी के दर्शन आश्रम में ही किए थे। कितने तेजस्वी और शान्त स्वरूप महात्मा थे कि उनके एक बार दर्शन करने पर आयु भर उनकी सौम्य मूर्ति हृदय से नहीं निकल सकती। उनका स्थापित किया हुआ आश्रम कितना रमणीक और सुन्दर है कि जिसको एक बार देख कर मनुष्य कभी भूल नहीं सकता।

—

श्री सरदार साहब सरदार अर्जुन सिंह जी,

श्री स्वामी जी महाराज के स्वर्ग वास होने की सूचना पाकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ और मेरे हृदय को बड़ी ठेस पहुंची। यह ऐसी हानि है जिसकी कभी पूर्ती नहीं हो सकती। श्री महाराज जी जैसे सन्तों का इस संसार में कभी ही आना होता है।

—

राय बहादुर पं० ब्रजमोहन जी व्यास एग्जीक्यूटिव अफसर

पूज्य श्री परम हंस जी के स्वर्ग वास का समाचार सुन कर अतीव दुःख हुआ। यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात थी कि उनके अवसान के पूर्व मुझे ऐसे महान पुरुष के दर्शन प्राप्त हो चुके थे। उनके चरणों में मेरा बारम्बार नमस्कार है।

कप्तान मुकंसिंह बजाज बी० एस० सी०, एम० बी० बी० एस०, आई० एम० एस०

परम पूज्य श्री महाराज जी अनन्त शान्ति में विराजमान हैं। वह अपने मिशन को पूर्ण कर चुके हैं। उनके लिए किसी बात की क्या चिन्ता परन्तु उनके शरीर से जुदा हो जाने से हम संसारी पुरुषों के स्वार्थ की जो हानि हुई है उसका हमें दुःख है परन्तु विश्वास वालों के लिए वह सदैव मौजूद हैं।

—

* हमारे पास बहुत सारे सज्जनों व भक्तों की चिट्ठियां आई हैं जिन्होंने सबने अपने अपने हृदय के उच्च भाव व्यक्त किये हैं। परन्तु हमें अत्यन्त शोक है कि उन सब को हम स्थानाभाव के कारण नहीं छाप सके। भगवान् ने चाहा तो फिर कभी छापेंगे।

(सम्पादक)

श्री सीताराम बी० ए० शेशनज़ जज छिंगरूर,

मुझे पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज के शरीर त्याग का समाचार सुन कर बड़ा दुःख और शोक हुआ। श्री स्वामी जी वेदों और शास्त्रों की व्याख्या करने में व्यास भगवान् के तुल्य थे। वह समस्त हिन्दू जाति के शिरोमणी थे। वह अपूर्व विद्वान और महान तपस्वी थे। जो एक बार उनके दर्शन कर लेता था उसका मस्तक सदैव के लिए उनके चरणों में झुक जाता था। उनके आत्मा को जाग्रत करने वाले उपदेश सदैव याद रहेंगे। उन्होंने निस्सन्देह अपने शिष्यों को भक्ति मार्ग पर चलाया और परमात्मा को प्राप्त करने के साधन उन्हें बताए। हम सब एक आदर्श आचार्य और दार्शनिक की संरक्षता से वंचित हो गए हैं। उनका नाम अमर रहेगा परन्तु हमारी हानि की पूर्ती होनी असम्भव है। आश्रम एक महान् पुरुष की दया से वंचित हो गए हैं। ऐसे प्रभावशाली सन्त कहां मिल सकते हैं। शब्दों में शक्ति नहीं जो हमारे दुःखों को प्रगट करने में समर्थ हों। हमारी इस अवस्था का कोई क्या ध्यान कर सकता है? हमारी श्री महाराज जी के चरणों में प्रार्थना है कि वह अपनी जुदाई का दुःख सहने की हमें शक्ति प्रदान करें।

—

सूबेदार दीपचन्द

परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्दजी महाराज के अकाल अन्तरध्यान होने की हृदय विदारिणी सूचना पाकर मुझे एक ऐसा धक्का लगा है कि जिससे जीवन की शान्ति सदैव के लिये भंग होगई। मेरे हृदय में शोक का एक महा सागर उमड़ रहा है और मुझे अत्यन्त बेचैन कर रहा है। ऐसी निःस्सहाय अवस्था में हृदय दहला जाता है कि यह एक ऐसा घाटा हुआ है कि जिस का पूरा होना असम्भव है। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि ब्रह्मस्थ श्री महाराज जी की ज्योतिस्वरूप विश्वात्मा हम सब पर अपनी कृपा और दया, और शांति की वर्षा करती रहे। मुझे विश्वास है कि यहां हमें जगाकर अब श्री महाराज जी दूसरे लोकों का उद्धार कर रहे हैं।

—

श्री राव राजा बहादुर कल्याण सिंह जी,

यह सुनकर कि परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्दजी महाराज ने शरीर त्याग कर दिया, मेरे हृदय पर एक भारी चोट हुई है। वास्तव में श्री महाराज जी की आत्मा उन दिव्य आत्माओं में से थी कि जो इस संसार को सौभाग्य, शांति और सनाथता प्रदान करती हैं, और जो संसार में जीवोद्धार के लिये युग युगान्तर में ही प्रगट होती हैं जैसा कि गीता में कहा है—

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थान मधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

मुझे शोक है कि कारणवश मैं श्री महाराजजी के भण्डारे में सम्मिलित नहीं हो सकता, परन्तु उसके लिये मैं ५१) रुपये का मनिआर्डर भेज रहा हूं।

—

श्रीमान् ज्योती प्रसाद जी,

यह सुन कर कि परम पूज्य श्री महाराज ने अपना पञ्च भौतिक शरीर छोड़ कर हम से

शारीरिक नाता तोड़ दिया और हमें अपने पवित्र दर्शनों से सदैव के लिये वञ्चित कर दिया। मेरे हृदय पर बहुत भारी आघात हुआ क्योंकि ऐसी दिव्य मूर्तियां, ऐसे उच्च कोटि के ब्रह्मर्षि संसार में दुर्लभ हैं और वे धर्मपथ प्रदर्शक ध्रुव से भी बढ़ कर थे। जिस किसी ने भी एक बार भी उनके कल्याणकारी दर्शन कर लिये, मानो उसके भाग्य खुल गये और वह भवसागर पार हो गया। उन की शिक्षाएं, उच्च आदर्श, पवित्र उपदेश सदैव संसार की स्मृति में रहेंगे। हमारा कल्याण इसी में है कि हम उनका अनुकरण करने का दृढ़ संकल्प करलें। अस्तु हरि इच्छा बलवान। मेरी प्रार्थना है कि श्री महाराज जी शक्ति और बल प्रदान करें कि हम इस नुक्सान को सहन कर सकें।

—

श्रीमदन मोहन मेहता एम० ए०, पी० सी० एस०

परम पूज्य श्री स्वामीजी महाराज के असामयिक गमन का शोक समाचार सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मुझे यह नहीं मालुम था कि वे वह इतनी जल्दी समा जांयगे नहीं तो मैं बारंबार उनके दर्शन करता। अभी जब मुझे परम पूज्य श्री महाराज जी के पवित्र दर्शनों का पहिला सुअवसर प्राप्त हुआ था (और जो दुर्भाग्यवश मेरे लिये अन्तिम था) तो मैं स्वप्न में भी यह नहीं विचार सकता था कि अब उनके दर्शन दूसरी बार दुर्लभ और असम्भव हो जावेंगे परन्तु विधाता ने ऐसा ही लिख दिया था।

अब मेरी यही प्रार्थना है कि श्री महाराज जी की ब्रह्मलीन सच्चिदानन्द स्वरूप शान्तिस्वरूप आत्मा हम सब पर शान्ति वर्षा करती रहे और हम सबको शक्ति प्रदान करे कि हम इस कठोर वज्राघात को सह सकें।

—

बख्शी चानणशाह जी एम० ए० इनकम टैक्स अफसर

मुझे अत्यन्त शोक हुआ है कि श्री महाराज जी हमको सदा के लिए छोड़ गए हैं। मुझे किसी प्रकार की भी सूचना नहीं मिली कि वह बीमार हैं, और उनका अन्त इतना नज़दीक है। उनकी आत्मा एक महान आत्मा थी, और इस इलाके में उन्होंने ने बहुत ही ज़बरदस्त समाजिक काम किया। आश्रम की सृष्टि उनसे ही है और आश्रम के उद्देश्यों से उनकी बहुत बड़ाई टपकती है। मेरी इच्छा थी के उनके जाने से पहले उनके दर्शन मैं अवश्य कर लेता।

—

चौ० कंवर सेन जी बी० ए० सीनियर सब जज

परम पूज्य श्री महाराज जी की परलोक गमन की सूचना ने बहुत ही दुःख और अफ़सोस पैदा किया। उनके चले जाने से बड़ा ही नुक़सान हुआ है लेकिन भगवान की इच्छा में किसी का चारा नहीं।

—

श्री डा० उदयसिंह जी पूलिया

परम पूज्य श्री महाराज जी के समा जाने की सूचना से मुझे बहुत शोक हुआ। मुझे बहुत दुःख है कि मैं उनके जाने से पहले दर्शन न कर सका परन्तु मुझे अभी विश्वास है कि जब

मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त होगी तो उनके दर्शन अवश्य प्राप्त होंगे । कृपया उनकी एक तसवीर मेरे पास भेजदें ।

—

श्री कृष्ण जी

परम पूज्य श्री महाराज जी के समा जाने से हमें ही नहीं बल्कि सारी हिन्दु जाति को नुकसान हुआ है। हमें आवश्यकता है कि कोई श्री स्वामी जी जैसी आत्मा हमें पथ प्रदर्शित करे, विशेष कर इन अन्धकार के दिनों में ।

—

राय बहादुर सरदार मुलतानी मलजी सेठ

श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज का समाजाना वास्तव में सारी नेशन (जाति) के लिये एक भारी नुक्सान है ।

—

श्री सेठ शिवरत्न जी मोहता

सत्य तो यह है कि ऐसे महात्मा तो अमर हैं, और हमारा शोक तो केवल इसलिये होता है कि हम उनके उपदेशों से वंचित हो जाते हैं ।

—

श्री महाराजा हेमेन्द्रसेन बहादुर सी एस, आई जुंगा स्टेट

परम पूज्य श्री महाराज जी के समा जाने की सूचना पाकर मुझे बहुत दुःख हुआ है । हम सब के लिये वास्तव में यह एक बहुत भारी नुक्सान है ।

—

श्री श्यामलाल जी बी० ए०, एल एल० बी० वकील

मैंने अत्यन्त दुःख और शोक से सुना कि श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज अपने निज रूप में समा गये । वास्तव में उन के तेज को धारण करने के लिये यह लोक असमर्थ हो गया था । अपने दुःख और शोक में हमें यह समझ कर शान्ति करनी चाहिये कि अब वे स्वयं ही ब्रह्मानन्द स्वरूप हो गये हैं । श्री महाराज जी की जीवनी हमारे लिये एक ऐसी नौका है जो संसार के महासागर को पार करा सकती है ।

—

श्री डाक्टर अमोलक राम जी

परम पूज्य श्री महाराज जी के समा जाने की सूचना ने मेरे हृदय को एक बहुत ही भारी धक्का पहुंचाया । अब केवल यही समझ कर सब्र करना चाहिये कि भगवान् ऐसी महान आत्माओं को बारम्बार संसार में बड़ी बड़ी समस्यायें दूर करने के लिये भेजता है और उन्हें भी फिर भेजेगा कि संसार का उद्धार हो और देश की उन्नति हो ।

—

श्री एम० बी० लिये प्रधान मंत्री इन्दौर

परम पूज्य श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज के निज रूप में समा जाने का शोक समाचार सुन कर मेरे हृदय को एक भारी धक्का पहुंचा । अफ़सोस है कि हमारी इच्छा कि उनका स्वागत करते, अपूर्ण ही रही । मेरा कितना भारी सौभाग्य था कि मैंने पिछले साल उनके दर्शन प्राप्त किये ।

—

सर्दार बहादुर सर्दार सोहनसिंह जी

श्री स्वामी जी महाराज के निजरूप में समाने का शोक समाचार पाकर मुझे यकायक

बहुत दुःख हुवा। मेरे पास शब्द नहीं है कि मैं प्रकट करूं कि यह कितना भारी नुकसान है। मेरे ऊपर उन की असीम कृपा और दया थी कि जिसे मैं कभी न भूलूंगा और सदैव धन्यवाद देता रहूंगा।

—

ला० बालक राम जी (सर गंगाराम जी के सुपुत्र)

मुझे अत्यन्त दुःख हुआ जब मैंने श्री महाराज जी के समा जाने का शोक समाचार सुना। अब उनकी आत्मा ब्रह्म में लीन होगई। ईश्वर करे कि आप को वे सहन शक्ति दें कि इस दुःख को सह सकें।

—

मि० बादशाह इन्जीनियर

यह एक सारे देश के लिये ऐसा नुकसान है कि जो कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। परन्तु हमको चाहिये कि हम उसकी ही इच्छा में अपनी शान्ति और सन्तोष पाएं।

—

खान बहादुर फतेउल्ला खां साहिब एम० ए०
रेवेन्यू एसिस्टेण्ट गुड़गांवा

श्री स्वामी जी के निज रूप में समा जाने का शोक समाचार पाकर मैं अत्यन्त दुखी हूं। वास्तव में यह एक भारी धक्का पहुंचा है। मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैंने गुड़गावें में उनके दर्शन पाए। मुझे मालूम है कि इस ज़िले के लिये वह कितने अमूल्य थे इस ज़िले के लोगों के लिए उनका नुकसान एक भारी नुक़सान है।

—

श्रीराज कुंवर बी. ए., पी. सी. एस

सारे अंग्रेजी पत्र और पत्रिकाओं में यह पढ़ कर कि परम पूज्य श्री महाराज जी अपने निज रूप में समा गए मुझे अत्यन्त शोक हुआ। यह देश के लिए एक बड़ा भारी अध्यात्मिक नुकसान है विशेष कर के भगवत् भक्ति आश्रम को। कृपया उनकी सारी पुस्तकों की सूची जो भगवत् भक्ति आश्रम ने प्रकाशित की हैं मेरे पास भेज देना।

—

श्री सहाब जी महाराज सर आनन्द स्वरूप जी

हिज़ होली नैस श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज के गुज़र जाने के समाचार को सुन कर हम सब बहुत शोकातुर हैं। ऐसे पवित्र उच्च व्यक्ति का चला जाना उनके शिष्यों के ही लिए नहीं बल्कि सारी दुनियां के लिए एक भारी नुक़सान है। मेरा विश्वास है कि गुरु लोग सिद्ध सन्त कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होते बल्कि वह अपना काम करते ही रहते हैं।

—

राव बहादुर चौधरी गंगाराम जी यादव बी. ए. डिप्टीकलक्टर

श्री १०८ स्वामी परमानन्द जी महाराज के परलोक गमन का शोक समाचार पा कर मैं अत्यन्त दुःखी हुआ। उनके इस लोक के चले जाने से जनता को भयंकर अध्यात्मिक नुक़सान पहुंचा है।

—

डाक्टर ज्ञानचन्द बलक प्रान

श्री स्वामी जी के देहान्त को सुन कर मुझे बहुत ही शोक हुआ है। वास्तव में उनके भक्तों के लिये भी एक भारी नुक़सान है। परन्तु श्री महाराज जी ने ब्रह्म लीन हो कर अखण्ड शान्ती प्राप्त की है और यही उनके दृष्टि कोण से सर्वोत्तम

बात थी। यद्यपि हमारा स्वार्थ सदैव यह चाहता है कि वह हमारे मध्य ही रहें।

—

पं० श्री रामजी सरवरिया

श्री महाराज जी में वह सब गुण थे जो ईश्वर में कहे जाते हैं। वह दया के समुद्र, अन्तर्यामी, और सर्व शक्तिमान थे। मैं उन्हें पुरुष रूप में अवतार समझता हूं। श्री महाराज जी ने भगवद्भक्ति आश्रम स्थापित करके हमें जीवन का मार्ग दिखा दिया। ईश्वर पूजा, गुरु पूजा, शिक्षा प्रणाली, स्वस्थ जीवन और ठीक कार्य शैली इस देश में मनुष्यों को सुख पहुंचाने वाले साधन हैं। मैं ईश्वर और गुरु में कोई भेद नहीं समझता। श्री महाराज जी का जीवन मेरा लक्ष और उनके उपदेश मेरे जीवन के आधार हैं। श्री महाराज जी की बनाई हुई पुस्तक 'सदाचार' की लोगों को शिक्षा देना और हर जगह आश्रम स्थापित करना मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए आवश्यक हैं। श्री महाराज जी के उद्देशों को पूर्ण रीति से समझना एक पूर्ण योगी का ही काम है। आश्रम श्री महाराज जी की पवित्र यादगार है। वह वर्तमान युग के विधाता थे उनका बताया हुआ मार्ग सब प्रकार के झगड़ों से रहित संसार का अत्यन्त हित करने वाला है।

—

सरदार बहादुर सरदार बसाखासिंह जी

मुझे श्री महाराज जी के चोला छोड़ने की खबर सुन कर दुःख और आनन्द दोनों हुए। सन्तों के चोला छोड़ने पर शोक किस बात का? वह तो अपने देश में चले गये।

सन्त मुए क्या रोइए, जो अपने दृढ़ जांय।

परन्तु हम संसारी पुरुष अपने सुख के लिए यह इच्छा रखते हैं कि उनके दर्शनों से हमें आनन्द मिलता है और हमारी इच्छाएं पूर्ण होती रहती हैं।

—

चौ० सूरजभानजी इन्स्पेक्टर संगरूर

पूज्य पाद श्री १०८ स्वामी जी महाराज के शरीर त्याग पर अत्यन्त शोक और दुःख हुआ। श्री महाराज जी की हस्ती संसार में बेनज़ीर थी। वह ज्ञान और धर्म्म के भण्डार थे। आप का तप संसार में सब से बढ़ा हुआ था। जिस समय आप का उपदेश होता था मनुष्य के हृदय से सब प्रकार के पाप और लोभ, मोहादि विकार नष्ट हो जाते थे। हम जैसे मनुष्यों को उनका सत्संग कहां नसीब था परन्तु उन्होंने दया करके जीन्द में दर्शन दिए और हमारा उद्धार कर दिया। जीन्द का आश्रम बनवा कर श्री महाराज जी ने इस इलाक़े का बड़ा उपकार किया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्री महाराज जी हमारी अब भी उसी प्रकार सहायता करते रहेंगे।

—

श्री जी० आर० सेठी बी० ए०

शिमला से वापिस आने पर जब मैंने यह सुना कि श्री महाराज जी ने अपना शरीर छोड़ दिया है तो मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि वह अपने आप में समा गए हैं और हम लोगों को मोहवश उनके स्थूल शरीर के अलग हो जाने से दुःख हो रहा है। सत्य बात तो यह है कि वह हर समय हमारे साथ हैं।

मैं तो अपने हृदय में उनकी प्रेम भरी दृष्टि को सदैव स्थापित किए रहूंगा जो उनके दर्शन करने पर उन्होंने मेरी आत्मा पर अंकित कर दी थी। उनके कई बार दर्शन करने से मेरा तो उनसे ऐसा सम्बन्ध हो गया है कि मैं जब चाहूंगा उनके दर्शन कर सकूंगा।

—

श्री प्रोफेसर बृज मोहन लाल बी० ए०

श्री महाराज जी के चोला छोड़ने का समाचार मैंने अत्यन्त शोक और दुःख के साथ सुना। उनकी सेवा में बैठ कर हमारी आत्मा शुद्ध और बलवान हो जाती थी। वह सदैव ब्रह्म में लीन रहते थे और उनके दर्शन मात्र से मनुष्य बलात् परमात्मा की समीपता में चला जाता था। वह स्थूल शरीर से प्रथक् हो गए हैं परन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी अध्यात्मिक उन्नति में वह सदैव हमारी सहायता करते रहेंगे।

—

श्री प्रोफेसर ज्ञानी राम बी० ए०

समाचार पत्रों में श्री पूज्य स्वामी जी महाराज की महायात्रा का समाचार पढ़ कर बहुत खेद हुआ। इस खेद तथा दुःख के वर्णन करने की मुझ में शक्ति नहीं है। स्वामी जी की दिव्य मूर्ति और आकर्षण शक्ति विचित्र थी। जो श्रद्धा मुझको स्वामी जी में थी वह अन्य व्यक्ति में न थी। मुझको जो दुःख इस समाचार से हुआ है उसको मैं ही जानता हूं। मेरी इच्छा थी कि समय आने पर उनकी सेवा से लाभ उठाऊं परन्तु भावी बलवान है। वह एक महान आत्मा थे। उनके दर्शन और भाव मात्र से हमको सुख शान्ति मिलती थी वह रह रह कर हमको याद आया करेंगे।

"हा? गुरुदेव"

[ले०— कुमारी शान्ति देवी "भूषण"]

नमो नमः कारण वामनाय,
नारायणा यामित विक्रमाय।
श्री शार्ङ्ग चक्रासी गदा धराय,
नमोस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय॥

इस संसार की असारता को बार बार धिक्कार है जो एक कल्पनातीत बात को भी सम्भव कर देती है। यह कौन जानता था कि भविष्य की ओट में इतना भारी अनिष्ट छुपा हुआ था। श्री १०८ श्री परम पूज्य महाराज जी हमको निराधार छोड़ कर हाय! कहां गये?

इस संसार में जो श्री सत्गुरु देव ने लीलाएँ मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ रचनी थी वह अल्प समय में रच कर मोह निद्रा में सोये हुये प्राणियों को सोते से जगा सत-पथ पर चलने का एक सरल उपाय बतला, निर्जीवों को जीवन दे, अन्धों को आंखें प्रदान कर, आज कल के मत-मतान्तरों के झूठे झगड़े और पांखड को मिटा सब में ऐक्य भाव का मन्त्र फूंक स्त्रियों को उच्चाधिकार दे, निराश्रयों को आसरा और निराधारों को आधार देकर वे चराचर को प्रेम पाश में बान्ध

कर हा ? जीव मात्र को आर्तनाद करते हुये छोड़ कर ... ... ।

मेरे जन्म से पूर्व ही पिता जी ने श्री पूज्य महाराज जी के दर्शन किये थे और वह अपना समय श्री पूज्य चरणों के सत्संग में ही लगाते थे। शौभाग्य वश मेरे उत्पन्न होने के बाद पूज्य पिता जी आश्रम में ही रहने लग गये और मेरा बाल्य काल श्री १०८ परम पूज्य महाराज जी के चरण कमलों की छत्र छाया में इस भगवद्भक्ति नामक आश्रम की पवित्र भूमी में क्रीड़ा करते हुये व्यतीत हुआ और खेल के द्वारा ही पूज्य महाराज जी मुझ जैसी नट खट लड़की को आन की आन में ही दोहे, चौपाई, भजन, श्लोक आदि कुछ याद करवा देते थे, और तुरन्त ही मुझे याद हो जाता था। अहा ! जब मुझे बचपन की बातें याद आती हैं तो रोमांच हो आता है कि एक समय था कि जब मैं कभी गुरुदेव का याद करवाया हुआ कोई पद सुना देती तो आप इतने प्रफुल्लित होते थे जैसे बच्चे की तुतलाती हुई वाणी को सुन कर माता पिता खुश होते हैं और कुछ न कुछ प्रसाद दिलवाते थे। वैसे तो उनका स्नेह सभी पर था परन्तु मैं समझती थी कि सत्गुरुदेव का कुछ मुझी पर अधिक हार्दिक प्रेम हो। मैं उनके वात्सल्य स्नेह में इतनी मग्न रहती थी कि मुझे माता पिता का कुछ भी ध्यान न रहता था कि वो कहां है और नहीं उन्हें मेरे खाने पीने सोने आदि का खयाल रहता था क्योंकि उनसे ज्यादा श्री महाराज जी ही मेरा ख्याल रखते थे। मैं कभी कुछ थोड़ी सी देर मट्टी या वृक्षों में पानी सींचने में लगी रहती तब आप इतनी हंस मुख से प्रशंसा करते की बात की बात में थकावट दूर हो जाती थी।

अहा कैसा आनन्द का समय था उस समय की बातें हम कैसे भूल सकते हैं ? उस आनन्द का अब वर्णन करना भी असम्भव है मेरी कहां सामर्थ्य कि उनकी कथाओं का वर्णन करूं, कहां मेरी अल्प बुद्धी और छोटी उमर वे पूर्ण ब्रह्म सत्गुरु देव ! जिन बातों का संकल्प इस घोर कलियुग में मुशकिल ही नहीं वरना असम्भव था, उनको श्री पूज्य इष्ट देव ने इस सरल रीति से किया कि सब को आश्चर्यान्वित होना पड़ता है। आपके एक एक शब्द में मनुष्य क्या प्राणी मात्र की भलाई का अंश छुपा हुआ रहता था। जो मनुष्य पूज्य चरणों के दर्शन करलेता अथवा उनके मृत मय उपदेशों को सुन लेता था तो अपने अहोभाग्य समझता और यह समझता कि मैंने मनुष्य जीवन की अनुपम से अनुपम वस्तु पाली। श्री महाराज जी के लिये सब सम थे वह ऊंच, नीच, राजा, रंक, निर्बल, सबल पतित से पतित सभी को ऐसी मीठी वाणी से उपदेश देते थे कि मनुष्य सब तरफ के खयाल छोड़ कर उपदेशों के सुनने में तल्लीन हो जाते थे, जैसे सांप बीन के शब्द पर बांबी से बाहर आ जाता है इसी प्रकार मनुष्य उनका उपदेशामृत सुन कर संसार रूपी बांबी से बाहर निकल आता था, वे आश्रम के आठवें उद्देश्य में भी यही लिखा गये हैं कि राजा प्रजा आदि सब का हित चिन्तन करें, वर्तमान काल में स्त्रियों को ऐसे उच्चाधिकार दे गये जो अभी तक बुद्ध देव, शंकराचार्य आदि आचार्यों ने भी नहीं दिये। और अन्तिम समय में उपदेश भरी वेद पुरान, उपनिषद्, गीता, बाइबिल, कुरान

आदि सब ग्रन्थों का सार निकाल हमारे कल्याणार्थ "सदाचार" नामक पुस्तक लिखवा गये जो हमें संसार रूपी भवसागर से पार उतारने वाली है उसमें भी यही लिख गये कि स्त्री और पुरुष को सब तरह बराबर अधिकार हैं। अछूतों के उद्धार की अनेक बातें की जिससे वो अपनी कौम और सन्तानों को सुयोग्य बना सकें।

अनेक आश्रम खुलवाये जिनमें आकर्षण करने की पूरी शक्ति है।

यहां बालक और बालिकाएं ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर, अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकाश कर, धैर्य से सम्पन्न हो, सहन शील, तपस्वी और पुरुषार्थी बन, विद्या और भिन्न २ कलाओं से अलंकृत हो, अनाथों और दीन दुखियों की सेवा का भाव हृदय में धारण कर, जाति भेद को तिलाञ्जली दे विश्व को अपना आत्मा समझते हुए मनुष्य मात्र की सेवा करने के लिए तय्यार किए जाते हैं।

इन आश्रमों में मयूर-गण नाच २ कर और मृग शावक आदि पशु-पक्षी स्वतन्त्रता से क्रीड़ा करते हुऐ और अपनी रसीली वाणी से आश्रम को शोभा युक्त बनाते हैं। श्री गुरुदेव के ऐसे २ चमत्कृत कार्य को देखते २ आंखें पियासी ही रह जाती हैं उनका कुछ उपदेश यह था कि सब संसार के भोग विलासों को त्याग कर वैराग्य की तरफ रुचि बढ़ाओ जो आंखों से अवगुण और गुण देखने या कानों से सुनने में आवें उनमें से गुणों को ग्रहण करो और अवगुणों का त्याग करदो। इसी प्रकार सब के अहसानों और गुणों को याद रक्खो और दूसरों की बुराई और अवगुणों का त्याग करदो और भगवान से चारों समय प्रार्थना करो कि भगवान् हमको योग्यता प्रदान करें। जो तुम कार्य करो अपने मन के लिये मत करो परमात्मा के मन के लिये करो।

किसी अवतार ने भूमी का भार किसी तरह से दूर किया किसी ने किसी तरह से परन्तु पूज्य श्री १०८ श्री महाराज जी ने शान्त, गम्भीरता और कुछ विचित्र ढंग को लेते हुए पृथ्वी का भार और अधिक दिनों से छाया हुआ तिमिरान्धकार को दूर किया। उनकी शरण में आने पर मनुष्यों के कुविचार इस तरह दूर भाग जाते थे जैसे रवि के निकलते ही रात का अन्धकार।

जपहीं नाम जन आरत भारी।
मिटहीं कुसंकट होई सुखारी॥

उन योगी राज के तेज युक्त चेहरे को देखने से एक दम आंखें झपकती हुई नजर आती थी।

हा हन्त! ऐसे गुण सम्पन्न सर्व गुणों के धाम ऐसे विशाल शरीर धारी जिनके तेज के आगे सूर्य और चन्द्रमा आदि नक्षत्रों को भी अपना मुह भही तरह छुपाना पड़ता था ऐसे योगी राज हाय? क्षण भर में कहां पदार्पण कर गये? ओह! निर्लज्ज मृत्यु क्या! तुझे तनिक मात्र भी भय तथा शर्म न मालूम हुई जो तू अति शीघ्र इन असहाय, दुःख पीड़ित प्राणियों को वियोगाग्नि में जलाते हुये, दिशाओं को घोर चीत्कार करते हुये पशु-पक्षी वृक्ष आदि को रुदन करते हुये इन चर-अचर को बिलखते हुओं से छुड़ा कर अपने परम धाम को सुशोभित करने के लिये ... ... हाय! केवल उनकी स्थापित की हुई चीजें रह गई परन्तु वह

अमर मूर्ती संसार से देखते २ निज रूप में समा गई।

चारों तरफ शोक की घटा उमड़ रही है, ऐसे शोक सागर से तो हम तभी पार हो सकते हैं जब कि उनके अमृत मय उपदेशों को ग्रहण करें।

हे प्रभो तुम्हारी लीला बड़ी ही विचित्र है इस आपदा से आपके बिना हमारा कौन त्राण करेगा। प्रत्यक्ष दिखला कर सारे दुःखों को कौन हरेगा जो कुछ आपने किया वो कभी न भूलेगा। क्या फिर भी कभी ऐसा दृश्य दृष्टी गोचर होगा? हमारा सब का तो भार आप ही पर है सब विधि संसार के साधन भी आप ही हैं।

आपके उपदेश ही इस कलीकाल में कल्पतरु के समान हैं।

तन हो तुम्ही मन हो तुम्ही धन हो तुम्ही इस प्राण का।
इससे अधिक मैं क्या कहूं, तुम प्राण हो संसार का।

हे गुरु देव? अब तो हमारे में ऐसी शक्ति प्रदान करो कि जिससे हम आपके बताये हुये सत-पथ के मार्ग पर चल सकें और उनके अमृत मय उपदेशों को संसार भर में प्रचलित कर सकें और संकट सहते हुये भी शुद्ध हृदयी होकर अपने पथ पर ठहर सकें।

बोलो श्री सत्गुरु देव की जय!

श्री महाराज जी

[ले०—श्रीमती द्रोपदी देवी कुंवर]

श्री १०८ परम पूज्य श्री सत्गुरु जी महाराज पूर्ण ब्रह्म थे, शान्त स्वरूप थे। जब वह बोलते थे तब यह विदित होता था कि मानों अमृत की वर्षा हो रही है। जब वह गद्दी पर घूमने जाते थे तब यह विदित होता था कि सारा आश्रम जग मगा रहा है, समस्त वृक्ष और लता पताएं उनको प्रणाम कर रहे हैं। उस समय आश्रम वासियों के आनन्द का ठिकाना नहीं रहता था। जब श्रीमहाराज जी शिमला से आते थे तो हम लोग बड़ा भारी उत्सव मनाते थे।

श्री महाराज जी पूरे योगी थे। क्या राजा, क्या रानी और क्या बड़े २ अफसर डिप्टी जज आदि हजारों आदमी देश देशान्तरों से आकर उनके चरणों में शिर झुकाते थे और अपना अहोभाग्य समझते थे। ऐसे सन्त संसार में नहीं हैं। उन्होंने हजारों स्त्री पुरुषों का उद्धार किया। नास्तिकों को आस्तिक बनाया। परोपकार के वास्ते ही वह प्रगट हुए थे सो उन्होंने करके दिखा दिया। उन्होंने सब को पूरे तौर पर शिक्षा दी है। ऐसे परम पुरुष पूर्ण सद्गुरु देव की मैं क्या पहचान कर सकती हूं? मैं तो एक तुच्छ बुद्धि और मूढ़ सी हूं। मेरा उन्होंने अपनी अपार दया से कल्याण कर दिया।

हमारे अभाग्य से श्री महाराज जी का हम से

वियोग हो गया। यह वियोग सहने योग्य नहीं था परन्तु न मालूम इसमें उनकी क्या लीला है जो इस शरीर से प्राण नहीं छूटते हैं। श्री महाराज जी ने मनुष्य शरीर धारण किया हुआ था परन्तु उनको मनुष्य समझना भूल है। वह तो स्वयं नारायण थे और अपनी लीला दिखाने के लिए शरीर धारण किए हुए थे। मेरी उनके चरणों में यही प्रार्थना है कि वह हमको अपनी पवित्र भक्ति प्रदान करें और सदैव अपनी याद हमारे चित्त में बनाये रक्खें।

परम हंस जी

[ले० श्री सन्त पूज्य सच्चा बाबाजी गिरनार]

आप का पत्र मिला। परम हंस जी के शरीर परित्याग का समाचार मुझे अखबारों से मिल चुका था। मुझे भी इस समाचार से दुःख हुआ। वास्तविक विचार से यह विषय दुःख करने का नहीं परम हंस जी भगवद्भक्त और सत्पुरुष थे। भगवद्भक्तों तथासत्पुरुषों का नाश कभी हो ही नहीं सकता। कई कार्य्य कारणों से शरीर धारण होता है और फिर यह छूट जाता है। यह निश्चित है कि अगर परमहंस जी चाहते तो वे शरीर रख सकते थे परन्तु इसमें भी कुछ विशेष कारण है जिससे कि उन्होंने शरीर परित्याग कर दिया। जो हो अब आप सब भक्तों को यह समझना चाहिये कि यद्यपि परमहंस जी स्थूल शरीर से आप से अलग हो गये हैं परन्तु वास्तव में वे आप लोगों से अलग नहीं हैं और अपने उपदेश रूप से आप लोगों के हृदय में सदैव निवास कर रहे हैं।

परम हंस जी हमारे परम प्रिय थे, अस्तु, उनकी कीर्ति-रक्षा का मैं सदैव प्रयत्न करूंगा। आप लोग निर्भय हो कर उनके यश का प्रचार कीजिये और उनको नित एवं सत्यमान कर उनका भजन करो। वे आप से बाहर नहीं हैं यह भी कुछ दिन पश्चात् आप लोगों को दृष्टि गोचर होने लगेगा।

आश्रम का जो कुछ कार्य हो उसे पत्र द्वारा आप लोग हमें सूचित करते रहियेगा। मैं भी पत्र द्वारा जो कुछ 'आपके' कार्य में त्रुटि होगी उसे ठीक करता रहूंगा। मैं परमहंस जी के ही समय में एक बार आश्रम आना चाहता था मगर अब तो किसी न किसी समय प्रकृति मुझे वहां आने के लिये अवश्य ही विवश करेगी। उस समय जो कुछ मेरे विचार हैं वह सब आप लोगों को निश्चय करा दूंगा। इस समय आप लोग राव सहाब को प्रधान बना कर जो कार्य्य परमहंस जी के समय में चलता रहा है उसे जारी रखने का पूर्ण रूप से प्रयत्न करें।

खास बात यह है कि मैं परमहंस जी को वर्तमान साधु समाज के लिये 'एक आदर्श एवं अनुकरणीय साधु समझता हूं। आज जो हमारे

साधु सन्तों का घोर पतन दृष्टि गोचर हो रहा है उससे निकलने के लिये साधु मात्र को परम हंस जी के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिये। और भगवद्भक्ति प्रधान कर्म योग में तत्पर हो जाना चाहिये। वह समय दूर नहीं है जब हमारे प्राचीन ऋषि महर्षि पुनः संसार में प्रकट होंगे और सारे समाज को तथा सारी मनुष्य जाति को वैदिक धर्म की मर्यादा में बान्धकर सर्वत्र सुख-शान्ति का राम राज्य प्रकट करेंगे। परम हंस जी समय के इस अवश्यम्भावी परिवर्तन चक्र को जानते थे और इसलिये वे अभी से अपने साधु समाज के संगठन एवं सुधार के कार्य में तत्पर हो गये थे। उनका उठाया हुवा यह संगठन कार्य अब रुक नहीं सकता है और परम हंस जी के समस्त भक्तों तथा प्रेमियों को दूने उत्साह के साथ उनके काम को पूरा करना चाहिये।

परम हंस जी क्या थे! परमहंस जी महाराज सच्चे साधु सत्य के पूर्ण जिज्ञासु सत्पुरुष एवं धर्म के उपासक थे। भगवद्भक्ति रूपी गंगा में उन्होंने गहरा गोता लगाया था। राजा प्रजा तथा जीव मात्र के परम हंस जी पूर्ण शुभचिन्तक थे। परमहंस जी अकर्म और सुकर्म विवेकी, सत्पथ के ज्ञाता और पूजा के लिये एक पथ प्रदर्शक थे। सब से बड़ी बात यह है कि वे परम भगवद्भक्त थे। और भगवद्भक्तों का गुण वर्णन कर ही कौन सकता है।

परमहंस जी ने भक्तों के लिये अकर्म का द्वार बन्द कर सुकर्म का द्वार खोल दिया और भगवत् प्राप्ति के लिये सरल सोपान बना दिया।

परमहंस जी के जो भाव एवं विचार थे यदि वैसे विचार और भाव उनके भक्तों में आजांय तो वे उनके वियोग का शोक न करें। महाराज जी राग-द्वेष, दुख-सुख, रोग-शोक इत्यादि से मुक्त थे और जो लोग महाराज जी के प्रति श्रद्धा रखते हैं उन्हें भी इन्हीं साम्य भावों को अपने में जाग्रत करना चाहिये। परम हंस जी ने अपना जीवन संसार की भलाई के लिये व्यतीत किया और उनके भक्तों का भी परम लक्ष्य यही होना चाहिये कि उनका भी जीवन लोक कल्याण के निमित्त हो।

सच्चिदानन्द स्वरूप

[ले०—श्री महात्मा रामानंदजी]

श्री महाराज जी का शुभ नाम परमानन्द था। राम, कृष्ण, हरि, नारायण, विष्णु आदि को वाणी कथन कर सकती है, परमानन्द की महिमा और दूर तक जाती है यह बुद्धिमानों का विचारणीय विषय है। ओंकार शब्द की व्याख्या नाना रूप से वर्णन की गई है। उनमें से महानारायण उपनिषद् में सत् चित् आनन्द रूप से कहा है। श्रीमहाराज जी ने सर्व व्यापी सब की रक्षा करने वाला बताया

है। यह हमारे सिद्धान्त में सर्वोपरि बहुत शब्दों को दो शब्दों में ही कथन किया है। सत् चित् आनन्द में भी तीन मात्रा ही वर्णन करी हैं। अर्ध मात्रा वा अमात्रा वर्णन से पृथक् रह गई। उन दो शब्दों में वो भी आगई। पवित्र नेत्रों का जो दृश्य है वो एक ही परमानन्द शब्द है और सब शब्दों का अन्तिम है।

जब तक मनुष्य विचारेगा और विचार की बहुत गहराई में पहुंचेगा तब यह देखेगा कि परम ज्ञान, परं शक्ति, परं प्रकाश, परं प्रेम सब का अन्तिम परमानन्द देखेगा उसकी महिमा अवर्न सवर्न ज्योति और कोटि शंख मलकाई अनन्त देखेगा, फिर शिव देखेगा जैसे समुद्र में लहर (तरंग) और अनन्त लहर देख कर शून्य देखेगा फिर महा शून्य स्वरूप होगा, परमानन्द शब्द अनन्त है।

श्री महाराज का जैसा नाम था वैसा ही उनका काम भी था और वोही परमानन्द प्रदान करते थे और पाने वाला कहता है कि इससे अधिक और कुछ नहीं हो सकता ऐसे ही दानी थे, और सद्गुरुओं में भी ऐसे ही थे। सद्गुरु सातवें गुरु का नाम है। उनमें से छटा गुरु वह है जिसने वेदान्त से अपना हृदय पवित्र कर लिया है, हृदय की ज्योति के दर्शन भी हो गये हैं, अगर बीच में हवा चले तो सत्यलोक में जा पहुंचे जहां नाना ज्योति स्वरूप परमहंस है, और काग भुशुन्डि जी हैं ब्रह्मा के कल्प के अन्त में मुच्यते अलख अगम-शिव रूप हो जावेंगे। ऐसे ही शिष्य, एकान्त रहता हो, रागद्वेष की किंचितमात्र भी कथा उसके पास न हो, भिक्षा मांग कर खाता हो, हरि कीर्तन में हर समय लीन हो उसको हृदय कमल में ज्योति के दर्शन हो जाते हैं और हवा न लगे तो गुरु की भान्ति वो भी सत्यलोक में चला जाता है। इस तरह का सत्यलोक में जाने वाला उलटा नहीं आता, और उलटा आना सिद्धान्त से भी नहीं बनता। ये सातवें गुरु सद्गुरु तीन प्रकार के होते हैं एक वो जो गीता की छठी अध्याय के बीसवें श्लोक में आत्मा से आत्मा को आत्मा में दिखाता है। जैसे कोई दीवा जला कर किसी चीज को दिखादे। जैसे कोई किसी को पकड़ कर बगैर गये हुए दिल्ली दिखादे, ऐसा कर देता है जिसके बारे में आगे लिखा है "यं लाभं परम लाभं" इससे कोई बड़ा लाभ नहीं हो सकता। आगे शनैः २ इस हालत को पका, युक्ताहार युक्त व्यवहार और सांख्य में योग युक्त हो, याने गुरु का ओजार हो। वासुदेव सर्वमिति, बताया और सर्व धर्मान परित्यज्य अन्त में बता दिया। सद्गुरु के सामने किताब आदि समस्त ज्ञान छोड़ दिया जाता है। बोह कहें सो करना परं ज्ञान होता है। सद्गुरु की दूसरी अवस्था इससे ऊंची कलायुक्त भृंग का दृष्टान्त है। जैसे कृष्ण ने अर्जुन को विराट रूप दिखलाया और बोह डरा। इसी विषय का नाम है कि भंवरा डंक मार मार कर और डरा डर कर कीड़े को अपने जैसा बनाता है। कोई उससे छुड़ाता है तो उसे छोड़ता नहीं। परमानन्द को प्राप्त कर लेता है यह गीता की १२ वीं अध्याय तक हुई अब चन्दन रूप गुरु का दृष्टान्त सुनिये कि बांस को भी न छोड़ा और महा पापी को भी न छोड़ा। परमानन्द महापतित उद्धारन नाम पाया और हम चरणों में रहने वालों को इतना ऊंचा

दर्शा दिया कि न स्वर्ग न मोक्ष की किंचित् भी इच्छा नहीं। बल्कि यह इच्छा है कि आपके उपदेशों को ईसा, अशोक और सुकरात बन कर दिखलादें और इच्छा क्या रखवाई, कि तुम्हारे सब के द्वारा मेरी इच्छा पूर्ण हो इस तरह हमारे गुप्त पापों को गुप्त रूप से काटा, और महापतित पावन कहलवाया, और निज धाम में निजरूप में बसाया, ऐसा गुरु पुरानी कथाओं में जो इस कोटि के समुद्र हुए हैं ऐसी कथा सुनने में न आई। अनिच्छा में इच्छा का होना, संसार का अत्यन्त उद्धार करना, और चींटियों से पहाड़ों का सरकवाना, ऐसा न 'भूतो न भविष्यति' ऐसा हरिश्चन्द्र का शब्द सौलह आना सत्य नज़र आया, एक के हृदय में नहीं सहस्रों के हृदयों में गीता में भी बताया है "परित्राणाय साधूनां विनाशाय चदुष्कृताम्" से न्यारा 'संबुद्धि विशिष्यते' बतलाया है, यह भी परमानन्द स्वरूप में आता है।

परम दया-दया के विषय में भी यह बात प्रसिद्ध है और इसके जानने वाले भी जिन्दा हैं एक नहीं, हजारों। कटु शब्द के अंगारे बरसाने वाले के ऊपर परं दया चेहरे में चौगुनी रोशनी, आंखों में चौगुना प्रेम, दया चारों तरफ से रोम रोम में से बिजली की तरह निकल रही थी। अन्त में श्रावण की कृष्णा मौन पंचमी को अपने परम धाम को चले गये और इस बात को सिद्ध कर गये कि विदेह मुक्त परमहंस अपनी इच्छा से २७ दिन में शरीर बदल लेते हैं शरीर बदलते समय अन्त में १ भजन नया बनाकर गाया। शरीर की कान्ति ने २७ दिन में किंचित भी फरक नहीं किया। दो दिन पश्चात् श्री महाराज जी का फोटो लिया गया उस समय ऐसा दिखाई देता था कि परमानन्द रूप नींद में सो रहे हैं।

तिमर नाशक

[ले०—श्री भक्त आदि नारायण]

पूज्य श्री महाराज जी इस देश में अन्धकार को मिटाने के लिये सूर्य रूप से अवतरित हुये। इस देश में अज्ञान रूपी अन्धकार छाया हुवा था। श्री महाराज जी सद्गुरु थे सत्य वस्तु को लखाने वाले, सत्योपदेश करने वाले, सत्ता स्फूर्ति देने वाले, प्रेरक, प्रेरणा करने वाले, सद्गुरु ने इस देश पर कृपा की यह भूमि श्मसान भूमि थी यहां से गुजरने वाले भयभीत होते थे। श्री महाराज जी ने इस कंटकमय भूमि को अभय किया। जिनके दर्शन करने के लिये बड़े २ तपस्वी कन्दराओं में व गुफाओं में वर्षों तपस्या करके यह इच्छा किया करते हैं कि हमको सद्गुरु की प्राप्ति हो वह सद्गुरु श्री महाराज जी थे। वह ज्ञान के, ध्यान के, योग के व तप के समुद्र थे। जो भी कोई जिस भावना को लेकर दर्शन करने आया उसको श्री मुख से वैसा ही उपदेश हुवा, श्री महाराज जी अन्तर्यामी थे। वह सब के भावों को जानते थे जो कोई उनकी शरण में आगया उनको वह समान

रूप से देखते थे । जैसे नव प्रसूता गऊ अपने बछड़े से प्रेम करती है। ऐसे ही श्री महाराज जी हम सब से प्रेम रखते थे। जो कोई उनके सन्मुख आगया उसके लिये वे एक समान ही देखते थे चाहे कोई नीच से नीच भी पापी से पापी भी आया परन्तु श्री महाराज जी ने सब के लिये सम दृष्टि रक्खी। यह भूमि श्री महाराज जी के चरणों से पवित्र हुई भूमि है। जिन्होंने भी श्री चरणों की धूली का स्पर्श किया वह बड़ा भागी हुआ। श्री महाराज जी अपने पवित्र शब्दों से यह फर्माया करते थे कि ऋषि महर्षि इस आश्रम भूमि में समाये हुये हैं।

मिट्टी खोदना सब से अच्छा कर्म बताया करते थे । उनका फरमाना था कि पृथ्वी के परमाणुओं में ऋषि मुनियों के परमाणु मिले हुए हैं उनके अच्छे परमाणु तुम्हारे अन्दर प्रवेश करेंगे। वे तुम्हारे अन्तःकरण को शुद्ध करेंगे और तुम भी वैसे ही बन जाओगे। वृक्ष लगाना सब से बड़ा यज्ञ है। यह हवन का काम देता है यह प्राणिमात्र का जीवन है। श्री महाराज जी ने आठ उद्देश्य रक्खें हैं जो कि हरेक मनुष्य के लिये उपयोग में लाने के लिये हैं। उन आठ उद्देश्यों में यह वृक्ष लगाना भी सम्मिलित है। जिसने भी श्री महाराज जी के उपदेश सुने हैं या जो मनन करेंगे वह श्री महाराज जी के चरणों में प्राप्त हो जायगें। श्री महाराज जी की दया से घर २ में महात्माओं की वाणी गाई जा रही हैं । पहिले यहां सत्संग नहीं था ।

अब हम श्री महाराज जी के वियोग की अनुभूति कैसे प्रकट कर सकते हैं। वे साकार से निराकार भी हो गये लेकिन हमारे हृदय में साकार रूप से बैठे हैं और हमें प्रेरणा कर रहे हैं। जैसा भी गीता उपनिषदों में लिखा है उसका मनन करा रहे हैं। श्रीमहाराज जी के पास एक भक्त जिसका नाम डेडा था वह आया और उसने अपने पुत्र की इच्छा प्रकट की उसको कहा कि जा तेरे लड़का हो जायगा तू तालाब की मिट्टी छांटा कर। उसने ऐसा ही किया और उसका कार्य सिद्ध हो गया। जब से श्री महाराज जी के चरण फिरे तो खारी पानी मीठा पानीके रूप में हो गया। ऐसीर बहुत घटनायें हैं कि जिनका उल्लेख करने से विस्तार हो जाता है। अब अन्त में हमारी यही प्रार्थना है कि वे अपनी अनन्त दया से हमारी प्रीति अपने चरणों में बनाए रक्खें।

पूज्य गुरुदेव

[ले० श्रीमती गोदावरी देवी]

इस संसार सागर से पार उतारने वाले, सत्पथ प्रदर्शक, वेद शास्त्र के ज्ञाता, श्रीसद्गुरु हमारे मंद भाग से नश्वर शरीर को छोड़ अपने भक्तों और प्रेमियों को वियोगाग्नि में डाल अपने रूप में समा गये। उनकी महिमा का कथन मेरी तुच्छ बुद्धि में असम्भव है। उन्होंने इस भूतल पर अवतरित हो कर

स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, देश, लोक तथा जनता को सुधा रूपी सदुपदेश तथा शिक्षा आदि परोपकार के अनेक कार्य किये हैं। जिस नीरस ऊजड़ भूमि में कुछ भी नहीं था उसको इतना भव्य रूप दिया क्या यह एक विशेष कार्य नहीं? वे प्रत्येक प्राणी के लिये, चाहे वह छोटा हो बड़ा हो ऊंच हो या नीच हो सब के लिये कृपा दृष्टि रखते थे। जिस किसी ने भी एक बार उस दिव्य शरीर के दर्शन किये वे सब यही कहते हैं वे दिल को आकर्षित करने वाले, मन के भावों को सर्वथा जानने वाले, शक्ति-सम्पन्न और निर्लेप थे। जब कभी वे उपदेश सुनाते थे तो कई घण्टों तक उनकी अमृत-वर्षा का पान भक्त वृन्द करते थे और उनको किसी प्रकार की थकावट नहीं प्रतीत होती थी। जैसे रात्रि में शशि वृक्ष-समूह पर अपनी अमूल्य सुधा बरसाता है उसी प्रकार श्री पूज्य गुरुदेव भी अपने स्नेह-सिक्त वचनों से अपने भक्त-वृन्द पर अमृत की अवारित वर्षा किया करते थे। वे दुःखों को दूर करने वाले अज्ञान को हटाने वाले हृदय को चमत्कृत करने वाले थे।

अछूतों की शिक्षा और उन्नति के लिये उन्होंने आदर्श कार्य कर दिखाया है। संसार में सब से अधिक स्त्री जाति गिरी हुई मानी जाती है परन्तु श्री महाराज जी ने उन्हीं को सर्व प्रथम उन्नति का मार्ग दिखा कर सुशिक्षिता बनाया तथा उन्होंने उपदेशों में तथा व्यवहार में समानाधिकार दे दिया है और दुनिया को दिखला गये कि स्त्रियें भी पुरुषों की भांति सब कार्य कर सकती हैं। इसके स्मरणार्थ 'गौरीशंकर सीताराम राधेश्याम श्यामाश्याम' का उदाहरण श्री पूज्य महाराज जी अपनी स्वरचित पुस्तक सदाचार में दे गये हैं। इसमें पहिले शक्ति का नाम है फिर पुरुष का इसी भांति पहिले स्त्री का मान और फिर पुरुष का। स्त्रियों की उन्नति ही देश की उन्नति का मूल मन्त्र है। वही मूल मन्त्र भारत को श्री महाराज जी दे गये हैं।

अतः अब भावी युग भी श्री गुरुदेव जी की कृपा दृष्टि से फली भूत, पल्लवित एवं शक्तियुत होगा।

पूर्णब्रह्म श्री महाराज जी

[ले० श्री महात्मा शंकरदेव जी]

श्री १०८ परम पूज्य महाराज जी क्या थे यह तो वोही जाने कि वह क्या थे ?

क्योंकि नेति नेति कहि वेद पुकारे।
ताहि मन्द मति कहि उचारे॥

तो भी कहे बिना कोई रहा भी नहीं। उनके अन्दर सारे गुण विद्यमान थे इस वास्ते वह सगुण ब्रह्म थे और क्योंकि वह गुणातीत थे इस वास्ते निर्गुण ब्रह्म के दर्शन थे। इसका सरल सा प्रमाण यह है कि जिस प्रकार साकार रूप से भक्तों पर कृपा किया करते थे उसी प्रकार से अब ध्यान

मात्र से निराकार रूप से कृपा करते रहते हैं और जो भी कोई इन चरणों का भरोसा करता है उसकी सारी कामना पूरी होती हैं ।

श्री १०८ महाराज जी ने हमारे लिये क्या किया ? जो कुछ भगवान् राम, कृष्ण, बुद्ध व ईसा ने अपने भक्तों के लिये किया है वह सब किया । रेवाड़ी जैसा गिरे हुवे प्रान्त के निवासी हम महा मलीन बुद्धि वाले लोगों के लिये इससे अधिक करने को इस समय और था ही क्या ? श्री १०८ महाराज जी के प्रति हमारे क्या भाव हैं यह भी लिख देना आवश्यक है । मत मतान्तरों की और स्वार्थ की प्रचण्ड अग्नि से झुलसे हुये अपने भक्तों के हृदयों पर अमृत की वर्षा करके दर्शन दे के कर्म योग में प्रवृत्त हो के सरल मार्ग बता और दिखा कर अपने परम पद में जो आनन्द का बीच है हमेशा के लिये हमको विलीन करने के लिये न मालूम कहां से स्वेच्छा से चले आये थे । और अब स्व इच्छा से सब के हृदयों और विशेष करके आश्रमों के बनों में छुप गये हैं । जो खोजेगा वह पावेगा ऐसा मेरा भाव है ।

श्री १०८ महाराज जी की वियोग की अनुभूति हम कैसे करते हैं यह भी लिखना जरूरी है । है । जैसे भगवान् राम कृष्णादि अपने रूप में समाये थे और उनके सहवासी व्याकुल हो उठे थे उसी प्रकार हम भी व्याकुल हैं और जिस प्रकार उनके दिखाए हुये मार्ग से उनके भक्तों ने उनको पा ही लिया ठीक इसी प्रकार हम भी जिस वक्त उनके बनाये और दिखाए हुये मार्ग का अनुसरण करते हैं तो हर जगह उन्हें देखते हैं और परम भक्त लछमन ने तो एक ऐसी निराली भक्ति निकाली है कि श्री १०८ महाराज जी का वियोग का अनुभव बहुत ही कम होता है इसका प्रत्यक्ष श्री १०८ महाराज जी की सवारी तथा भक्त लछमन के साथ रहके कर सकते हैं ऐसी में वियोग की अनुभूति करता हूं ।

श्री १०८ महाराज जी के जीवन और उप देशों से हम क्या शिक्षा लेते हैं ? संसार भर में आश्रम बनाते बनवाते, सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करते कराते, सदाचार नामक पुस्तक पर चलते चलाते, ऋषि मुनियों की तरह आश्रमों की सेवा और उनके उद्देश्यों का आचरण करते कराते महानन्द परम पद परमानन्द का लाभ करना और कराना बस उनके जीवन और उपदेशों से मुझे तो यही शिक्षा मिली है ।

जो आश्रम और श्री १०८ महाराज जी को एक मानता है वही जानता है और जो दो मानता है वह नहीं जानता ऐसा मैं श्री १०८ महाराज जी और आश्रम का सम्बन्ध समझता हूं ।

श्री १०८ महाराज जी और वर्तमान युग । जब महाराज जी रामपुरे में पधारे थे और आश्रम का जन्म दिन शरद की पूर्णिमा को निश्चित किया था यह प्रान्त बिलकुल गिरा हुवा था । आज वही प्रान्त दावे से कह सकता है कि हमारे जैसे भाग्यशाली कोई नहीं है जो कि महाराज जी ने हम पर कृपा करके आश्रम जैसी संस्था बनादी है जिसके नमूने की संसार भर में कोई भी संस्था नहीं है । इसका अनुभव पाठक और श्रोता स्वयं देख के और रहके कर सकते हैं ज्यादा क्या लिखूं । श्री १०८ महाराज जी की महानता जब याद आती है तो

कलम रुक जाती है और उस महानता की धारा में वह जाता हूं और देखता हूं कि मैं तो क्या सारी प्रकृति भी यदि उनकी महिमा का वर्णन करना चाहे तो नहीं कर सकती इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

सब धरती कागज करूं लेखनी सब बन राय।
सात सिन्धु की मसि करूं श्रीगुरुगुण लिखा न जाय॥

श्री महाराज जी कहां गए ?

[ले० श्री प्रेमनाथ डुकराल बी० ए०, एल एल० बी०]

श्री महाराज जी क्या थे और कहां गए? यदि कोई यह पूछे कि परमात्मा क्या है और कहां है तो उत्तर इतना कठिन नहीं होगा जितना कि इस प्रश्न का उत्तर कठिन है। श्री महाराज जी एक ऊंचे डील डौल वाले मनुष्य थे। हां लोगों की आखों में "एक मनुष्य" ही थे परन्तु इससे श्रीमहाराज जी बाबत क्या पता लगता है? उन की चमकती हुई आखों में, दिव्य ज्योति में, और उनके मुसकराते हुये चेहरे में क्या था? इस प्रश्न को जानने की जितनी इच्छा मन में इस समय है यदि यह इच्छा पहले होती तो अवश्य ही इस जीवन का कुछ उद्धार हो जाता। यह जीवन क्या है? जीवनादर्श श्री महाराज जी क्या थे? और श्री महाराज जी क्यों हमारे पास से चले गये? अब यह बातें कहां से पूछें? और सत्य बात तो यह है कि लाख किसी से पूछें परन्तु बतला कौन सकता है? हां इन सब बातों का उत्तर श्री महाराज जी दे सकते थे। हा शोक! उस समय इन बातों को पूछने का भी ज्ञान न था। श्री महाराज जी के सामने हम बच्चों के समान थे और बच्चों के समान ही वह हम को खिलाते थे। हाय! क्या पता था कि वह हम को इस प्रकार निर्बोध छोड़ कर चले जांयगे और हमें सिवाय रोने के और कोई सांत्वना नहीं रहेगी। श्रीमहाराज में क्यों इतनी दया और क्यों इतना प्रेम था? क्या वह सब कुछ अपनी निठुरता दिखलाने के लिये ही था? परन्तु श्री महाराज जी को आश्रम तो बहुत प्रिय था। फिर वह क्यों चले गये? श्री महाराज जी 'जीव' को अमर बताया करते थे। फिर वह कैसे चले गये! अरे किसी में कुछ ज्ञान बाकी है तो बताओ श्री महाराज जी कहां चले गये और वह फिर कब आवेंगे? अच्छा भाई हमारा ही दोष सही पर आश्रम को तो श्री महाराज जी ने बड़े प्रेम से पाल पोस कर रक्षा की थी, इस बेचारे का क्या दोष था कि महाराज जी इतने निर्मोही हो कर चले गये? फल फूल वृक्षादि तो निर्दोष थे उनको किस के सहारे छोड़ गये है? हां, हलराम आदि गद्दी से आश्रम की रक्षा का प्रयत्न करते हैं क्या अब भी श्रीमहाराज जी गद्दी पर सूक्ष्म रूप से विराजमान हैं और हम को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश कर रहे हैं?

श्री महाराजजी का महात्म्य हमने नहीं जाना और हम जानने के योग्य भी न थे और अब तो यह खयाल मजबूत होता जारहा है कि पूरे तौर से उनका महात्म्य कोई जान भी नहीं सकता। क्यों कि उनको जानने का अर्थ है उनके बराबर ज्ञान प्राप्त करना और यह प्रायः असम्भव ही है। वह विलक्षण थे केवल यही हमने कुछ समझा है। उनका आना एक रहस्य था और उनका जाना भी रहस्य है। जिन कामों या जिन मनुष्यों से वह अत्यन्त प्रेम करते थे चलते समय उन्होंने उनकी तरफ आंख भर कर भी नहीं देखा, उनका नाम लेना भी छोड़ दिया। वह इस संसार के कामों में ऐसे ही नियम से लगे रहते थे जैसे सूर्य और चान्द परन्तु उनका लगाव केवल कमल की भान्ति था। इतना भर उन्होंने जाते समय हमको दिखाया। माया का परदा कितना सूक्ष्म है इसकी कुछ झलक उन्होंने चलते समय दिखाई। अहंकार का परदा कितना काला और मोटा है यह भी नाम मात्र को कुछ दिखा गए। बिना मतलब भी प्रेम होता है यह वह हमको करके बता गए। वह क्या थे यह तो वही जानें हां इतना हमें विश्वास वह करा गए कि हम सदैव उसके साथ हैं जो हमको साथ रखने की सच्ची इच्छा रखता है। यदि शुद्ध भाव से हम उनकी प्रार्थना करते रहेंगे तो जितना हमको जानने की जरूरत है उतना वह हमको बता देंगे और फिर हम लोगों से यह कह सकेंगे कि वह क्या थे?

मेरे इष्टदेव की पवित्र स्मृति

[ले० कुमारी सूरजदेवी प्रभाकर]

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च।
योगीन्द्राणां च योगीन्द्रः गुरुणां गुरवे नमः॥

अनेक युग बीत गये, अनेक अवतारों का अवतरण हुआ, नाना ऋषि, मुनि, सिद्ध, तपस्वी और महात्मा हो चुके हैं और आगे भी होंगे। इसी प्रकार वर्तमान कलियुग में भी अवतार का अवतरण हुआ। मैं नहीं कह सकती कि उन्होंने अपनी अनिर्वचनीय प्रकृति की अद्भुत रचना में क्या २ खेल खेले?

भगवान् के नामों में महत् अर्थ वाला नाम "श्री परमानन्द जी" मेरे पूज्य और परम इष्टदेव श्री गुरुदेव का था परन्तु मैं तथा और सब उनको महाराज जी कह कर याद करते और बोलते थे अतः मुझे श्री महाराजजी ही नाम जो हृदय में एक प्रकार की स्मृति वेदना देने वाला है अत्यन्त प्यारा है। श्री महाराज जी के शुभ जन्म से अन्त तक कोई एक मनुष्य उनके साथ सर्वदा नहीं रहा अतः कौन उनके सम्पूर्ण जीवन की पवित्र, मनोहर और आनन्द दायक गाथा गाकर आज जो उनकी पतितोद्धारिणी महान् महिमा को सुनने के उत्सुक हैं उनकी प्यास शान्त करे। हा! आज बड़े दुःख के साथ यह लिखा जाता है कि वे अपनी नर लीला समाप्त कर, अपने अचल और निराकार रूप में

प्रस्थान कर गये। हा! आज सहसा यह मुंह से निकलता है प्रभोः—

जितना हमारे चित्त को आनन्द था तुमने दिया।
हा! अधिक उससे भी उसे अब शोक से व्याकुल किया।

ओह! आज हृदय में बड़ी वेदना होती है जब कि मैं अपने इष्टदेव श्री पूज्य महाराजजी के लिये भूतकाल की क्रिया का प्रयोग करती हूं साथ उनसे प्रार्थना करती हूं कि उनकी स्मृति मुझे अन्त समय तक बनी रहे। उन्होंने मेरे लिये क्या संसार के लिये जो कुछ चाहिये था वह सब किया। उन्होंने सिर्फ उपदेश देकर ही नहीं समझाया किन्तु अपने सदाचरणों से कार्य्य रूप में लाकर दिखलाया। उनकी दयालुता का जितना मेरा दिल आभारी है उतना मैं वर्णन नहीं कर सकती हूं। आह! वे साक्षात् दया और प्रेम की मूर्ति थे। उनकी दयालुता का ख्याल आते ही हृदय गद्गद् हो जाता है और दिल भर आता है। कोई उपदेश और कोई आदर्श कार्य उन्होंने बिना कहे और बिना किये नहीं छोड़ा। चारों वर्ण चारों आश्रम, राजनीति, धर्म, साधारण नीति न्याय, योग, परोपकार, मोक्ष और सद् व्यवहार निष्काम कर्म, सकाम कर्म वर्तमान युग तथा भावी युग के लिये उन्होंने अपना उपदेशामृत दिया। परोपकार और कष्ट में क्या करना चाहिये आदि करके दिखा दिया। 'सदाचार' नाम का वेद रच गये जो चारों युग के उद्धार और खास करके कलियुग के प्राणी जो देववाणी से अनभिज्ञ तथा अरुचि रखने वाले हैं उनके लिये रचा है मेरे पूज्य श्री सद्गुरु देव ने भगवान की प्राप्ति, मोक्ष के साधन की कठिनाई और देरी को दूर करके ऐसे सरल साधन बताये हैं जिनके मुमुक्षु जन हार्दिक आभारी है। इस समय वेदों का पढ़ना और समझना बड़ा मुश्किल है अतः भगवद् प्राप्ति का साधन भी जानना अतिः दुर्लभ था। मैं क्या कहूं उनके भक्त और मुमुक्षु जन ही जानते हैं कि मोक्ष का मार्ग कितना सरल कर गये हैं। मैं तो सिर्फ इस इस दोहे के सहारे ही प्रसन्न हूं।

भक्त वत्सल तब नाम सुन तव मन बड़ो उछाह।
सुनो पतित पावन बिरद हर्ष न हृदय समाय॥

"सदाचार" पवित्र पुस्तक में १७५ वां उपदेश है "हार्दिक उपकार से बढ़कर कोई चीज नहीं" इसको पढ़कर चित्त बल्लियों उछला, क्यों कि मैं उनके उपकार का प्रत्युपकार तो क्या कर सकती हूं हां उनके उपकार को मान लेना ही और उनके उपकारों की पवित्र गाथा गाना ही सब के प्रति 'हार्दिक उपकार' करना है।

"श्री भगवद्भक्ति आश्रम" उन्होंने किस जगह और कैसे वातावरण में रचा है। इसकी यथार्थ महत्वता तो संसार स्वयं आगे जानेगा और मुक्त कण्ठ से उनके उपकार की गाथा वेद मन्त्रों की भांति गावेगा। उनका उपदेश है "निर्बलों को सहायता दो और उनके ही रक्षक बनो' इस जगह जहां कि आश्रम है यहां की स्त्रियों और अछूतों का उद्धार किया। प्राचीन समय में स्त्रियों को गायत्री मन्त्र और संन्यास आश्रम में जाने का अधिकार ही नहीं था। आहा! यह अधिकार उन्होंने बड़े प्रेम और दावे के साथ हमको-जिनको दुनियां अयोग्य और अनधिकारिणी कहती थी। दिया। स्त्री जाति की वे उठा गये। इस महति दया के लिये स्त्री समाज अत्यन्त आभारी हैं, उनमें एक

मैं भी हूं। मेरे दिल से पूछो यह उनकी दया और कृपा का कितना अहसान है। आज यदि सारे देवी और देवता उनकी महिमा गावें और उनकी दया को कृतज्ञता के रूप में प्रकट करें तो भी मैं कहूंगी यह न्यून है फिर भला मैं कैसे वर्णन कर सकती हूं।

उन्होंने यद्यपि उपदेश सब प्रकार का दिया परन्तु निष्काम परोपकार" पर सब से अधिक जोर दिया। जिन २ मनुष्यों ने उनकी शरण ली उनका उन्होंने उद्धार किया। जिन्होंने उनके दर्शन किये हैं प्रायः वे सब नहीं तो अधिकतर जानते होंगे कि वे तालाब खुदवाना, वृक्ष लगवाना और मिट्टी का काम ज्यादा पसन्द करते थे। यह जितना निष्काम कर्म है उतना मेरी समझ में तो कोई दूसरा आया है नहीं। यदि जीवित रही तो इसको अपनी बुद्धि के अनुसार फिर किसी अंक में लिखने की चेष्टा करूंगी। ६ जुलाई के पश्चात् मुझे संसार की अनिश्चितता का ही ख्याल बना रहता है। श्री महाराज जी से प्रार्थना है वह इसे सदैव मुझमें बनाये रक्खें। उनके तेज और प्रभा को कैसे वर्णन करूं 'छोटे मुंह बड़ी बात' और वह भी सम्पूर्ण नहीं। ओह! उनका तेज? आज भी जब कभी उनका चित्र क्या उनकी गद्दी जिसमें वे दिन में जब कि सारे आश्रम में भ्रमण करते थे विराजते थे दिखलाई देती हैं स्वयं एका एक सिर झुक जाता है। आज उनका स्मरण, उनका नाम, उनकी चीज़ अपने प्रभाव से प्रभावित करती हैं दिलमें सत्ता स्फूर्ति देती हैं। तो मैं उनके यश और तेज को क्या वर्णन कर सकती हूं। छोटे, बड़े, अमीर गरीब, सुखी, दुखी और बुरे, भले सब कोई जो आते थे उनके अक्षय भण्डार में से वांछित फल पाकर तृप्त होते थे और अपने आपको भाग्यशाली मानते थे। आज वे अक्षय भण्डार के दाता इस लोक में नर रूप में नहीं हैं। उन्होंने अपनी नर-लीला शिमले में समाप्त की, सुना है कि ७ जुलाई को साधारण तौर से जैसे कि आम तौर से वे उपदेश दिया करते थे आश्रम वालों के लिये पत्र में लिखवाया था। "भगवान् का भजन करो, प्रार्थना करो धर्म पर दृढ़ रहो और कष्ट सहो। सब से ज्यादा वृक्षों से प्रेम करो।" मैं और सब यह कोई नहीं जानता था कि ये उनका हमारे लिये अन्तिम उपदेश होगा। जो भाग्य शाली उस समय शिमले में थे वे कहते हैं को दो दिन पहिले उन्होंने त्याग का अवर्णनीय परिचय दिया। आश्रम के मुख्य २ शिष्य उनके चरणों में स्थित होने पर भी उन्होंने दो दिन पहिले उनसे बोलना, उनका नाम लेकर बुलाना छोड़ दिया। पानी मांगने पर कहते थे "भैय्या यानी या कभी कहते थे (मां)" उस समय यह रहस्य किसी को कुछ नहीं मालुम हुआ परन्तु अब जाने हैं कि यह भी उनका उपदेश था। उनके तो प्रत्येक कर्म और प्रत्येक शब्द रहस्य मय उपदेश के थे। हां जितना जो अधिकारी था उतना ही वह उसको समझता था दुनियां में सिवाय रिस्ते के सबको अपनी मां या भैया समझना चाहिये। लिखते २ बार २ उनकी स्मृति से दिल भर आता है। यों तो मनुष्य पर जो दुःख पड़ता है उसे वह सह ही लेता है परन्तु

आज उनका यह वियोग मुझको असहनीय मालुम होता है।

करने पड़ेंगे यद्यपि अब भी काम सब जगमें हमें।
चलनी पड़ेगी राह भी और पढ़नी पड़ेंगी पुस्तकें॥
सब जानिये पर अब न होगा हृदय लीन उमंग में।
सुख की सभी बातें गईं महाराज के ही संग में॥

भगवान् यद्यपि सर्वदा मनुष्य मात्र का भला करता है यह बात सत्य समझने पर भी आज हृदय विदीर्ण होता है। अब भी वे मेरे वैसे ही रक्षक हैं जैसे कि पहिले थे परन्तु वह विशाल, शान्त और दया मूर्ति चित्त से नहीं उतरती है और ऐसा मालुम होता है मानों मैं किसी निर्जन अरण्य में आगई हूं।

अवतार न कोई अपना नवीन मत चलता है, न वह अपनी जगह किसी की स्थापना करता है और न वह किसी से राग द्वेष करता है। करे किससे सब उसके हैं। "प्रभु जी तुरे भले हम तेरे" यही उन्होंने किया। पार्थिव शरीर को त्यागते समय उन्होंने पास में रहने वाले, आश्रम में रहने वाले और अन्यत्र रहने वालों में कोई भेद नहीं किया। किसी को कुछ नहीं कहा। जो कुछ कहना था वह सब पहिले उपदेशों में ही कह गये और कर गये। जब तक समीपस्थ भक्तों ने इस दुःखमय वियोग का ख्याल नहीं किया तब तक उन्होंने सब से बात चीत की और उपदेश दिया। पर जब भक्तों ने जाना कि अब नर लीला समाप्त होगी तब उन्होंने अवतार का रहस्य और संन्यास का असली तात्पर्य समझा दिया। समझाया क्या, करके दिखला दिया था। श्री महाराज जी ने अन्तिम समय किसी से कुछ भी न कहा और न किसी से बोले न किसी की तरफ देखा न किसी पुकार का किसी को सन्देश दिया। हां यदि वे दे गये हैं तो एक सन्देश दे गये हैं और प्रत्येक भक्त, दीन शरणागत सब को ही दे गये हैं वह है "वियोग" और थोड़ा यह कि "समय चूक गया।" सो यह ये दोनों सन्देश सब को बिना भेद भाव को दे गये हैं। यह हमारे लिये एक बहुत बड़ा उपदेश है। "समय न चूको" नहीं पछताते और रोते रह जाओगे। और दूसरा "वियोग" सो भी महाराज जी ने दर्शाया है। यदि मेरे वियोग से तुम दुःख पाते हो तो दुनिया से ऐसा ही हार्दिक और धार्मिक वियोग तुम स्वयं करो न कि "मृत्यु" के किये को मानो तो तुम मुझ से मिल जाओगे।

हा! प्रभो! आज जीवन मरण का सुख दुःख दिल में खटकता है और जीवन की क्षणभंगुरता अस्थिरता और अनिश्चितता का ख्याल आता है।

बातें अलौकिक थीं सभी उस दिव्य शोभा धाम में।
क्या रूप में क्या शक्ति में क्या बुद्धि में क्या ज्ञान में॥
पर हाय केवल रह गई अब यहां उनकी कथा।
धिक्कार है संसार की निस्सारता को सर्वथा॥
तुमको बिना देखे अहो! अब धैर्य हम कैसे धरें।
कुछ जान पड़ता है नहीं महाराज! अब हम क्या करें॥

पूर्ण सन्त

[बे० श्री राव श्रीराम यादव]

दुर्भाग्य से हमारे गांव में किसी प्रकार का सत्संग नहीं है। मैंने बचपन में कभी किसी साधु महात्मा के दर्शन नहीं किए। इतना ही नहीं हम तो साधुओं को बुरा समझते थे। एक बार श्री महाराज जी ने राव बहादुर साहब और महात्मा कृष्णानन्द जी को हमारे खानदान के झगड़ों का फैसला कराने के लिये हमारे गांव भेजा। उस समय राव साहब कांगल से मुझे अपने साथ रामपुरा ले आए। राव साहब मुझे अपने साथ श्रीमहाराज जी के दर्शनों को ले गए। मुझको श्रीमहाराज जी के दर्शन कर बहुत आनन्द हुआ। ऐसी विशाल मूर्ति, प्रेम और दया से भरी अमृत रूप वाणी कि जिस को सुनकर दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का हृदय भी आनन्द से भर जावे। मैंने अपने दिल में राव साहब का बहुत अहसान माना कि इन्होंने श्री महाराज जी के दर्शन कराके मेरा बहुत कल्याण किया है। न मालुम श्री महाराज जी में क्या शक्ति थी उन्होंने मेरे चित्त को आकर्षित कर लिया। मेरा उन पर पूरा विश्वास हो गया और मेरे चित्त में संकल्प उठा कि मैं भी श्री महाराज जी की कोई सेवा करूं। मैं ने श्री महाराज जी से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि महाराज जी मेरे योग्य कोई सेवा फरमावें। श्री महाराज जी ने बड़े प्रेम से फरमाया "राव साहब की सेवा तन मन धन से करो इसी में तुम्हारा कल्याण है" यह घटना १९१६ की है।

जब मुझको श्री महाराज जी में पूरा विश्वास होगया तो मैंने यह चाहा कि मेरे कुटम्ब वाले भी श्री महाराज जी का सत्संग करें। मैंने अपने पिताजी से कहा। मेरे पिताजी का स्वभाव हमारे खान दान से कुछ भिन्न था। वह बहुत सरल स्वभाव और सादगी पसन्द थे। उनके चित्त में दया भी बहुत थी। वह लेन देन का काम करते थे परंतु उन्होंने कभी किसी पर नालिश नहीं की जब किसी गरीब आदमी के पास कुछ देने को नहीं होता था तो वह उसका कर्जा सब स्वयं माफ कर देते थे। वह गरमी के दिनों में प्याउ वगैरः लगाते थे। और इस तरह कुछ दान पुण्य भी करते रहते थे। मेरी प्रेरणा से वह श्री महाराज जी के दर्शन करने आए और दर्शन करके बहुत प्रसन्न हुए। श्री महाराज जी ने दया करके उनको तालाब में एक घाट बनाने की आज्ञा दी सो उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार करली। आगे चलकर जब उनका स्वर्गवास हुआ तो मैंने उनकी यादगार में आश्रम में ही मकान बनाया। इस प्रकार धीरे २ हमारे समस्त परिवार को सत्संग हो गया और सब लोग श्री महाराज जी में श्रद्धा करने लगे और महाराज जी की भक्ति करने लगे।

कभी मेरे चित्त में यह विचार आजाता था कि न तो मुझे कभी श्री महाराज जी की सेवा का अवसर मिलता है और न कभी आश्रम की सेवा का मौका मिलता है। मैं इस खयाल को लेकर श्री महाराज जी की सेवा में उपस्थित होता था तो मेरे अर्ज करने से पहले ही श्री महाराज जी फरमा देते थे जो तुम राव बहादुर साहब की सेवा करते हो यही आश्रम की सेवा है और यही तुम्हारा धर्म्म है यह शब्द सुनकर मैं चुप होजाता था और फिर प्रसन्नता पूर्वक अपने काम में लग जाता था।

श्री महाराज जी बड़े दयालु सन्त थे वह सन्त क्या थे वह तो भगवान का रूप थे। वह न तो कभी क्रोध करते थे और न कभी उदास होते थे सदैव प्रसन्न रहते थे। यदि मैं कभी किसी काम में गलती कर देता था तो केवल इतना फरमाते थे " यह जो काम किया है वह ठीक नहीं हुआ इसमें भलाई नहीं है, इस काम को इस ढंग से किया जाता तो अच्छा था „ श्री महाराज जी के इस व्यवहार से मैं बहुत प्रसन्न रहता था और मैं निर्भय होकर बड़े उत्साह से काम करता था। श्री महाराज जी फरमाया करते 'सब काम भगवान की प्रसन्नता के लिए करने चाहिए, अपने मन के लिए कोई भी काम नहीं करना चाहिए और भगवान का पूरा भरोसा रखते हुए प्रसन्न चित्त रहना चाहिए, किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

मेरा श्री महाराज जी में इतना विश्वास था कि कभी कोई आश्रम वासी श्री महाराज जी का नाम लेकर मुझ से किसी काम के करने को कहता था तो मैं शीघ्र उस काम को कर देता था और श्री महाराज जी से पूछने की आवश्यकता न समझता था। मेरा यह ख्याल बना रहता था कि श्री महाराज जी ने जब एक बार अपने श्री मुख से जो काम फरमा दिया है उसमें बिलकुल देरी नहीं होनी चाहिए और उनके पास यह रिपोर्ट नहीं जानी चाहिए कि अमुक काम नहीं हुआ। उनकी ऐसी दया थी कि मैं जिस काम में हाथ डालता था वही पूरा हो जाता था। कभी ऐसा भी होता था कि हम लोग अपनी मरजी से कोई काम कर लेते थे तो श्री महाराज जी इशारे से यह बतला दिया करते थे कि तुम्हारा यह काम ठीक न होगा परन्तु हम नहीं मानते थे तो हमको उस काम के करने से रोकते नहीं थे। पीछे जब काम खराब होता तो हम आप ही पछताते परन्तु श्रीमहाराज जी फिर भी यही तसल्ली देते रहते कि कोई बात नहीं फिकर न करो फिर ऐसा न करना। मैं श्री महाराज जी के लिए क्या लिखूं वह तो अत्यन्त दयालु सन्त थे। जो गुण भगवान में कहे जाते हैं वही उनमें सब मौजूद थे।

हमारे परिवार में जहां भक्ति का नाम भी नहीं था वहां उनकी दया से रात दिन भगवान की भक्ति होती है। दूर २ से भक्त लोग आकर सत्संग कीर्तन करते हैं। हमारे कुल का तो उन्होंने उद्धार कर दिया। श्रीमान राव बहादुर साहब ऐसे भक्त, परोपकारी और प्रेमी बन गए कि उनके कारण सैंकड़ों मनुष्यों को सत्संग हो गया। मैं तो राव बहादुर साहब को बार २ धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने श्री महाराज जी की सेवा करके न केवल अपना जन्म सफल कर लिया बरञ्च हमारे परिवार का भी उद्धार कर दिया। उनके इस सत्कर्म से इस इलाके में भक्ति का प्रचार हो रहा है।

श्री महाराज जी को गरीब और दीन दुखियों से बड़ा प्रेम था। हमारे रामपुरे के अछूत गिरे हुए हैं श्री महाराज जी उन लोगों के बालकों को शिक्षा दिलाने, उनके बच्चों को साबुन से नहलवाने, उनको पुस्तकें दिलाने, कपड़े दिलाते उनके लिए अच्छे २ पदार्थों का भण्डारा कराते, मिठाई और फलों का प्रसाद दिलाते और फरमाते कि इनको खिलाने का बड़ा पुण्य है। जिस आदमी ने कभी भी मिठाई नहीं खाई है उसी को उसके

खाने में आनन्द आता है इस लिए इनका खिलाना ही पुण्य है। श्री महाराज जी इस इलाके को जगाने आए थे वह सब के हितैषी थे वह चाहते थे कि इन लोगों का राग द्वेष मिट जावे और यह लोग ईर्षा द्वेष करने के स्थान में सब से प्रेम करने लगें और इनका जीवन सुखी हो जावे। जिसने श्री महाराज जी से द्वेष किया उन्होंने उससे भी प्रेम किया और उसकी भी भलाई की। वह सब को ही ब्रह्म दृष्टि से देखते थे। उनके चित्त में कोई अन्तर न था। मेरा श्री महाराज जी में अब भी पूर्ण विश्वास है। वह अब। भी हमारी समस्त कामनाएं पूरी करते हैं। अन्त में मेरी उनके चरणों में यही प्रार्थना है कि वह हमको ऐसी बुद्धि प्रदान करें जिससे हम उनके बताए हुए सन्मार्ग पर चल सकें।

कैलाश पति

[ले० माई शिवानन्दी जी]

मैंने श्री पूज्य परमात्मा गुरुदेव के दर्शन सब से पहिले देहली में किये थे। एक बार जब श्री महाराज जी देहली में थे उन दिनों मुझे भी कुछ वैराग सा हो रहा था जब मैंने दर्शन किये तो मेरे सब दुःख दूर भाग गये और दिल शान्त हो गया। श्री महाराज जी की अमृत वाणी अमर रस की भरी हुई थी सो बोलते ही मुझे अमृत पिला दिया। उसी समय से मैं जान गई कि ये कोई महात्मा ही नहीं वरन कैलाश पति शिव शंकर है। उनका मैं क्या वर्णन कर सकती हूं ये तो पूरण ब्रह्म थे उनकी माया अपार थी कहने सुनने में नहीं आ सकती। मैं तो फिर कुछ भी नहीं, बड़े २ ऋषि महात्मा उनके चरणों में सिर झुकाने आते थे जिसे देख कर हम आश्रम वासी हैरान हो जाते थे। क्योंकि मैंने किसी का भी ऐसा अपार तेज नहीं देखा। उनकी चमक और दमक और उनकी ज्योति के भाव सब आश्रम वासियों के हृदय पर अंकित हैं। अब उन भगवान की अमृत वाणी जब याद आती है तो हृदय फट जाता है और ख्याल आता है कि ऐसे शोक के समय में हमें क्या करना चाहिये परन्तु इतना होने पर भी मेरा यही दृढ़ निश्चय है कि कैलाश पति भगवान् कहीं गये नहीं हैं वे सर्व व्यापक हैं और उनकी महिमा अपार है। इसीलिये अपने को प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होते हैं।

अन्धों के रक्षक

(ले० शिवनारायण भटनागर सम्पादक वतन)

यह खबर अत्यन्त शोक और दुःख के साथ सुनी जायगी कि द्विज होलोन्यस श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज जो भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी के जन्मदाता थे और एक परम योगी थे नौ जुलाई को शिमले में परंधाम को सिधार गये। स्वामीजी महाराज के चेहरे पर एक नूर बरसता था और उनकी आंखों में ऐसा अध्यात्मिक आकर्षण था कि बड़े से बड़ा मनुष्य भी उनके चरणों में झुक जाता था। सर शादीलाल भूतपूर्व चीफ जज पंजाब और सर डा० गोकुलचन्द नारंग जैसे विद्वान लोग भी श्रीमहाराज जी में बड़ा विश्वास

रखते थे। आपकी आयु १०० वर्ष से अधिक थी। कुछ काल हुवा आपकी आंखों में तकलीफ हुई जिसका डा० मथुरादास ने ओपरेशन किया। इस घटना के पश्चात् महाराज जी का ध्यान अंधों की तरफ होगया और आपने ब्लाइण्ड रिलीफ एशोशिएशन की बुनियाद डाल कर हजारों गरीब अंधों की आंख बनवाई। आपके दिल में गरीबों के लिये दर्द था और आप हिन्दू धर्म की प्राचीन सभ्यता को फिर से प्रचलित करने के उद्योग में लगे रहते थे। भगवद्भक्ति आश्रम में सैंकड़ों मनुष्यों ने आपकी आज्ञा के अनुसार घर बार छोड़ कर जनता की सेवा का अमली साधन आरम्भ कर रक्खा था। स्त्री शिक्षा से आपको विशेष प्रेम था और विधवाओं की सहायता के लिए आप सदैव तैय्यार रहते थे। आप में श्रद्धा रखने वालों की संख्या बहुत अधिक है।

जिन्हें आपके शरीर त्याग से अत्यन्त दुःख हुवा है आशा है जिस आश्रम को आपने स्थापित किया है उसको आपके पीछे भी आपकी आत्मा चलाती रहेगी।

पूज्य गुरुदेव

[ले० ब्रह्मचारी गौरीशंकर]

श्री सद्गुरु देव! आप के निराकार, ज्योति स्वरूप, ज्ञान स्वरूप रूप को नमस्कार है। क्या आप हमसे पृथक् हो गये, सदा के लिये पृथक हो गये, क्या आप हमें अब कभी उस दिव्य, तेजस्वी, ओजस्वी, प्रभावशाली, पाप नाशक स्वरूप के दर्शन न दोगे, क्या हम इसी प्रकार वियोगाग्नि से दग्ध होते रह कर, जल हीन मछली की भांति अपने आप को नष्ट कर देंगे। क्या हमारी आशा निराशा के रूप में परिणत हो जायगी, क्या वह अलौकिक उपदेश, जिसे सुन कर महान नास्तिक भी ईश्वर के अस्तित्व को बिना किसी दलील के सहर्ष स्वीकार कर लेते थे न दोगे? प्रभो! आप तो हमारे लेश मात्र दुख से भी दुखी होते थे, पर क्या आज मनुष्य तो क्या सारे विश्व के महान् दुःख को भी आप महसूस नहीं करते, प्रभो! क्या हम आपको भूल सकते हैं? नहीं हम ही नहीं, बरंच, मनुष्य मात्र, नहीं २ जीव मात्र आपको नहीं भूल सकते। आपके उपकार किसी जाति विशेष, प्रान्त विशेष पर नहीं थे बरंच मनुष्य मात्र के लिये होते थे। आज आपके वियोग की अनुभूति, हिन्दू, मुसलमान, जैनी, ईसाई आदि मतों के महा पुरुष किस प्रकार कर रहे हैं, उनके दुखद पत्रों द्वारा हम जान रहे हैं। ऐसे महान पुरुष को क्या संसार भूल जायगा।

हम आपके उपकारों, कृपाओं के ऋण से कभी भी उऋण नहीं हो सकते। जिन निराश्रयों को संसार ने आसरा न दिया, उनको आपने अपनी चरण छाया में अभय दान दिया, जो बीमारी के कारण मृत प्राय हो चुके थे, जिनको आशा छोड़ मरने को कटिबद्ध थे, जीवन दान दिया, तथा एक बार नहीं अनेकों बार दिया। जो पाप पुंज से दब चुके थे, सर्वनाश होने को चाहता था, कृपा कोरसे आपने उबार लिया। सद्गुरु देव! आपकी पतित पावनी कृपा को धन्य है, राम, कृष्ण आदि ने दण्ड द्वारा पतितों को अप-

नाया, परन्तु धन्य है आपकी दया को जो सुदर्शन की भान्ति हमेशा घूमती रहती थी।

अछूतोद्धार का कार्य जो आज देश के सामने सब से बड़ा कर्तव्य है, आपने २० वर्ष पूर्व ही शुरू कर दिया था, गौवों की नसल को सुधारना, प्राचीन प्रथा को फिर से प्रचलित करना, वृक्ष लगवाना आदि कार्य जिनके बिना हम कभी उन्नति नहीं कर सकते, प्रारम्भ कर दिया। जिनको देश के नेता मान रहे हैं, तथा सफलता प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे अनेकों कार्यों से पता लगता है कि श्री १०८ श्री परम पूज्य श्री महाराज जी त्रिकाल दर्शी थे।

आज श्री महाराज जी पंच भौतिक शरीर से हमारे सन्मुख नहीं हैं, परन्तु उनकी आज्ञा, उनके उद्देश्य, उनके सिद्धान्त ऐसे हैं, जिनको देखने मात्र से ही उनकी दिव्य मूर्ति हमारे समक्ष आ उपस्थित होती है। मैं श्री परम आराध्य देव सद्गुरु गुरुदेव से याचना करता हूं कि वह हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें जिससे हम उनके उद्देश्यों को विश्वव्यापी करने में समर्थ हो सकें।

ओं शम्।

श्री महाराज जी क्या थे ?

(ले० ब्रह्मचारी बबलकिशोर जी)

यह संसार पुरुष और प्रकृति का क्रीडास्थल है संसार में दृष्टा दृष्ट यावन्मात्र खेल है उसका साक्षीभूत परम पुरुष आदिनारायण है। यह संसृतिचक्र परिवर्तनशील है। पानी से भाप, भाप से मेघ और मेघ से पुनः वर्षा रूप जल एवं बीज से वृक्ष, वृक्ष से पुष्प, पुष्प से फल और फल से पुनः बीज। इसी भांति यह संसृति चक्र घूम रहा है। तथा सृष्टि के आदि काल से यह झंझट चला आ रहा है। जिन नियमों व सिद्धांतों के द्वारा यह सब होता है उसकी विवेचना करने वालों का नाम तत्वदर्शी है। ऐसे तत्ववेत्ता संसार में इने गिने मिलते हैं जीवों को भव से छुटाने के लिये भगवान् की साकार मूर्ति अवतार व महापुरुषों के रूप में उतरती है। श्री महाराज जी ठीक युगानुकूल प्राणियों के हितार्थ भगवान् की भेजी हुई दैवी शक्ति थी। जैसा कि गीता में कहा है

यद्यद् विभूतिमत्सत्वं श्री मदुर्जितमेव वा।

समय २ पर महान आत्माओं ने अपने आदर्श चरित्र तथा अमूल्य उपदेशों से मानव जाति का उद्धार किया है।

जो दैवी शक्ति होती है उसके जन्म कर्म तथा चरित्र भी अलौकिक ही होते हैं। ऐसे महापुरुष किसी खास जाति या वर्ण के नहीं होते। समस्त जातियां उनकी जाती हैं, अखिल ब्रह्माण्ड उनका देश है, प्राणीमात्र उनका परिवार होता है। श्री महाराज जी जिस स्थान में रहते थे वहां का आकाश तथा वायु मण्डल बहुत पवित्र एवं निष्पाप होता था। जो उनके दर्शन करने के लिये आश्रम में अभ्यागत आते थे उनके आश्रम में प्रविष्ट होते ही विचार धारा बदल जाती थी और वह यह समझते थे कि हम किसी शान्ति के समुद्र के पास जा रहे हैं। उनका हृदय में प्रेम और शान्ती की लहरें उठा करती थीं फिर जो आकर

उनकी दिव्य मूर्ति का दर्शन करते थे तो इकटक देखते ही रह जाते थे श्री महाराज जी की वह दिव्य मूर्ति किसके चित्त को नहीं लुभाती थी। श्री महाराज जी के चेहरे से ऐसा तेज झलकता था मानों हृदय में तेज का पुञ्ज हो, या ब्रह्म निवास स्थान हो। अथवा जैसे किसी महायोगी को योग के उपरान्त भगवान् के साक्षात्कार से तदाकारता हो गई हो। श्री महाराज जी चरित्रता से युक्त, वाग्मी, धर्मज्ञ, ज्ञान सम्पन्न, वेद वेदांग तत्वज्ञ, स्मृतिमान् प्राणी मात्री के रक्षिता, सर्वलोक प्रिय, सदैव प्रियदर्शन, पृथ्वी के समान क्षमा युक्त, हिमवत् धैर्यवान्, समुद्र के समान गम्भीर, शान्ति के सरोवर, दया के सागर, सत्य प्रिय मृदु वक्ता, ब्रह्मचर्य की जीती जागती मूर्ति, महायोगी ब्रह्म निष्ठ व ब्रह्म स्वरूप थे। श्री महाराज जी की विचार शक्ति अद्भुत थी व कल्पना शक्ति अलौकिक थी वाणी में वह रस था कि श्रोता उपदेशामृत को सुन कर मुग्ध हो जाते थे जो ईश्वरीय अंश से प्रकट होते हैं उनके दर्शन भाषण से सबको आनन्द होता है। अनेक बार श्री महाराज जी को उपदेश देते दो बज जाते थे और श्रोता अनालस्य भाव से सुनते हुये नहीं अघाते थे तथा सन्नाटा सा छाया रहता था और श्रोताओं के श्वांस तक का शब्द सुनाई नहीं देता था केवल श्री महाराज मन्द मन्द बादल की तरह गरजते हुये उपदेशामृत बरसाते थे। श्री महाराज जी भव वारिधि से निकालने वाले परम सद्गुरु कर्णाधार थे, ब्रह्म वेत्ता तथा आनन्द कानन में विहार करने वाले तथा प्राणी मात्र के हित चिंतक थे। श्री महाराज जी के उपदेश में विशेष कर ईश्वर भक्ति, आस्तिकता, जाति पाति का अभाव तथा साम्यवाद होता था। यह इस का ज्वलन्त उदाहरण अछूत पाठ शाला, मन्दिरों में मनुष्यमात्र का प्रवेश तथा प्राणी मात्र के लिये गायत्री का उपदेश है। अनीश्वर वादी भी उपदेश सुन कर ईश्वर परायण हो जाते थे। श्री महाराज जी प्रेम के सागर थे प्राणी मात्र से अहैतुक प्रेम करते थे श्री महाराज जी के हजारों शिष्य तथा सत्संगी हैं परन्तु हर एक यह ही समझता था कि मेरे से सब से अधिक प्रेम करते हैं। वे मानसिक शंकाओं को उपदेश करते २ हल कर देते थे। मन में शंका उठती लोग पूछना चाहते परन्तु वे पूछने नहीं पाते थे कि स्वयं समाधान कर देते थे इस बात को सैंकड़ों सत्संगी जानते हैं। श्री महाराज जी के चरित्र तथा कर्म बड़े अलौकिक थे। व्याधिग्रस्त को निरोगता, दुश्चिकित्स्य तथा मरणासन्न को जीवनदान, पुत्रेषणा प्रभृति उनके आशीर्वाद से याचकों को हस्तामलकवत् सुलभ थे।

श्री महाराज जी क्या थे यह कथन करना मेरे लिये अशक्य है क्योंकि 'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' वाली उक्ति चरितार्थ है। फिर भी कहे बिना नहीं रहा जाता। मेरी समझ में श्री महाराज जी भव वारिधि से पार करने वाले परम सद्गुरु कर्णाधार थे। ब्रह्मवेत्ता, ईश्वरीय आनन्द कानन में विहार करने वाले, प्राणी मात्र के हित चिन्तक थे, कलियुग में कृत युग के स्थापक व अधर्म व धर्म नियामक थे। जिस भांति भगवान रामचन्द्र जी त्रेता में, कृष्ण भगवान् द्वापरमें, धर्म का राज्य स्थापित करने के लिये आये थे या शंक-

राचार्य, स्वामी दयानन्द जी या ईसा आदि संसार का कल्याण करने के लिये आये थे इसी भांति श्री महाराज जी प्राणियों के हितार्थ संसार में अवतरित हुये थे। जहां संसार में नास्तिकता के मेघ उमड़ उमड़ कर घूम रहे थे, ईर्षा द्वेष की कालिमा (अन्धकार) छाई हुई थी। वह भगवद्भक्ति रूपी झंझावात से कादम्बिनी को नष्ट कर, प्रेम दया वात्सल्यता से ईर्षा द्वेष आदि कालिमा का विध्वंस कर पूर्ण चन्द्रमा के समान उदय हुये थे और गायत्री रूपी महामन्त्र रूप अमृत बर्षा कर गये। संसार को बता दिया कि सनातनी पाखण्ड को, आर्य समाजी खण्डनता को छोड़, मुसलमान ईसाई सब एक भगवान् की सन्तान हो और एक हो जाओ। इसके लिये चलते समय "सदाचार" नामक अनर्घ्य पुस्तक रत्न बना गये। कलियुग में सतयुग का उज्वल नमूना भगवद्भक्ति आश्रम बना कर सब के सामने रख गये।

पूर्ण योगी

[ले० श्री मौनानन्द जी]

गुरु आहा ! कैसा अच्छा शब्द है ? ओ हो ! क्या ही मीठा है ? गुरु अर्थात् गुड़। जो गुड़ जैसा मीठा बल्कि गुड़ से भी अधिक मीठा अर्थात् शील शान्ति वाला हो। ऐसे कौन थे ? ऐसे श्री महाराज जी महाशान्ति वाले सब से मीठी मीठी और प्रेम भरी वाणी से बोलने वाले थे। शील स्वभाव, शेर बबर और नरसिंह अवतार जैसा चेहरा, कंवल जैसी बड़ी २ आखें और इन आखों पर सूर्य जैसा तेज, भारत माता जैसा लम्बा कद, कैलाश पर्वत सा शिर, रास कुमारी से पांव, दोनों विशाल भुजाएं कलकत्ता और बम्बई की भान्ति फैली हुई थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानों समस्त भारत वर्ष श्री महाराज जी के अन्दर बसा हुआ है। भारत क्या समस्त संसार श्री महाराज जी में बसा हुआ है।

मुख से हर समय महान शान्ति और महान आनन्द बरसता रहता था। कैसे ही असुर स्वभाव का मनुष्य हो जो एक बार आप के दर्शनों को चला गया वह सदैव के लिए आपका ही हो गया। मन को इतना वश किया हुआ कि इधर उधर बहुत कम देखते थे मानो हर समय समाधि में लीन रहते थे। कहां तक बड़ाई की जावे ?

सब धरती कागज करूं, लेखनी सब बन राय।
सात सिन्धु की मसी करूं, गुरुगुण लिखा न जाय।

श्रीमहाराज जी सोते भारत को जगाने और भक्ति कीर्तन का डंका बजाने आए थे। ढोल बजाते बजाते ऐसे छुप गए जैसे सूर्य छुप जाता है। देखिए अब कब दर्शन होते हैं ?

शान्ति पर एक बात याद आगई। एक दफा आप पालम में विराजमान थे। एक साधु आया जो कि आर्य समाजी मालूम होता था, वह श्रीमहाराज जी से बहस करने लगा। वह वार्तालाप करते समय क्रोध से लाल पीला हो गया। श्रीमहाराज जी बोले "बाबा इतने नाराज़ काहे को होते हो ? लो भोजन करलो।" यह कह कर उसके लिए भोजन बनवाकर खिलाया और अपने सेवक से साधु बाबा के चरण दबवाए। इस प्रकार शान्ति के कितने ही उदाहरण हैं !

जो तो को कान्टे बोवे, वाको बो तू फूल।
तो को फूल के फूल हैं, वाको हैं त्रिशूल॥

आश्रम का कितना भारी काम किया परन्तु आप बिलकुल अलग रहते थे। कर्म करते हुए भी अकर्ता थे। यही कर्म करने में चतुराई है। कहते हैं श्री महाराज जी एक बार आसोदे ग्राम में ठैरे हुए थे। वहां एक धर्मशाला में रहते थे। मकान बन्द रखते थे केवल एकबार मकान खोलते थे और गाजरों का आहार करते थे। इस प्रकार महीने से अधिक वहां रहे। एक बार पालम में कई महीने केवल बाटियों का आहार करते रहे नमक तक नहीं खाते थे। बहुत समय तक केवल बथुए की भूजी ही खाते रहे।

कहते हैं श्री महाराज जी ने कांगड़े के पहाड़ों में बहुत दिन तपस्या की थी। वहां ऐसी कठिन तपस्या की कि आपके हाथ पावों की शकल ही बदल गई। उन दिनों में आप बीमार हो गये, तब एक छोटा सा बालक श्री महाराज जी के लिये रोटी, दूध तथा जल लेकर आने लगा। महाराज जी उससे पूछते कि लाला! तू किस का बालक है, तब वह बालक बड़े मीठे स्वर से उत्तर देता कि मैं तो आप का ही बालक हूं।

"हम भक्तन के भक्त हमारे"

वह बालक कौन था? वह था देवकी का पुत्र, नन्द का नन्दलाल, मेरा प्यारा, आंखों का तारा, तिर्छा बांका, वंशी वारा, गिरधारी, गोवर्धन-धारी सब ही कुछ टेढ़ा। सिर भी टेढ़ा, चरण भी टेढ़े मुरली भी टेढ़ी, वदन भी टेढ़ा, मुकुट भी टेढ़ा, वृन्दावन भी टेढ़ा और मथुरा भी टेढ़ी है। वाहरे! बांके बनवारी, तेरे पर जाऊं बलिहारी।

श्री महाराज जी ने जो अनुग्रह, दया भला हम पर की है, उनको हम कोटान कोट जन्म जन्मान्तर भी नहीं भूल सकते। हे त्रिलोकी नाथ! भक्त वत्सल आप से हमारी यही प्रार्थना है कि गुरु मिलें तो वही मिलें अन्यथा नुगरा ही रहूं।

श्री महाराज जी क्या थे ?

(ले० रुद्रदेव ब्रह्मचारी)

ब्रह्म स्वरूप परम हंस श्री १०८ परम पूज्य श्री महाराज जी का यह परिचय देना कि श्री महाराज जी क्या थे, यह तो सूर्य भगवान को देखने के लिये दीपक जलाना है। उन पूर्ण योगी, ब्रह्म योगी, पूर्ण मय, तपोनिष्ठ ब्रह्म निष्ठ, धर्म निष्ठ, सर्वत्र प्रकाशमान् परिपूर्ण के लिये मैं तुच्छ बुद्धि क्या उल्लेख कर सकता हूं। श्री परम हंस श्री १०८ परम पूज्य श्री महाराज जी परम योगी थे, जगद्गुरु थे, अनन्त अपार ज्ञान और आनन्द के केन्द्र थे, संरक्षक तथा प्रेरक थे, महान उदार तथा गम्भीर थे, करुणा के सागर थे, क्षमा के स्वरूप थे, दीनों पर दया करने में दीन दयालु थे, पतितों को पवित्र करने में पतित पावन थे, सर्व शक्तिमान् और प्रेमाकर थे। प्राणि मात्र को पवित्र इढ़ात्मिका बुद्धि प्रदान करने वाले थे। दीन और दुखियों को सहायता पहुंचाने वाले थे, शरणागत को शरण देने वाले थे, अभक्तों को भक्त

बनाने वाले थे। श्री महाराज जी अपने समय में अपूर्व विद्वान् तथा वक्ता थे, अद्वितीय महात्मा तथा जीवन मुक्त थे, त्याग और वैराग्य के मूर्त्तिमान् अवतार थे। श्री महाराज जी सम्पूर्ण विश्व के देशों और जातियों, समस्त धर्म के मनुष्यों तथा समस्त प्राणि मात्र से प्रेम करते थे।

श्री महाराज जी के शरीर से जीव मात्र को सुख तथा लाभ प्राप्त होता था। उनके शरीर में आनन्द और शान्ति नख से शिखा पर्यन्त सर्वदा भरी रहती थी। श्री महाराज जी की तेजोमय मूर्ति के दर्शन करके मनुष्य मात्र को आनन्द प्राप्त होता था। श्री महाराज जी उपदेश करते हुये ऐसे पूनीत होते थे कि साक्षात् ब्रह्म ही बैठे हैं। श्री महाराज जी के उपदेश का प्रभाव जादू की तरह पड़ता था उनके उपदेश सुनते २ जनता को अपने शरीर की सुध नहीं रहती थी। उनके उपदेश सुनते २ मनुष्य उकताते नहीं थे न समय का ज्ञान रहता था। उनके प्रेम पूर्ण मधुमय उपदेशामृत पान करने के लिए मनुष्य सदा लालायित रहते थे। उनके उपदेश श्रवण करते हुये किसी भक्त को कुछ पूछने की जिज्ञासा उठती तो वह कहने भी नहीं पाता था कि उपदेश श्रवण मात्र से ही जिज्ञासा आप से आप ही हल हो जाती थी। ब्रह्म स्वरूप श्री महाराज जी के तेजोमय मुख मण्डल के दर्शन करते २ चित्त तृप्त नहीं होता था, उनमें ऐसी आकर्षण शक्ति थी कि सारी जनता सर्वदा दर्शनों के लिये लालायित रहती थी। श्री महाराज जी के दर्शन के निमित्त कोई भक्त अपनी कामना लेकर आया तो उसके बिना कहे ही उसकी बात जान कर वह कामना बात की बातों में ही कह देते थे।

आदर्श शिक्षक

(ले० सरदार सरमुख सिंह जी बी० ए० वकील)

मेरा अहोभाग्य है कि मुझे भी श्री स्वामी जी के जीवन काल में न केवल उनके दर्शन करने का बल्कि उनसे पवित्र बात चीत सुन और करने का विशेष अवसर मिल गया। मैं अपने जीवन के इन दिनों को कभी न भुलूंगा। जो लाभ और भाव उनके शुद्ध, पवित्र, स्वतन्त्र, परोपकारी, त्यागी और हितैषी जीवन का मुझ पर कुछ थोड़े से काल में ही पड़ गया वो मेरे दिल पर सदैव के लिये अंकित हो गया है। यद्यपि स्वामी जी स्थूल शरीर को छोड़ चुके हैं। परन्तु उनकी पवित्र याद अब भी मेरी आंखों के सामने वैसे ही देदीप्यमान् है।

श्री स्वामी जी महाराज एक विशेष पुरुष थे। वह त्यागी वैरागी, तपस्वी, कर्म्म योगी, महात्मा, पण्डित, विद्वान, परोपकारी, निष्काम सेवा करने वाले, सच्चे भक्त, मनुष्य मात्र, पशु-जगत्, उद्भिद जगत और जड़ जगत के सच्चे सेवक और हितैषी और उनके सम्बन्ध में अमली काम करने वाले और अमली काम की अपने सत्संगियों को शिक्षा देने वाले थे। उनका जीवन सादा था और वह सादा जीवन का ही प्रचार करने वाले थे। वह ब्रह्मचर्य के सच्चे पोषक, स्त्री शिक्षा के बड़े सहायक और गरीबों और दीन दुखियों पर दया दृष्टि रखने वाले थे। वह बहुत स्वतन्त्र विचारों के पुरुष थे।

इतनी आयु होने पर भी उनका चेहरा चमकता रहता था और नित्य प्रति आश्रम वासियों

से वृक्ष लगवाने, सड़क बनवाने आदि कामों को बड़े प्रेम और उत्साह से करवाते थे। स्वयं मुझे भी कैंसी चलाने का काम देकर प्रसाद हासिल करने की आज्ञा दी यह बात मैं कभी नहीं भूलूंगा। उनके पास रहने वाले सत्संगियों के जीवन में मुझे उनका खास हाथ नज़र आता था। आश्रम में बीमारों की सेवा में लगे हुए ब्रह्मचारियों, साधुओं और देवियों के प्रेम और सेवा भाव को देख कर मेरा हृदय गद गद हो जाता था और मैं उन पवित्र देवियों के शुद्ध जीवन की महिमा स्थान २ पर गाता नहीं थकता। जैसे वृक्ष अपने फलों से पहचाना जाता है वैसे ही इन आत्माओं को देख कर मुझे स्वामी जी महाराज की अध्यात्मिक शक्तियों का साफ पता लगता था। स्वामी जी को ग्राम सुधार का जितना प्रेम था उसका पता मुझे उनकी वार्तालाप से लगता है जो वह राव साहब से कर रहे थे। वह कह रहे थे कि लोगों को ग्रामों में सुधार की बातें क्यों नहीं कराते? मुझे पूरा विश्वास था कि उनका शरीर और रहता तो वह थोड़े समय में ही आश्रम द्वारा बहुत सुधार कर जाते। आश्रम में रहने के उन्होंने बड़े उत्तम नियम बनाए हैं। गृहस्थियों, ब्रह्मचारियों, साधुओं और स्त्रियों के लिए पृथक २ स्थान हैं। स्त्रियां बिना परदा रक्खे हुए बहुत पवित्र जीवन बिता रही हैं यह उनकी धार्मिक शिक्षा का फल है। अछूत स्कूल उनके स्वतन्त्र विचारों का नमूना है। मैं कहां तक लिखूं स्वामी जी महाराज एक विशेष पुरुष थे और हम सब को उनका बहुत वियोग है परन्तु मेरा विश्वास है कि वह अब भी सूक्ष्म शरीर से आश्रम वासियों की उसी प्रकार सहायता करते रहेंगे यदि वह उनमें विश्वास रखेंगे।

भगवत् के अवतार

[ले० श्रीमती रानी निहालकोर]

श्री परम पूज्य श्री १०८ श्री परम हंस योगीराज श्री महाराज जी की महती अनुकम्पा के के लिये मैं अपने हार्दिक भावों को अपनी तुच्छ बुद्धि से प्रकट करती हूं। जब मुझे १०८ श्री महाराज जी के परम दर्शन प्राप्त हुये मैंने दर्शन करते ही जान लिया कि अब मेरे कल्याण में सन्देह नहीं। मुझे उनके दर्शन पाकर एक अनुपम सन्तुष्टि और शान्ती मिली और मैंने अपनी वर्षों की मनोकामना पाली। उनकी महिमा को मैं अपनी तुच्छ वाणी से किस प्रकार कह सकती हूं कि वह कौन थे? क्या थे? इसका अनुभव जो मैंने उनके दर्शन में, उनकी महती दया में और उनके मधुर वचनों में जाना उसको मैं हृदयंगम ही कर सकती हूं कह नहीं सकती। वह कोई सामान्य साधु नहीं थे बल्कि एक उज्वल परमोज्वल पूर्ण ज्योति थे। मेरे जीवन में अनेक ऐसी विषम घटनायें हुई हैं कि जिन संकट युक्त स्थितियों में उन्होंने कृपा दृष्टि की और बिगड़ी हुई को बनाया है इससे उनकी अपार, अतुल, और विशाल दया का पता लगता है।

एक बार श्री राव बहादुर (मेरे प्रातः स्मरणीय पति देव) बहुत सख्त बीमार हो गये थे और कोई उम्मेद न थी क्योंकि डाक्टरों ने भी जवाब दे दिया था। तब मैंने पत्र द्वारा श्री सत्गुरु महाराज जी से प्रार्थना की। उन्होंने पत्र में यह

शान्ती युत मधुर शब्द लिखवा कर भेजे।

जाको राखे साँईयां मार न सके कोय।

बाल न बाँकों कर सके जो जग वैरी होय॥

इसके पश्चात् श्री राव बहादुर को अपने चरणों में बुला लिया और वे स्वस्थ हो गये और मेरे दिल को बहुत शान्ती हुई। मैं उनको किन २ महान शब्दों से महत्व दूं? वे अन्तर्यामी भी थे। इसका भी मैंने पूरा और सच्चा अनुभव किया है। एक समय कुछ दिनों से मेरे दिल में अशान्ती हो रही थी तो मेरे दिल में विचार आया कि वैद्य को प्राप्त कर रोगी भले ही निरोग न हो किन्तु सद्गुरु वैद्य को प्राप्त करके तो भवरोग अवश्य उन्मूल हो जाता है फिर क्या कारण है कि सद्गुरु की प्राप्ति होने पर भी यह अशान्ती क्यों? यह विचार करती हुई मैं श्री महाराज जी का ध्यान कर रात में सो गई। दूसरे दिन ही उन अन्तर्यामी गुरु देव ने जान लिया और मेरे पास सन्देश भिजवाया और यह कहा कि धैर्य रखो आनन्द से रहो और सुमित्रा (मेरी पुत्री) से पुस्तक सुनो। मैं क्या वर्णन करूं मेरे तो हृदय से फिर बिल्कुल अशान्ती दूर हो गई।

मेरे लिये उन्होंने क्या किया यह तो मैं अपने हृद-प्रदेश में ही आनन्द दर्शन करती हूं। किन्तु मेरे अमूल्य धनराशि, जीवन धन श्री राव बहादुर के लिये भूत भविष्य वर्तमान तीनों युगों में क्या २ किया है क्या लेखनी की यह ताव है जो वह लिखे। जल से, स्थल से, हिंसक जन्तु से, अभियोग से, विपत्ति से, निराशा से, मर्माघात से, दैव के व्याघात से, स्वजनों की विमुखता, से परिजनों के प्रहार से और पाप के भार से इन सब से श्री गुरुदेव ने उनको बचाया और शान्ति दी वह अद्वितीय, अकथनीय और अनुपम है।

सर्व व्यापि जगत गुरु की अनुभूति

[ले० श्रीमती सविता देवी]

सर्व व्यापी जगद्गुरु श्री १०८ श्री महाराज सर्व प्राणियों में व्याप्त हैं। पृथिवी आकाश अन्तरिक्षणादि लोकों में रमे हुये हैं। आप के अनुपम गुण, उपदेश, कीर्ति तथा महती दया देश देशान्तरों में विस्तृत है। तथापि स्थूल शरीर न रखने पर जो हृदय विदारक दुःख है वह लेखनी से बाहर है। हा हृदय फट नहीं गया जिस समय श्री १०८ श्री परम पूज्य महाराज जी अपने निज स्वरूप में लीन हुये। जिन्होंने अमृतमय वाणि से उपदेश सुने और दर्शन किये, वह वियोग के दुःख को स्वयं ही अनुभव कर सकते हैं। मनुष्यों के अतिरिक्त वृक्षों के पत्ते पत्ते रोते नज़र आते हैं। गौ शाला में श्री महाराज जी की गड्डी जाती थी तब एक साथ गौ वत्सशिर उठा प्रणाम करते मालूम होते थे और उपदेश सुनते थे। आज श्री महाराज जी के वियोग में रांभते ही सुनते हैं। और दो गाएं तो अपने प्राण तज ब्रह्मानन्द में लीन होगई। मयूर सारिका पिकादि जो नियत स्थान पर जाके संध्या प्रार्थना करते दृष्टि गोचर होते थे, आज वे सब मिल के रुदन करते सुनाई पड़ते हैं राम सरोवर तीर्थ श्री महाराज जी के दर्शन कर २ के आनन्द मय लहरों से सराबोर हो जाता था, आज विरह अग्नि में सराबोर हो रहा है और

मछलियें श्री चरणों के स्पर्श से जो अपने को कृत्य कृत्य समझती थीं आज चरणों के बिना तड़फ रही हैं। हा अभागे प्राण निकल नहीं गये जब श्रीमहाराज जी के साकार रूप से वियोग हुवा।

चम्पा, चमेली, जूही, गुलाब, मोतियादि फूलों में भंवरे अपनी मधुरी तान से श्री महाराज जी को कीर्तन ध्वनी सुनाते थे, आज वियोग के दुख से फूलों सहित भंवरे शोक सागर में डूब गये हैं।

आश्रम से ही वियोग संपूर्ण विश्व का साकार रूप से वियोग हो गया आप के जीवन से विश्वभर को प्रेम था। आपने अपकार के बदले उपकार किया वास्तव में उपकार के लिये ही अवतार धारण कर के विश्वभर के लिये साफ मार्ग दिखा दिया। विशेष कर स्त्री जाति को उन्नत कर शिक्षाप्रद स्वतन्त्र राज्य केन्द्र अथवा सुरम्य उपवन स्थापित कर दिया। श्री महाराज जी ने अशिक्षितों को शिक्षित किया, अन्धों को आखें दी, दुखियों का दुख दूर किया, अनाथों को अपनाया, भगवान की भक्ति सत्संग का प्रचार किया। जिसने उनके एक बार भी दर्शन कर लिये वह ऐसा कौन होगा जिसकी मन वांछित इच्छायें पूरी न की होंगी। कल्याण के स्वामी, ज्ञान वैराग्य के भण्डार विश्व के पालक, उत्पादक और संहारक थे। सायुज्यादि चार प्रकार की मोक्ष आप के चरण कमलों की सेवा करती थी। ऋद्धि सिद्ध आज्ञाकारिणी थी। वेदोपनिषदादि शास्त्र कण्ठस्थ थे। त्रिकालज्ञ समदर्शी तथा समवर्ती थे। पृथिवी के आभूषण सच्चिदानन्दघन भगवान् अपने दिव्य स्वरूप में साक्षात् प्रकट थे। जिसने एक बार भी पूर्णात्मा ज्ञान दर्शन कर लिये, फिर तो क्या था समस्त अंग केवल उसीका अनुभव कर रहे हैं। संपूर्ण इन्द्रियां उसी का विषाद करती हैं। आंखें अहर्निश संपूर्ण विश्व को श्री महाराज जी मय देखती हैं। कान सदा उसी के मधुरातिमधुर शब्द ब्रह्म मयी वेणु ध्वनि सुनते हैं। नासिका नित्य निरन्तर उसी आनन्दमय अंग सौरभ को सूंघती हैं। जिह्वा अविछिन्न रूप से उसी प्रेम सुधा का आस्वादन करती है। और शरीर सर्वदा उसी अखिल सौन्दर्य माधुर्य रसाम्बुधि रस राज परम सुख स्पर्श आनन्द कन्द श्री परम पूज्य श्री १०८ महाराज जी के अनुपम सुख का अनुभव करता है। आप की चितवन में आकर्षण और वाणि में अमृत रूपी जादु था। आप के दर्शन कल्पवृक्ष के समान थे वे समस्त विश्व को एक दृष्टि से देखते थे। स्त्री, पुरुष, ब्राह्मण, शूद्रादि को वेदोपनिषद् गीता गायत्री सुनाते थे। जाति, विद्या रूप, कुल, धन, और क्रियादि का भेद नहीं था। दीन दुखी, रोगी, अनाथों से बहुत प्रेम रखते थे। सब से इतना प्रेम करते थे कि हम सब मिल के अगर एक से भी प्रेम करें तब नहीं कर सकते हैं। लता पता फूल वृक्षों से इस कदर का प्रेम करते थे कि मा अपने बच्चे से भी नहीं कर सकती है।

पतितोद्धारक

[ले० श्रीमती कुमारी क्षमा देवी प्रभाकर]

सन् १९१६ से आज ३६ तक श्री परम पूज्य श्री महाराज जी ने हमारी स्त्री जाति के लिये जो कुछ किया वह सर्व दृष्टि गोचर है और वाणी द्वारा कथन करना नितान्त असम्भव है।

सीका अनुभव क
। विषाद करती है
को श्री महाराज ह
के मधुराति मधु
नुमते हैं। नासिक
य अंग सौरभ को
रूप से उसी पूः
और शरीर सर्वत
रसाम्बुधि रस रा
श्री परम पूज
सुख का अनुभव
में आकर्षण और
। आप के दर्शन
विश्व को एक दृष्टि
ण, शूद्रादि को
थे। जाति, विद्या
का भेद नहीं था।
त प्रेम रखते थे।
हम सब मिल के
हीं कर सकते हैं।
र का प्रेम करते
कर सकती है।

दिवी प्रभाकर]

६ तक श्री परम
ी जाति के लिये
चर है और वाणी
व है।

चित्र संख्या—

श्री परम पूज्य श्री महाराज जी तीन बात मुख्य रूप में चाहते थे ! स्त्री सुधार, दलितोद्धार, गौ रक्षा। परन्तु इन तीनों में स्त्री सुधार को विशेष चाहते थे उनका कथन था कि जब तक कि स्त्रियों को योग्य नहीं बनाया जायगा तब तक भारत का उद्धार नहीं हो सकता। क्योंकि भारत का उत्थान इन्हीं के हाथ में है। जब तक इनको शिक्षित नहीं बनाया जायगा तब तक ये भावी सन्तान को देश के लिये कैसे तैय्यार कर सकती है। श्री परम पूज्य श्री महाराज जी फरमाया करते थे कि पहिले प्राचीन काल में विदुषी वीरांगनायें हो गई हैं वैसी ही अब भी होसकती हैं अगर इनको समय दिया जाय। ऐसा कौनसा काम है जिसको कि पुरुष कर सकते हैं और स्त्रियें नहीं कर सकती अगर इनको मौका दिया जाय तो सब कुछ कर सकती हैं उन्होंने सदाचार में भी लिखा है कि स्त्रियों को पैर की जूती के बजाय सिर का मुकुट समझना चाहिये और इज्जत करनी चाहिये।

श्री परम पूज्य श्री महाराज जी ने स्त्री सुधार के लिये ही आश्रम में कन्या गुरुकुल खुलवाया। वैसे तो कन्या गुरुकुल कई जगह खुले हुये हैं लेकिन यहां पर खास स्त्री सुधार का उद्देश्य लेकर खोला गया है स्त्रियों का क्या कर्त्तव्य है, और उनको देश के लिये क्या करना है, भावी सन्तान को कैसे शिक्षित करना है, किस तरह से वह अपने उद्देश्य की पूर्ती कर सकती हैं यह सब बातें शिक्षा द्वारा सिखाई जाती हैं। और साथ ही साथ भजन, कीर्तन, उपदेश, बिमार की सेवा अतिथि सेवा आदि सब बातें बड़े प्रेम से सिखाई जाती हैं।

श्री १०८ श्री महाराज जी की याद

[ले० हरीराम ब्रह्मचारी 'आश्रम']

है याद करते आपको ऐ भक्त नास्तिक दीन भी, ज्ञानी गुणी विद्वान् योगी मौनवत् तल्लीन भी।
है याद करते आपको वायु अनल भू नीर भी, गंगा त्रवेणी सौण सरिता सप्त उदधि गभीर भी॥
है याद करते आपको वन वाटिका और बाग भी, सारिका वक मोर पेचक और तोता काग भी।
है याद करते आपको अश्वत्थ श्री फल आम भी, वट पापरी कदली तथा भक्ति आश्रम अभिराम भी॥
है याद करते आपको अंधे दुखी मोहताज भी, गो भक्त सेवक आपके और देश के सिरताज भी।
है याद करते आपको हल राम शंकर कृष्ण भी, नव द्वीप केशव रुद्र शिव सतपथ सदैव सतृष्ण भी॥
है याद आती आपकी वे दिव्य शिक्षायें हमें, आपने जो कि दी हैं धर्म दिक्षायें हमें।
है याद करते आपको हम रात दिन महाराज जी, 'हरि' पुत्रवत् पाला हमें है सद्गुरु महाराज जी॥

जनता में भगवद्भक्ति भाव को जाग्रत करने वाली सचित्र मासिक पत्रिका।

वर्ष १० | श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी, भाद्रपद ता० १ महीना १९३६ | अंक १२

भजन

ब्रह्म का है आनन्द स्वरूप ॥ टेक ॥
निराकार निर्विकार निरंजन, ज्योति स्वरूप अरूप ॥ १ ॥
अध ऊरध दायें अरु बायें, एक अखण्ड अनूप ॥ २ ॥
आनन्द को सब चाहें प्राणी, कहा रंक कहा भूप ॥ ३ ॥
एक ही परमानन्द विराजे, नहिं छाया नहीं धूप ॥ ४ ॥

(श्रीमान हिज़ हाई नेस महाराजा सदाशिव राव पंवार रियासत देवास)

सम्पादक जी,

आपका तारीख २६-७-२६ का पत्र पहुंचा इससे पहिले राव बहादुर बलवीर सिंह जी साहब के पत्र द्वारा श्री महाराज जी का समाधिस्थ होने की दुःखद वार्ता मालुम हुई। हम उभयतो स्त्री पुरुष श्री महाराज जी के अनुग्रहीत थे और हमेशा अन्तःकरण में उनके दर्शन की व कृपा की लालसा रखते थे। यह निधन वार्ता सुनकर हमको विशेष प्रकार का दुःख हुआ, कारण हम इस प्रयत्न में थे कि श्री महाराज जी देवास में पद प्रस्थान करके इसी भूमि को पवित्र करें, और हम सबको अनुग्रहीत करें। यह हमारी आशा अपूर्ण रही। अस्तु।

आपने यह इच्छा प्रकट की है कि मैं श्री महाराज जी के "वियोगांक" के लिए कुछ लेख भेजूं। श्री महाराज जी बड़ी विभूति थी। उनके समागम का स्वारस्य व स्वानन्द लेखन द्वारा प्रगट करना कठिन है। इसका ज्ञान व इसका अनुभव उन्हीं को हो सकता है कि जो उनके दर्शन करने का सौभाग्य कर चुके थे।

भारतवर्ष में ऐसे महात्माओं की आवश्यकता है, ऐसे साधु रत्नों का वियोग दुःसह हो जाता है। आप सब लोग जो उनके समीप वास्तव्य करते थे वह भाग्यशाली थे।

महर्षि पूज्य श्री परमानन्द जी

[ले० श्री रघुनाथ स्वामी नरेला]

श्री गुरु परमानन्द के चरण कमल नित वन्दि।
तिन २ जो वन्दन करे ताको होय आनन्दि॥

श्री महाराज जी परमानन्द स्वरूप थे। संसार के महान् अज्ञानान्धकार को दूर करने के अर्थ 'आनन्द विग्रह रूप से अवतीर्ण हुए और सबको ही आनन्द रस का प्रदान करने वाले थे। अनेक संसारी जीवों का महा मोह रूपी बन्धन काट कर सत्यमार्ग को प्रदर्शन करने वाले थे। महाराज त्रिकाल में एक रस रहने वाले परमानन्द स्वरूप में स्थित थे। उनके सदुपदेशों से जैसा जो अधिकारी था उसने वैसा ही उपदेश ग्रहण किया, भक्तों को भक्ति, ज्ञानियों को ज्ञान, प्रेमियों को प्रेम, सदाचारियों को आचार, ध्यानियों को ध्यान, मानियों को मान

और लोभियों को दाम. सभी कुछ प्राप्त हुए। उन से निरन्तर तप, त्याग, शान्ति, और आनन्द प्राप्ति की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उनके सर्वोच्च और परम उदार विचार थे। यथा गुरु भक्ति भगवद्भक्ति, गो भक्ति, प्रेमा भक्ति, राज भक्ति, आदि महान् गम्भीर और सर्व साधारण को लाभकारी उनके उद्देश्य थे। उन्होंने कई एक आश्रमों की पद्धति का संचालन किया। समयानुसार शिक्षा के प्रचारक थे और भावी युग के भी परिवर्तन करने वाले थे।

गुरुदेव के संस्मरण

[ले० पं० जगदीश शंकर पाठक एम० ए०, एल एल. बी.

एम० ए० परीक्षा पास करके मैं प्रयाग से घर (कापुनर) आया हुआ था। डाक्टर सोहन लाल भार्गव से मेरा प्रेम था। मैं बहुधा उनसे मिलने जाया करता था। एक दिन मैं वहां गया तो मुझे एक संन्यासी के दर्शन हुए। पाश्चात् शिक्षा में तो बहुत पला था परन्तु पिता जी की अनन्य श्रद्धा भक्ति के कारण भक्ति के मूल संस्कार विद्यमान थे। डाक्टर साहब और अपनी मित्र मण्डली के साथ मैं भी उनकी बातें सुनने लगा। मेरे चित्त पर उनका बड़ा प्रभाव पड़ा। सिपाहियाना कद होते हुए भी उनकी वाणी धीमी और गम्भीर थी। मैंने उनको घर पर भिक्षा पाने की प्रार्थना की सो मंजूर हो गई। स्वामी जी हमारे घर आये समस्त घर बहुत प्रसन्न हुआ। पिता जी तो बहुत ही प्रसन्न हुए। एम० ए० पास लड़का साधु महात्माओं का सत्संग करे इससे अधिक प्रसन्नता की बात उनके लिए और क्या हो सकती थी ? स्वामी जी ने मुझे प्रेरणा की कि तुम हमारे गुरुदेव के दर्शन करो। मुझे इस बात का बहुत चाव हुआ। मैं भगवान् से प्रार्थना करने लगा कि भगवान् उन महापुरुष के दर्शन कब होंगे ? भगवान् ने मेरी प्रार्थना स्वीकार करली और १९२६ की दशहरे की छुट्टियों में मैं भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी में जाकर उनके चरणों को स्पर्श कर भाग्यशाली बना।

वह क्या थे ? यह मैं क्या कहूं ? मेरे लिए तो वह स्वयं नारायण थे। पृथ्वी का भार उतारने के लिए उन्होंने शरीर धारण किया था। ज्ञान दृष्टि से वह ब्रह्म स्वरूप थे। शक्ति के स्वरूप में वह ईश्वर थे। सन्त के रूप में परम दयालु थे, योगियों की गणना में पूर्ण योगी थे। आचार्य के रूप में वह समस्त विद्याओं के आचार्य थे। विद्वानों में अद्वितीय विद्वान् थे। नीति में भगवान् कृष्ण के समान थे। कौन ऐसी विभूति थी जो उनमें न थी वह सब कुछ थे।

शरीर का तो कहना ही क्या है ? अखण्ड ब्रह्मचर्य्य से देदीप्यमान पूर्ण विकाश को प्राप्त इतना सुन्दर और मन मोहक शरीर था कि मनुष्य की तो बात ही क्या पशु पक्षी भी आकृति देख कर मोहित हो जाते थे।

एक समय की बात है मैं भी महाराज जी की गाड़ी के साथ था। आश्रम में बहुत कुछ

इधर उधर फिरने के बाद गाडी एक विशेष स्थान पर आयी वहां पर श्री महाराज जी ने कहा "अरे इस लसोड़े के वृक्ष को किसने काट डाला इसमें तो भूत रहता है। भाई भूत का वृक्ष क्यों काट डाल। मुझे भूतों के सम्बन्ध में जानने की कौतूहलता बहुत दिनों से थी। तुरन्त ढिठाई से पूछा महाराज! भूत होता है। उत्तर मिला "हां भाई होता है तेरा क्या करेगा। अच्छा ही करेगा।" मैं छोटेपन से ही भूतों से बहुत डरा करता था। परन्तु वह दिन है और आज का दिन है जब कभी निर्जन स्थान में रात्रि में हो कर जाना पड़ा है श्री गुरु देव के वाक्य "भूत तेरा क्या करेगा अच्छा ही करेगा" डंके की चोट के समान कानों में मानों श्री महाराज जी कह रहे हैं ऐसा प्रतीत होता है। और अब उस किस्म का भय कभी नहीं लगता।

एक महानुभाव गाडी के पास उसी रोज सन्ध्या समय आये और श्री पूज्य महाराज जी को दण्ड प्रणाम करके मौन खड़े हो गये किसीने कहा महाराज जी ये हरिद्वार से आये थे वहां से यह व्रत लेकर आये हैं कि मौन रहेंगे। तुरन्त श्री गुरुदेव ने बड़ी मधुर स्नेहमयी वाणी से कहा 'भाई शास्त्रों में तो कहीं मौन व्रत प्रमाण नहीं। वाणी के संयम की बात कही गई है। वाणी का संयम अच्छा। कुछ ऋषियों के नाम लिये और अन्त में महर्षि दयानन्द का नाम भी आदर से लिया और कहा कि यह कोई मौन नहीं थे।

एक समय गायत्री मन्त्र की श्री पूज्य गुरुदेव बड़ी प्रशंसा कर रहे थे तो एक छोटा सा आश्रम का ब्रह्मचारी बोल उठा, "महाराज जी मैं जंगल में होऊं तो क्या वहां गायत्री मुझे खाट देगी!" तुरन्त हंस कर बड़े प्रेम और आनन्द से उत्तर दिया "अरे तुझे बहुत बढ़िया पलंग देगी और बड़ा सुन्दर भोजन" श्री गुरुदेव कहा करते थे कि ऋद्धि सिद्धि, मोक्ष, सब गायत्री देती हैं। लाखों पुस्तकें गायत्री मन्त्र की अर्थ सहित श्रीमहाराज जी की प्रेरणा से बट गई। श्री गुरुदेव कहा करते थे कि प्राणी मात्र को वेदों के पढ़ने का अधिकार है। सब को प्रेम से पढ़ाओ श्रीमहाराज जी को जाति पात का कोई विचार नहीं था। प्राणी मात्र से प्रेम था। अन्त्यज बालक जब गाडी के पास आते थे श्री महाराज जी की गाडी से लिपट कर ऐसे खड़े हो जाते थे मानों अपने पिता के साथ हैं।

मार्मिक से मार्मिक बात श्री गुरुदेव ऐसे सीधे सादे शब्दों में कहते थे जो सब लोग पढ़े और अनपढ़े दोनों भली भान्ति समझ जायें। ऐसा प्रतीत होता था कि दर्शन शास्त्र की कोई ऐसी बात नहीं जिसे प्राणी मात्र न समझ जायें।

सर्वान्तर्यामी जगत् गुरु

[ले० श्रीमती चिदानन्द लहरी]

श्री १०८ श्री पूज्य महाराज जी पूर्ण ब्रह्म, अविनाशी, सर्वान्तर्यामी व जगत्गुरु थे। उनके आगे काल भी कोई वस्तु न था। उनकी महिमा अपार थी। हमारे जैसे तुच्छ बुद्धियों को समझ में कैसे आ सकती थी। वे हम सदृश पापियों, पतितों को भव सागर पार लगा गये। मेरा ही क्या संसार का बेड़ा पार कर गये और स्त्रियों को

पैर की जूती के स्थान में सिर का मुकुट बना गये। श्री पूज्य महाराज जी के लिये तो लोक तथा परलोक दोनों समान थे। परन्तु हम अभागों को उनका वियोग होने पर यह प्राण न जाने क्यों नहीं इस शरीर को छोड़ कर बाहर निकलते।

मेरे इष्ट देव

[ले० कुमारी सुमित्रा देवी प्रभाकर]

हे प्रभो! बताओ तो आप कहां चले गये? आपने कौन से स्थान को मुकुटमणि बना दिया? कौन से भाग्यशाली लोक को पावन कर दिया? हे देव! आपके दर्शनों के बिना आज सारा आश्रम विह्वल हो उठा है आज सारा आश्रम आहि २ कर रहा है वियोगाग्नि से दहक रहा है। जो वृक्ष लता फूल आदि कभी आपके स्नेहामृत से पले थे आज वे बहुत ही दीन होकर तथा पागल होकर आपको पुकार रहे हैं।

इस मरु प्रदेश में यह छोटे से उपवन के रूप में जो कभी आपकी कृपा कोर के नीचे पलता रहा था हे देव! आपने ऐसे समय में उसका परित्याग करके न जाने कौनसे लोक विशेष में किस उपवन की शोभा बढ़ाने के लिये पदार्पण कर दिया। हे प्रभो! कौनसा ऐसा भाग्यशाली उपवन है जिसके भाग्योदय करने के लिये आपने प्रस्थान किया है?

जब आपकी गाड़ी संगीतमयी आवाज करती हुई इधर उधर घूमती थी तो वह सारे आश्रम का तथा वृक्ष लतादि का शृंगार करती चली जाती थी। सारे आश्रम को चमत्कृत करती हुई तथा प्राणि मात्र में प्रफुल्लता प्रदान करती थी, एक विशेष ही प्रकार का नव जीवन तथा उत्साह भरतीहुई स्वर्गीय आनन्द प्रदान करती थी। हे प्रभो! आज उसके बिना आश्रम निर्जीव, निराश तथा सूना २ दिखलाई दे रहा है। आज उस स्वर्गीय आनन्द की रह २ कर याद आ रही है। हे देव! क्या कभी फिर इस जीवन में उस स्वर्गीय दृश्य का केवल एक बार भी अवलोकन नहीं होगा? क्या सचमुच ही उस अलौकिक आनन्द की प्राप्ति जीवन में कभी भी प्राप्त नहीं होगी? क्या इतनी निर्लेपता, इतना अन्तर, इतना परित्याग? प्रभो! नहीं असह्य हो उठेगा, सारी सोई हुई पीड़ाएं आर्त्त-नाद करने लगती हैं। हे प्रभो! जो गौवें आपकी कृपा कोर के नीचे पलती ही नहीं थी वरन् पूजीत थीं आज वे चिर परिचित गाड़ी की ध्वनि सुनने के लिये तथा भक्त मूर्ति के दर्शन लाभ करने के लिये व्याकुल और बेसुध हो कर अपनी मूक भाषा में न जाने क्या कह २ कर पुकार रही हैं। मृग मयूरादि भी इधर से उधर कुंजों में ढूंढते फिरते हैं परन्तु कहीं पर भी न पाकर मयूर भी चीत्कार करने लगते हैं। हे प्रभो! हे देव! कितना करुणामय दृश्य है ये वृक्ष लता गुल्मादि भी विक्षिप्त से हो कर कभी आपके आगमन के हेतु अपने को पुष्पों और पल्लवों से सुशोभित कर लेते हैं और कभी आपके वियोग में पत्र-पात द्वारा आंसू बहाने लगते हैं। राम सरोवर भी जो उछल २ कर हिलोरें मारता था आज शिला की भान्ति निस्तब्ध पड़ा हुआ दृष्टि गत होता है।

यदि कभी तरंगे उठती भी हैं तो दुःख से भरी हुई वियोग के तूफान से उठी हुई तथा हृदय की आग बढ़ाई हुई।

आपकी वाणी कितनी अमृत सिक्त कितनी मधुर और कितनी सरस थी जिसके प्रवाह में स्वतः ही मनुष्य के हृदय में आनन्दोद्रेक हो जाता था। जब आप उपदेशामृत पान कराते थे तो उसका कुछ अद्भुत ही प्रभाव होता था जिससे चंचल मन भी स्थिर हो जाते थे साथ ही सुनने के लिये अधिकाधिक रुचि बढ़ती ही चली जाती थी। एक गूढ विषय को भी आप इतना सरल बना देते थे और उसे बातों २ में ऐसे कह जाते थे जिसको सुन कर चित्त चमत्कृत हो जाता था। उन दिव्य उपदेशामृत का पान करते २ हृदय हिलोरें मारने लगता था। आपकी भव्य मूर्ति के दर्शन करते ही हृदय के अन्दर एक अकथनीय और अद्भुत शान्ति होती थी। सब इच्छाएं बिल्कुल शान्त हो जाती थीं। अरुण और विशाल तेजोमय नेत्र होते हुये भी सर्वदा दया और स्नेह से स्निग्ध रहते थे सर्वदा ही प्रेमवारिधि सा उनमें से उमड़ता हुआ प्रतीत होता था। दर्शन करते समय बहुत ही आनन्दानुभव तथा ऐसा प्रतीत होता था मानों सारे जन्म जन्मान्तरों के पाप नष्ठ हो कर हम हजारों यज्ञों के फलों का उपभोग कर रहे हैं। आपकी दिव्य और भव्य मूर्ति को देख कर मनुष्य आकर्षित सा हो कर निरन्तर ही उस दिव्य और जग दुर्लभ सौन्दर्य से स्निग्ध मूर्ति को देखने की इच्छा होती थी। परन्तु उन विशाल नेत्रों में स्नेहाधिक्य होते हुये भी इतना तेज और वे इतने ज्योतिर्मय थे के आंखों को उनके सामने झुक जाना ही पड़ता था। प्रभो! क्या वे कमल लोचन चन्द्रमा से भी अधिक शीतलता प्रदान करने वाले आश्रम वासियों को स्नेह भर कर फिर नहीं मुस्करायेंगे? क्या अब एक बार आंख भर कर भी इन अतृप्त अभागे नेत्रों को दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं होगा? क्या सचमुच ही आप इतने निर्लेप हो जाओगे? क्या इतनी महा कठोरता धारण कर लोगे? नहीं प्रभो नहीं। दया करो, हे देव! फिर इस ... ...

आशा हीन अज्ञान अतिर में, स्खलित, दीन दुखिया की ओर।
दया दृष्टि दे नाथ करेगा, कहो! कौन करुणा की ओर॥

हे देव! यदि आप ही इतने निर्मोही हो जायेंगे तो इस असार संसार के घोर तिमिरान्धकार में दीन और पतितों का कौन सहायक होगा? तुम्हीं कहो देव! आप कौन से निकुंज या वन या उपवन में जा छुपे हो। क्या आप महान् दया सागर होते हुई भी तनिक भी कृपा कोर नहीं करोगे?

खोज रहे हैं हम सब मिलकर, रो रो कर प्रभु बारम्बार।
कहां मिलोगे अब तुम हमको, बतलादो हे करुणागार॥

निष्काम योगी

[ले० हिरानन्द ब्रह्मचारी]

हे सर्व शक्तिमान् परमेश्वर आप की लीला अपार है, गुरुदेव आपको अनन्त बार नमस्कार है। हमें स्वप्न में भी ख्याल न था जो दिन आप के बिना हम देख रहे हैं। श्री १०८ परम पूज्य परमहंस श्री महाराज जी का निज रूप में समाना

हमारे लिये ही नहीं, बल्कि समस्त मनुष्य जाति के लिये महान् दुःख कारक हुआ है। श्री महाराजजी ने हमारे कल्याण के लिये जो प्रान्त सब प्रान्तों से गिरा हुआ था उस में भगवद्भक्ति आश्रम की स्थापना की मनुष्य मात्र में प्रेम बढाने के लिये धार्मिक शिक्षा दी। सब मनुष्य परमात्मा के पुत्र हैं सब को अपनी आत्मा समझ कर प्रेम किया। भगवान् श्रीकृष्ण प्रेम के अवतार थे। परन्तु जिसने श्री महाराज जी के दर्शन एक बार भी कर लिये, वह इन के प्रेम बन्धन से बन्ध गया श्रीमहाराज जी के नेत्रों में ऐसा प्रेम का जादू था जिस किसी पर अपनी दया दृष्टि फेरी, सदा के लिए निहाल किया।

दया तो भगवान् बुद्ध से कहीं बढ़ चढ़ कर थी। जब कभी किसी बीमार वा दुःखी को देखते अथवा सुनते स्वयं जाकर उसके दुःख का निवारण करते चाहे आप आराम करते हों अथवा भोजन, सब छोड़ कर दीन दुःखियों को मधुर वचनों द्वारा सन्तुष्ट करते। आप कहा करते बीमार व दुःखी भगवान् का रूप हैं इन की सेवा करना भगवान् की सेवा करना है श्री महाराज जी ने कितने ही मरते हुए प्राणियों को जीवन दान दिया जो अब भी वर्तमान हैं। कल्पवृक्ष के समान सब के मनोरथ सिद्ध किये।

ब्रह्मचारी और देवियों को ब्रह्मचर्य्य की शिक्षा देकर, प्राचीन ऋषि, मुनी, तपस्वियों के आदर्श पर चला कर कलियुग में सत्युग का दृश्य दिखलाया। नास्तिकों को आस्तिक, स्वार्थियों को परोपकारी, अभक्तों को भक्त, दुराचारियों को सदाचारी, कृपणों को उदार, किया दीनों को अपनाया, प्रेम का पाठ पढाया। कंटक मय भूमि को सुन्दर उद्यान के रूप में बनाया। हज़ारों वृक्ष लगवाये रात दिन गाड़ी में घूम कर आश्रम के स्थावर और जंगम सब का ही पुत्रवत् पालन किया। विद्योपार्जन के लिये पाठशालायें खुलवाईं। जिनमें मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें। अछूतों की उन्नति, ग्राम्य सुधार के लिये प्रेरणा की, आपस के वैमनस्य मिटा कर शान्ति स्थापित की। अकाल से पीड़ित गौवों को बचाने के लिये महान परिश्रम किया। गोवंश की उन्नति हित, आदर्श गौशाला स्थापित करके गायें अधिक दुधार बनाईं। जल का अभाव मिटाया, रामसर तीर्थ खुदवाया। खारी जल को मीठा किया, सन्तप्त हृदयों को सन्तुष्ट किया।

शिमला में सत्संग सभा स्थापित कर, पश्चिमि सभ्यता से रंगे हुए स्त्री, पुरुषों को एकत्रित कर ईश्वर के प्रेमी, गायत्री मन्त्र के उपासक बनाये। जाति, पाति के झगड़ों को मिटा हिन्दु, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि सब को इस सभा में सम्मिलित कर एक दूसरे से सहानुभूति करना सिखाया। देश के कल्याण हित, कबीर जी, मीराबाई, नानक जी, तुलसीदासजी, सूरदास, आदि जीवन मुक्त महात्माओं के शब्दों का संग्रह करा कई हज़ार पुस्तकें अमूल्य बटवाईं। श्री १०८ परम पूज्य श्री महाराज जी ने देश धर्म के हित आश्रम स्थापित करके महान उपकार किया है। जिनके हम सदा के लिये ऋणी रहेंगे।

गायत्री मन्त्र जो कल्याण कारक मोक्ष का देने वाला है। उसका सत्य और सरल अर्थ किया। सब को गायत्री मन्त्र का उपदेश दिया। एक लाख से अधिक गायत्री मन्त्र की पुस्तकें छपवाकर बिना मूल्य बटवाईं। कई हज़ार दीन, दुःखी निराश्रित,

अन्धों को आपने नेत्र प्रदान किये। आश्रम में तथा अन्य लगभग १५ स्थानों में भारत के नेत्र विशेषज्ञ डाक्टरों को उपदेश देकर बिना किसी फीस के, मनुष्य मात्र की आंखें बनवाई और औषधियां बटवाईं। कई स्थानों पर नेत्र सुधारक समिति स्थापित की। श्री १०८ परम हंस परम पूज्य श्री महाराज जी के कृत उपकारों का वर्णन करना, मेरे लिये सूर्य्य को दीपक दिखाना है। अब श्रीगुरुदेव के चरणों का ध्यान करता हुआ सब से प्रार्थना करता हूं। प्रत्येक मनुष्य का लक्ष्य परमात्मा के दर्शन करना है। गुरोपदेश के बिना होना असम्भव है। सदाचार मनुष्य जीवन के लिये सब से बड़ा धर्म है। श्री १०८ परम पूज्य श्री महाराज जी ने अन्तिम समय में सब के कल्याण के लिए लिखवाया है जो कोई इस सदाचार पर चलेगा अवश्य लक्ष्य की सिद्धि प्राप्त करेगा।

अनुपम ब्रह्म ऋषि

[ले० प्यारेलाल उपदेशक]

श्री १०८ महाराजाधिराज जी का दर्शन मैंने सं० १९८२ में किये थे। श्री महाराज जी के शरीर में कभी भी क्रोधादि वेग नहीं देखे जो कलायें श्री कृष्ण, रामचन्द्र जी में थी। वह ही कलायें श्री महाराज जी में थीं। जो मनुष्य श्री महाराज जी के दर्शन करने आते थे उनका अन्दरूनी भाव वह जान जाते थे। उनको जैसे उनके भाव होते थे उसी के अनुसार उनको उपदेश देते थे। मैं दो बार श्री महाराज जी के चरणों में शंका उत्पन्न करके गया और श्री महाराज जी ने उन्हीं शंकाओं का बिना पूछे समाधान किया। मुझे जब ही से निश्चय होगया कि श्री महाराज जी साक्षात् भगवान हैं। श्री महाराज जी का विपुल शरीर था, चक्षु विशाल थे। भुजायें लम्बी लम्बी थीं, जैसा श्री महाराज जी का शरीर था ऐसा मैंने कहीं नहीं देखा और श्री महाराज जी ने चोला पलटने के बाद मुझे स्वप्न में दर्शन दिये। मैं रियासत अलवर की तरफ उपदेश करने गया था, मैंने वहां पर यह प्रबन्ध कराया कि गौ, व बूढा बैल व बेकुटा, बेनथा बछड़ा ये बूचड़ों को न देने चाहियें। जब कि मैं १५ ग्रामों में यह प्रबन्ध कर चुका तब मैं एक ग्राम में सो रहा था जब कि रात के तीन बजे मेरे को स्वप्न हुवा कि यहां से तुम चले जाओ यहां आदमी आते हैं। मैंने उसी समय उठ कर अपने साथियों को जगाया और मैंने कहा कि मुझे यह स्वप्न आया है। मेरे साथी कहने लगे स्वप्न झूठा होता है, मैं फिर सोगया। १० मिनट के बाद मेरी गर्दन पकड़ कर उठा दिया और कहा कि तुम यहां से दूसरी जगह चले जावो। और श्री महाराज जी का चित्र मेरे नेत्र के सामने फुरा मैं उसी वक्त अपने साथियों को जगा कर वहां के नम्बरदार के नोहरे में जा बैठा और नम्बरदार को जगाया और उसको यह स्वप्न सुनाया। थोड़ी देर में सात

आदमी आये और पहले जहां मैं सोता था वहां गये जब मैंने देखे तब आवाज दी और वे भाग गये। जिस दिन से मेरे को निश्चय हुवा कि श्री महाराजाधिराज जी सूक्ष्म रूप से आश्रम में मौजूद हैं। श्री महाराज जी ने सब भक्त जनों के लिये श्री भगवद्भक्ति नामक आश्रम की नींव डाली। जिस में ब्रह्मचर्य आश्रम व कन्या पाठशाला, महिला मण्डल, दलितोद्धार पाठशाला, गोशाला, औषधालय वानप्रस्थाश्रम आदि अनेक संस्थायें हैं जिन में देशोपकारी कार्य होते हैं। श्री महाराज जी के चरणों में जो आगया वो निराश नहीं गया। श्री महाराज जी बड़े दयालु थे और भक्तों की सहायता करने वाले थे श्री महाराज जी ने एक कंटक मय भूमि में श्री भगवद्भक्ति आश्रम में अपनी माया प्रकट करके दिखा गये। श्री महाराज जी ने गौ शाला बनाई है जिसे आप देखें कि जिसमें गौवें व बछड़े अति सुडौल नसल के विद्यमान् हैं। ऐसी गौशाला अन्यत्र देखने में नहीं आती और श्री महाराज जी का गौवों की तरफ बहुत ध्यान था।

दिव्य आत्मा

[ले० कुमारी दुर्गा देवी]

श्री १०८ श्री परम पूज्य महाराज जी, सर्वज्ञ सकल जगत् के उत्पादक, पूजनीयतम् पाप विनाशक सबकी रक्षा करने वाले, आनन्द स्वरूप, सबके परम पिता, सब के अन्तःकरण की जानने वाले, विज्ञान स्वरूप, परब्रह्म अविनाशी थे। वे ज्ञानमय और अनन्त सामर्थ्य वाले, तीनों लोक तीनों कालों की जानने वाले थे। सूर्य्य चन्द्र दिव्यलोक, पृथ्वी लोक अन्तरिक्ष और सब लोक लोकान्तरों के जानने वाले थे, वे स्वतन्त्र हमारे राजा और हमारी रक्षा करने वाले, हमारे परम स्वामी थे। अज्ञान अंधकार के परे, सुख स्वरूप, प्रलय के पश्चात् रहने वाले, दिव्य गुणों के साथ २ सर्व व्यापक थे। वे जीव मात्र पर दया दृष्टि रखने वाले, भक्तवत्सल भगवान् के अवतार थे। श्री महाराज जी निर्लेप, सर्वान्तर्यामी, हमारी सांसारिक विपत्तियों को दूर करने वाले, इस संसार को वश में रखने वाले, अपने सहज स्वभाव से इस सूक्ष्म जल के पीछे काल के विभाग अर्थात् दिन रात की गति को उत्पन्न करने वाले थे। उनकी दृष्टि बड़ी ही अलौकिक थी। सबके दुःख को दूर करने वाले, अनाथों के नाथ, पतितोद्धार करने वाले, द्यु लोक पृथ्वी और अंतरिक्ष के धारण करने और चलने वाले, तथा न चलने वाले, प्राणियों के उत्पादक तथा आत्मा थे। श्री महाराज जी वो उच्च से उच्च आत्मिक, बलवान शक्ति थी, जिस तक हमारी हृदय की आंखें देख सकती हैं या समझ सकती हैं। वे किसी एक देश या काल के व्यक्ति नहीं थे, वे साक्षात् महादेव के अवतार थे।

वे ध्येय, गेय, अज्ञेय थे, निज भक्त पर अनुरक्त थे।
वे भव विमोचन पद्म लोचन पुण्य वृक्षासक्त थे॥

वे एक होकर भी अहो ! रखते अनेकों वेश थे।
आदन्त हीन अचिन्त्य, अद्भुत आप भू अखिलेश थे॥

श्री महाराजजी अपने अमूल्य उपदेश लोगों को बहुत कुछ सुनाया करते थे, वे कहते थे कि मनुष्य के पास पौरुष, साहस, सत्य, न्याय, श्रद्धा, करुणा, उदारता, सुशीलता, सज्जनता, धर्म और क्षमा आदि गुण ईश्वर ने धरोहर रूप में रख छोड़े हैं, वे कहते थे समयानुसार व्यय करना चाहिये। जो मनुष्य इनमें से एक भी व्यय नहीं करे तो समझो वो मनुष्य ईश्वर के साथ विश्वासघात करता है। श्री महाराज जी सब मतों की अच्छी २ बात मानने के लिये सभी से उपदेश करते थे। उन्होंने स्त्री पुरुष को एक माना है। श्री महाराज जी ने वेदों के पढ़ने में समानाधिकार दिया है और प्रत्येक कार्य में स्त्री पुरुष के समान ही कार्य कर सकती हैं, यह उन्हीं की दया है। बड़े २ पण्डितों, वैज्ञानियों ने स्त्री जाति के लिये गायत्री मन्त्र का जपना निषेध किया। किन्तु श्री महाराज जी ने वेदों का उदाहरण दे देकर सबको समझा दिया और कहा कि भगवान ने स्त्री पुरुष में कोई भेद भाव नहीं किया। श्री महाराज जी ने इस श्मशान और कंटक मय भूमि को सुरम्य उपवन के रूप में परिवर्तित किया इस उपवन के बीच में पथिक जनों के लिये सुन्दर २ लम्बी चौड़ी सड़कें बनवाईं। उनके दोनों ओर एक २ पंक्ति में सुगन्धित और रोग नाशक वृक्ष लगवाये, उन्हीं वृक्षों पर लता, फूल आदि की बेल चढादी थी दूर से यह आश्रम स्वर्ग के समान दिखलाई देता है। श्री महाराज जी ने दुःखियों को सुखी, रोगियों को निरोग, अन्धों को आंखें बनवाईं। तन, मन, धन, बल, बुद्धि, ज्ञान, भक्ति, विद्या, पुत्र, जीवन इत्यादि वस्तु जिस किसी ने उनसे प्रार्थना करके मांगी उसको वो ही चीज प्रदान की। श्री महाराज जी की महिमा अनन्त और अपार है।

पूर्ण सत्गुरु

(ले० श्री मतीविद्या देवी जैन)

सब धरती कागज करूं लेखन सब बन राय।
सात सिन्धु की मसी करूं गुरु गुण लिखा ना जाय॥

जिस भी मनुष्य ने श्री १०८ परम पूज्य महाराज जी के दर्शन किये हैं वे बड़े भाग्यशाली हैं उन्होंने कभी अच्छे पुण्य किये होंगे। राम कृष्ण और भी जो भगवान के अवतार हो चुके हैं उनका परिचय हमें मालुम है कि वह किसके पुत्र थे। क्या उनका स्थान था लेकिन श्री पूज्य महाराज जी के विषय में किसी को ज्ञात नहीं कि वह किसके अवतार थे ? क्या इनका जन्म स्थान था ? कोई उनको महादेव जी का अवतार मानते हैं। परन्तु निश्चय से किसी को उनका पता नहीं उनकी लीला ही अद्भुत थी। श्री १०८ महाराज जी सम्पूर्ण संसार के हित चिंतक थे। जिस प्रकार बालक को अपने माता पिता के सिर के ऊपर किसी प्रकार का फिकर नहीं रहता इसी प्रकार श्री १०८ महाराज जी के सामने हम सब को फिकर नहीं था। छोटा सा बालक भी महाराज जी से अपनी बातें जाकर कहता था सबके लिये सीधा तार लगा हुआ था

श्री १०८ महाराज जी सबकी बात बड़े ध्यान से सुनते, और कोई अनुचित बात होती तो उसे बड़े मीठे शब्दों में समझा देते थे। मुझे आश्रम में रहते हुए कई साल व्यतीत होगये हैं लेकिन मैंने कभी श्री महाराज जी के मुखारविन्द पर उदासी नहीं देखी, हर समय मुखारविन्द पर प्रसन्नता झलकती रहती थी। यह जो इतना बड़ा आश्रम बना हुआ है और इसमें जितने वृक्ष हैं सबका हर समय ख्याल रखते थे कि कोई वृक्ष सूख तो नहीं गया है। दयालु इतने थे कि किसी के दुःख को जरा भी नहीं देख सकते थे। जानते कि अमुक आदमी को कुछ तकलीफ है तो उसी समय चाहे भोजन करना रह जाय परन्तु पहले वहां जाते थे और बड़े प्रेम से पूछते तुझे क्या बीमारी है? श्री महाराज जी उसके लिये अपने मुखारविन्द से जो इलाज बता देते थे उसको उसी से आराम हो जाता था। अंतर्यामी ऐसे थे कि बिना प्रश्न किये ही सबका उत्तर बतला देते थे। वह परम कृपालु थे? हर एक मनुष्य चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो सबको एक दृष्टि से देखते थे। और जिस मनुष्य को किसी बात का भी ज्ञान नहीं था उसको भी आश्रम में भर्ती कर लेते थे और श्री १०८ महाराज जी का अत्यन्त कृपा से वह अनायास ही सब कुछ सीख लेता था। उन्होंने श्री भगवद्भक्ति आश्रम ऐसे नमूने का बनाया है कि आज कल वर्तमान युग में आप सारे भारतवर्ष का भी ध्यान करो तब भी आपको ऐसा अनुपम दृश्य कहीं नहीं मिलेगा।

देवता स्वरूप श्री महाराज जी

[ले० श्री बनारसी दास जी सराफ]

श्री १०८ महाराज जी इस कलियुग की अरनी में शीतल जल की समान देवता स्वरूप महान आत्मा थे और पाप मय जगत् के उद्धार के निमित्त विद्यमान हुवे थे। श्री १०८ महाराज जी ने अपने अनमोल उपदेशों और अपने उच्च पवित्र जीवन से हमारे जीवन में परिवर्तन पैदा किया और हमें जीवन के रहस्य को समझने की शक्ति प्रदान की। आपका लगाया हुवा आश्रम रूपी कल्पवृक्ष सदा के लिये संसारी पुरुषों को कल्याण कारी अमृत फल को देने वाला मौजूद है। श्री १०८ महाराज जी महान आत्मा थे और इस कलियुग में देश के अन्दर भक्ति की लहर पैदा करने के लिये आये थे। आपने हमारे जैसे तुच्छ बुद्धि वाले अधम पुरुषों के जीवन में धार्मिक भाव पैदा किये। आश्रमों की रचना करके आपने जनता के उद्धार का सहारा बना दिया श्री १०८ महाराज जी के वियोग को विचार रूपी सागर में गोता लगा कर महाराज जी के उपदेशों को ग्रहण करके वियोग की अनुभुति करें। श्री १०८ महाराज जी के जीवन और उपदेशों में हमें यही शिक्षा मिली है कभी किसी पर क्रोध नहीं करना और हर समय प्रसन्न चित्त रहना, निष्काम भाव से दूसरों की सेवा सुश्रूषा करना, लड़की और विधवाओं को उच्च शिक्षा देकर उनका महान आदर करना, पूंजी पतियों और गरीबों का भेद भाव छोड़ कर सब के साथ समान बर्ताव करना जो बात बुद्धि

में जम जावे उस पर अटल रहना, श्री १०८ महाराज जी के विचार उच्च कोटि के थे और उनका उद्देश्य प्राणी मात्र का कल्याण करना था, श्री १०८ महाराज जी आश्रम के जन्म दाता थे, आश्रम में जलाशय यानी तालाब कुवें, गोशाला, अतिथीशाला, प्रेस, कन्यापाठशाला, ब्रह्मचारी आश्रम, गोचर भूमि आदि जो भी शोभा आश्रम में इस समय विराजमान है वह सब श्री महाराज जी की असीम कृपा व आत्मिक शक्ति का प्रकाश है। बीस बारह साल से जो आश्रम की रचना महाराज जी ने की व मनुष्य शक्ति के बाहर है यानी देव शक्ति का काम है। वर्तमान युग में महाराज जी महान् आत्मा थे और उनका उपदेश देव वाणी थी जो कि पत्थर दिल पर भी असर किये बिना नहीं रहती थी और महाराजजी ने अनगिनत मनुष्यों को सत्मार्ग दिखला कर उस पर अटल रहने की शक्ति प्रदान की। आशा है श्री महाराज जी के भक्त भावी युग में महाराज जी के उपदेशों को धारण करके महाराज जी के पथ पर चल कर उनके लगाये हुवे कल्प वृक्ष रूपी आश्रमों को तन मन धन से सेवा करके उनकी आत्मिक शक्ति के प्रकाश को जगमगाता रक्खेंगे।

हमको दर्शन दो

[ले० कुमारी भगवती देवी आयु ११ वर्ष]

सब आश्रम वासी तड़फ रहे महाराज जी हमको दर्शन दो।
यह दिल में सबके लगी हुई महाराज जी हमो दर्शन दो।
सब भक्त तुम्हें हैं पुकार रहे महाराज जी हमको दर्शन दो।
भक्ति और ज्ञान सुना करके महाराज जी हमको दर्शन दो।
इक बार आपके दर्शन की बस प्यास हमारे दिल में है।
इतनी पुकार को सुन करके महाराज जी हमको दर्शन दो।
सब गौवें तुम्हें पुकार रही इक बार इन्हें दर्शन दे दो।
गो—बच्छे बाट निहार रहे इक बार इन्हें दर्शन दे दो।
सब वृक्ष तुम्हें हैं पुकार रहे महाराज जी हमको दर्शन दो।
हम चरणों में हैं पड़े हुये महाराज जी हमको दर्शन दो।

मेरे हृदय के स्वामी

समस्त प्रकृति जिनकी दासी है, जो त्रिभुवन के स्वामी हैं, जड़ और जंगम अपनी स्थिति से जिनका सुन्दर रूप प्रदर्शित कर रहे हैं, प्राणी मात्र अपने हृदय से जिनकी कृतज्ञता को अनुभव करते हुए भिन्न २ वाणियों से जिनका यशोगान कर रहे हैं ऐसे दयालु, कृपालु और प्रेम के सागर प्रातः वन्दनीय, सर्व पूज्य श्री महाराज जी के चरण कमलों में अनन्त वार नमस्कार हो।

वह क्या थे यह मैं किसी को क्या बताऊं? इसे कौन समझे? और समझे भी कैसे बताने के कोई साधन भी तो नहीं। जो नामी होता हुआ अनामी हो उसका वर्णन वाणी कैसे करे? जो परं सौन्दर्य होता हुआ अरूप हो उसका प्रकाश इन्द्रियों द्वारा कैसे सम्भव हो? तुलसीदास जी रामायण द्वारा और सूरदास जी सूरसागर द्वारा जिनको वर्णन करने में असमर्थ रहे उसका वर्णन यह सेवक वियोगांक के ही पृष्ठों द्वारा कैसे करे? उन्होंने अपनी लीलाओं द्वारा जैसा अपने को प्रगट किया वैसा हम सब ने देखा। अनन्त गोपनीय और गूढ़ होते हुए भी अपना पूर्ण प्रकाश किया। जैसा जिसको जनाया वैसा उसने जाना, जैसा जिसको बताया वैसा उसने गाया और भविष्य में भी गावेगा।

सत्यं शिवं सुन्दरम्।

अपनी सत्ता से जन्म धारण करके भी कमलवत् रहना। अखण्ड ब्रह्मचर्य से देदीप्यमान पुष्पवत कितना विकसित सुन्दर और मनमोहक शरीर कि नज़र एक वार पड़ कर उठना ही नहीं चाहती। मुख मण्डल विष्णु की भान्ति तेजोमय, सुन्दर, सुरस, कोमल, शान्त, गम्भीर और अत्यन्त आकर्षक; ललाट शिव के सदृश्य विशाल और पूर्ण उन्नत। जटाएं साक्षात शंकर तुल्य। आंखों का क्या कहना बालक की सी दृष्टि वाली, हिरणों को शरमाने वाली, लाल डोरों वाली प्रेम रस में झोवा झोव, करुणा, दया और आनन्द का मेघ बर्षाने वाली थीं और उनमें से निकलने वाली अत्यन्त दया की दृष्टि जिस पर एक वार पड़ जाती थी उसे ही निहाल कर देती थी। जीव के अध्यात्म क्षेत्र में प्रवेश कर उसके कारण सूक्ष्म और स्थूल शरीर के समस्त विकारों को नष्ट कर उसे प्रेम रस की चाशनी पिला, अभय पद की ओर अग्रसर कर ज्ञान की सड़क पर सवार कर आनन्द और शान्ति के समुद्र का पथ गामी बना देती थी। इस दृष्टि के पड़ते ही जीवात्मा की माया का परदा फट जाता था और जितनी देर मनुष्य दर्शन करता रहता था वह वाह्य ज्ञान शून्य हो जाता था और अपने को अभय, शान्त और विकार रहित अनुभव करता था।

मुख मण्डल की शोभा क्या वर्णन करूं! स्वर्ण जैसी आभावाले, सूर्य जैसे तेज वाले और चन्द्र जैसे शान्त और शीतल मुख मण्डल को श्री महाराज जी सदैव बालों से ढांपे रहते थे फिर

भी मनुष्य दर्शन करते ही चकोर की भान्ति मुखड़े पर दृष्टि जमा देते थे और पलक तक गिराना भूल जाते थे। यह दशा देख श्री महाराज जी या तो उनको किसी काम में लगा देते थे या बातों में लगा लेते थे शायद इसका यह कारण हो कि यह संसारी मनुष्य शक्ति से अधिक आनन्द रस को पीकर उन्मत न हो जावें और अपने बाल बच्चों को छोड़ यहीं गाड़ी के पीछे २ फिरने लगें। आहा! मुखड़े की उस छवि का क्या कहना जो क्षौर कराने के पश्चात् अवलोकित होती थी। धन्य हैं वह मनुष्य जिनको उस समय के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। चूमने के लायक हैं वह हाथ जो इस पुण्य कर्म्म को करने के अधिकारी थे। उस समय के दर्शन अलौकिक थे। मुखड़ा क्या था जिस प्रकार नव-विकसित कली अपना विकाश करने के लिए चारों तरफ से फूट २ कर निकलती है उसी प्रकार रोम २ से आनन्द फूट २ कर निकलता दिखाई देता था और ऐसा प्रतीत होता था मानो ज्वार भाटे का समुद्र उमड़ रहा है और आनन्द व प्रेम रस की हिलोरों से दर्शक के हृदय को आनन्द और प्रेम से भर रहा है।

ग्रीवा हंस के समान लम्बी और युवान सिंह से अधिक पुष्ट थी और जिसमें अत्यन्त विकसित बल पड़े हुए थे। दोनों स्कन्ध वृषभ के स्कन्ध तुल्य थे और वक्षस्थल शेर की छाती के समान था। जंघाओं के दर्शन करने का सौभाग्य किसी विरले ही को प्राप्त होता था परन्तु जिस भाग्यशाली को ऐसा अवसर मिला है वह यही कहता है कि दर्शन करते ही हाथी की सूण्ड आखों के सामने आ उपस्थित होती थी।

पूर्ण ब्रह्म ने अपनी माया का सम्पूर्ण गुणों सहित चोला धारण करके स्थूल शरीर की रचना की थी फिर उसमें कमी किस बात की होती? जिस किसी ने दर्शन किए उसने यही कहा "मैंने आज तक ऐसी मूर्ति के दर्शन कभी नहीं किए" श्री महाराज जी का सत्य स्वरूप था। जैसे सत्य त्रिकाल में अबाधित होता है वैसे ही वह थे और जैसे थे वैसे ही सदैव रहे।

वह शिव रूप थे। प्राणी मात्र का अत्यन्त कल्याण करने वाले, सब को अपना आपा समझने वाले अहर्निश जगत के हित और कल्याण में रत। आप कष्ट सहकर दूसरों को आनन्द देने वाले और सब पर अमृत की वर्षा करने वाले थे।

उनके रूप

उनके रूपों की संख्या तो क्या हो सकती है परन्तु कहने सुनने और समझने के लिए कुछ कहना चाहिए और अन्तरात्मा की तो बात यह है कि उनकी याद, उनका ख्याल, उनका जिकर, उनका फिकर सब आनन्द के दाता हैं अतएव अपना आत्मा रूप अपने प्यारे भातृगण और बहनों के हित और आनन्द के लिए सेवक सूक्ष्म से कुछ स्तुति करता है।

आनन्द स्वरूप

श्री महाराज जी का आनन्द स्वरूप था। जो दर्शन करता था उसका हृदय आनन्द से भर जाता

था। श्री महाराज जी के शरीर से आनन्द की लहरें निकल कर अत्यन्त दुःखी हृदय को भी आनन्दित कर देती थीं, दर्शक की समस्त चिंताएं काफूर हो जाती थी, वह संसार को भूल कर बे सुध सा हो जाता था, कैसा भी संसार में फंसा हुआ जीव हो वह यही चाहता रहता था कि कुछ देर और यहां बना रहूं। उस वायु मण्डल से हटने को उस जीवका आत्मा चाहता ही नहीं था। उनका रूप आनन्द का, उनकी वाणी आनन्द की वर्षा करने वाली और वह आनन्द स्वरूप थे।

शान्त स्वरूप

वह शान्त स्वरूप थे। अत्यन्त क्षुभित हृदय और परेशान दिमाग का मनुष्य भी जितनी देर गाड़ी के सामने खड़ा रहता था अत्यन्त शान्ति का अनुभव करता था। उसका रूप शान्तरस से भरपूर हो जाता था। उनकी समीपता की बात ही क्या है जो लोग आश्रम में आकर कभी रहे हैं उनमें से मिस सिलेड मीरां बहन के यह शब्द हैं "मैं जब से भारत वर्ष में आगई हूं मुझे जो शान्ति आश्रम में मिली है वह कहीं नहीं मिली"।

योगी

उनके ज्ञान की महिमा कौन वर्णन करे! जिसने उपदेश सुना उसने यही कहा कि यह तो ज्ञान का भण्डार हैं। यदि कभी किसी विचारवान या जिज्ञासु को उपदेश का कभी अवसर मिल गया तो वह यही कहता गया "जिसके जानने से सब कुछ जाना जाता है यह उस ज्ञान के स्वामी हैं। इन्होंने समस्त प्रकृति को जय करके ब्रह्म का साक्षात्कार किया है अतएव यह सब कुछ जानते हैं।" अत्यन्त मूढ़ से लेकर उच्चकोटि के दार्शनिक तक सब ही की झोली सदैव भरपूर भरदी कभी किसी को खाली नहीं जाने दिया।

योगी

यदि यह जानने का हृदय में कौतुहल हो कि वह कैसे योगी थे तो स्वयं उनकी कथी हुई वाणी को सत्य-शब्दसंग्रह में बार बार पढ़ कर किंचित मात्र यह जान सकते हो कि वह कैसे योगी थे।

वाणी

स्पर्शों रग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी।

विचारवान पुरुषों को प्रश्न नहीं करना पड़ता था दर्शन करने के बाद थोड़ी ही देर में जिज्ञासु के संकल्पों का उत्तर शीघ्र श्री महाराज जी के श्री मुख से मिलने लगता था और लोग यह कहते जाते थे कि "हमको तो बिना प्रश्न किए ही उत्तर मिल गया" कितनी ही दूर स्थित भक्तों ने जब कोई संकल्प किया वह तुरन्त निवारण हुआ। वह परम योगी थे।

दाता

आहा! दाता के क्या कहने? पूर्ण ज्ञानी होते हुए भी बिलकुल भोले भण्डारी थे। देने में तो शंकर की भान्ति आगा पीछा ही नहीं देखते थे। सब कुछ दे डालते थे। जिसने जो मांगा उससे अधिक उसको दिया। जिसने दामन पसारा उसीका दामन भरपूर कर दिया। इतना देते थे कि कोई ले ही नहीं सकता था। जो आदमी अत्यन्त बुरी नीयत से उनके अत्यन्त प्रिय काम परोपकार में भी बाधा देने के लिए कोई पदार्थ मांगने आए तो

वह भी उनको आते ही एक बार की प्रार्थना पर ही दे दिया। सर्वस्व त्यागी थे उन्होंने सब कुछ दे दिया और कभी यह नहीं कहा कि देते हैं। इस सेवक के साथ एक संशयात्मा डाक्टर यह मांगने आया कि मुझे आत्मा के साक्षात दर्शन हो जावें। इतना अमूल्य पदार्थ बिना मांगे संकल्प मात्र से दे दिया। वाह रे दाता। तुमसा न कोई हुआ और न होगा।

धन्य है भोले भण्डारी, तेरे दर्शन की बलिहारी ॥

क्षमा स्वरूप

तेरी क्षमा की लीला भी अद्भुत है। तैंने कभी यही प्रगट नहीं किया कि तेरे सेवकों ने कोई कसूर किया है। तू क्षमा मांगने से पहले ही क्षमा कर देता था। क्षमा करने में तू दोष करने वाले के संकोच का इतना लिहाज़ करता था जितना माता भी नहीं करती। वाणी का तो जिकर ही क्या है तूने अपनी चेष्टा को भी कसूरवार के सामने ऐसा बनाए रक्खा के उसको सामने जाकर किसी प्रकार का संकोच न हो और उसके हृदय को कोई आघात पहुंच जावे क्यों न हो तू बड़ा दयालु भी तो है।

तेरे गुण कहां तक वर्णन करूं वह अनन्त हैं। अय मेरे स्वामी समाज में, नीति में, आचार में विचार में, उद्धार में, धर्म्म में, देश में, संसार में, दर्शन में, शास्त्र में, वेद में, उपनिषद् में सब में तुझको और तेरे जलवे को देखा। तू धन्य है, तुझे नमस्कार है, तुझे प्रणाम है।

अय मेरे मौला! तुझ में सब गुण हैं और एक से एक बढ़ कर है परन्तु मैं तो सब से अधिक तेरे प्रेम का कायल हूं। कहते हैं भगवान कृष्ण बड़े प्रेमी थे। हां थे और अवश्य थे क्योंकि ऐसा तैंने स्वयं कहा है परन्तु मैंने तो तुझे ही देखा है और इससे अधिक कोई होगा भी क्या? तैंने समस्त विश्व से प्रेम किया। तैंने प्रेम की गंगा का समुद्र बहाया। मनुष्य, पशु, पक्षी और वृक्ष सब तेरे प्रेम के वशीभूत तेरी तरफ खिंचे चले आए। तैंने उनको इतना प्यार किया कि वह घर वालों की सुधि भूल गए और तेरी गाड़ी के गिरद फिरने लगे। स्वतंत्र हिरण को हमने तेरे प्रेम में फंसा तेरी गाड़ी के पीछे २ फिरते देखा। बच्चों को तेरे बिछड़ने के एक दिन पहले तेरे वियोग में दुःखी होते हमने अपनी आंख से देखा। इतना प्रेम होते हुए भी मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि "है तू बड़ा छलिया और मायाधारी" तैंने बड़ी माया रची। तू मीठी २ बातें बनाता रहा और एक दम ऐसा खिसका कि सब सन्नाटे में रह गए। जिकर तो कैसा तैंने तो यह खयाल ही नहीं आने दिया मैं जा रहा हूं और तूने झट आंखें बन्द करलीं। मेरा रोना और हंसना दोनों बन्द होगए और मैंने विश्वास नहीं किया कि तू चला गया है। तू बोलता नहीं था, डाक्टर अपनी कहता था, दर्शक अपनी कहते थे। परन्तु मुझे विश्वास नहीं हुवा कि तू चला गया है। जब तुझे हम ले आए और हमने समाधि देदी फिर भी मुझे विश्वास नहीं आया कि तू चला गया है। मैं इसी उधेड़ बुन में रहा और मैंने कहा मेरे

महाराज गए नहीं हैं परन्तु मेरी बकवास कौन सुनता ? मैंने तेरी विनती की और तैंने मुझे याद दिलाई कि "मेरा दिया हुआ हथियार इस्तेमाल कर" मैंने तेरे से प्रार्थना की और तूने बताया कि देख मैं कहीं गया नहीं हूं तू उठ और वार्तालाप कर। मैंने तेरे दर्शन किए और मेरा हृदय शांत हुआ। तू गया कहीं नहीं तू तो सबके हृदय में समा गया है। तू तो मेरी याद में है। सब माया रख कर भी तू बड़ा प्रेमी है। याद करते ही हर समय मौजूद है। हां यह तेरी आज्ञा है कि "मेरे स्थूल शरीर का मोह छोड़ दो" अच्छा जो प्यारे की मरज़ी। तू इसी में राज़ी है तो यही सही। मैं तेरी प्यारी छबि को जैसे तू चाहेगा वैसे ही देखने की इच्छा करूंगा। तू बड़ा दाता है, तैंने छुट्टा दिया और मेरी कोई इच्छा तूने शेष नहीं छोड़ी इसलिए मैं तुझ से अब कुछ भी मांगना नहीं चाहता परन्तु इतना अवश्य मांगता हूं कि तू अपनी इस माया को अपने पास रहने दे इसे मेरे पीछे नहीं लगा और यदि तुझे यह बहुत ही प्यारी है और इसको अपने से परे किया नहीं चाहता तो इतनी बात अवश्य मान ले कि पहले अपने दर्शन दिया और पीछे माया के। अब मेरे प्यारे इंद्रियों से, मन से, बुद्धि से ज़र्रे २ और पत्ते २ में मैं तुझे हरदम दिखा करता रहूं केवल इतनी बात मेरी मानले फिर जो कहेगा वो मैं तुझे दूंगा।

—कृष्णानन्द

दया सागर श्री महाराज जी

[ले० श्रीमती रानी यशोदा देवी]

हे प्रभो ! आप कहां हो ? दीनों पर दया करने वाले, पतितों को उद्धार करने वाले आप कहां हो ? आपके बिना अब अधीर हृदयों को कौन सान्त्वना प्रदान करेगा। पथ से विचलित हुओं को कौन पथ पर चलायेगा। आप तो बहुत दयासागर तथा करुणा सागर थे आपका प्राणीमात्र पर अत्यन्त ही स्नेह था। यह सब आपकी ही महती दया का प्रतिफल है के इस ऊजड़ शुष्क भूमि में आश्रम जैसी जगह बनाकर उसको बहुत ही रमणीक तथा हरा भरा कर दिया है और मेरी जैसी जो के सर्वदा ही चार दिवारी के अंदर बन्द रहती थी, कभी ड्योढ़ी का दरवाज़ा देखने को नहीं मिलता था आज स्वतंत्रता से घूम फिर सकती है। यह आपकी ही अनूप अनुकम्पा है, करुणा कोर ही है के आज जिन हाथों से लिख रही हूं इनमें सौभाग्य की चूड़ियां भी आप की ही प्रदान की हुई हैं। जो स्त्री के लिये संसार में सबसे बड़ा सुख होता है मैंने तो आपकी ही

कृपा छाया से प्राप्त किया है। जब के बड़े २ डाक्टरों और वैद्यों ने साफ़ जवाब दे दिया था ऐसी डूबती हुई नौका को उभारने वाली आपकी ही कृपा कोर थी। आपके दर्शनों से अकथनीय अतुलानन्द प्राप्त होता था। आपकी कृपा दृष्टि मात्र से सब दुःख, शोक, चिन्तायें दूर हो जाती थी। अमृत वाणी की वर्षा करके सब सन्तापों को शान्त कर देते थे। परन्तु हे गुरुदेव! अब हमारी प्रार्थना को कौन सुनेगा? अब कौन हमारे कष्टों का निवारण करेगा? आपके वियोग से हमें महान् कष्टानुभव हो रहा है अपार दुःख हो रहा है। हे भगवन्! क्या अब भी आप इतनी ही दया रक्खोगे? मुझे तो पूर्ण विश्वास है के आप उतनी कृपा कोर रक्खोगे जितनी के पहले रखते रहे हो। हे प्रभो! मेरा सब प्रकार से आपने ही उद्धार किया है और आगे करते ही रहोगे। मुझे आपके चरणारविन्दों के अतिरिक्त दूसरा कोई आश्रय प्रतीत नहीं होता है। हे देव! हम आश्रम के मकान, वृक्ष, लता, फूल पत्ते, सब ही आपके यादगार हैं जिधर देखती हूं उधर आप ही याद आते हैं।

जीवन मुक्त श्री महाराज जी

[ले० श्री नन्दकिशोर जी श्री वास्तव एम० ए०, एल एल० बी०]

परम पूज्य श्री महाराज जी एक सिद्ध योगी थे। उनको सारी ऋद्धि सिद्धियां प्राप्त थी। परन्तु उनकी शक्ति ब्रह्म की शक्ति थी और इसी लिये सिद्धियों से बढ़ कर थी। उनमें चमत्कार था और उनके पास रहने वालों ने तथा उनके परम भक्तों ने उसे कई बार देखा भी वे सदैव ब्रह्म में लीन रहते थे। यद्यपि वे साधारण देह धारियों की तरह सूक्ष्म भोजन भी करते थे, तथापि शरीर के लिये वे सीधा सूर्य से आधार प्राप्त कर लेते थे, और वह थोड़ी ही देर में महीनों के लिये सूर्य से विटामिन्ज़ ले लेते थे। योग बल से वे लोक लोकान्तरों में घूमा करते थे और उनको मालूम रहता था कि कौनसी आत्मा कहां है? संसार के प्राचीन से प्राचीन ज़माने के विद्वानों, वैज्ञानिकों और सिद्ध सज्जनों की बाबत उन्हें लिखित इतिहासों से कहीं अधिक ज्ञान था। उन लोगों के विचारों और सिद्धान्तों को वे इतनी स्पष्ट रीति से समझाते कि मानों ठीक उन्हीं लोगों के शब्दों को दोहरा रहे हों। प्रत्यक्ष में उनको हिन्दुस्तानी भाषाओं के अतिरिक्त दूसरी विदेशी भाषायें नहीं मालूम थी, परन्तु ऐसा कई बार अनुभव हुआ मानों कि उनको संसार की सब भाषाएं समझने की शक्ति प्राप्त है। सूक्ष्म शरीर में वे ग्रीस, रोम, पुर्तगाल, अमरीका, इंगलैण्ड, टर्की, जापान, रूस आदि देशों में भी भ्रमण किया करते थे और इसी लिये व्यवस्थाओं का पूर्ण ज्ञान रहता था। इसी

आधार पर वे होनी वाली बातों का बहुत पहिले ही परिचय दे दिया करते थे। मसोलिनी की विजय का एक प्रभाव ऐसा है कि जिसको सब सत्संगी याद कर सके हैं। इन्हीं कारणों से वे सुक्रात, अफ्लातून, सीज़र, सिकन्दर, होमर, नैपोलियन, कान्ट, हेगल, बार्कले, न्यूटन की बातें साधारण प्रसंगों में ऐसे कह जाते कि मानों अभी २ इनसे बात चीत करके आये हैं। एक बार शिमले में उन्होंने एक ऐसा प्रभावशाली उपदेश दिया कि हेडमास्टर बैजनाथ खन्ना सुन कर दंग रह गये और पूछने लगे कि श्री महाराज जी ने ह्यूम और बार्कले आदि की बाबत कहाँ पढ़ा, किस पुस्तक में, कब समय मिल गया, और ऐसी ऐसी बारीकियां कब याद कर डालीं ? फिर उस उपदेश के चमत्कारी सिद्धान्तों को समझ कर तो वे मुग्ध हो गये और उन्होंने श्री महाराज जी के चरणों में रहने की एक प्रबल इच्छा प्रकट की। उस उपदेश का सार यह था कि आधुनिक युग किसी बीते हुए युग से खराब नहीं है। श्री महाराज जी ने सृष्टि के आरम्भ से लेकर और आज तक के युगों का सिंहावलोकन कर डाला और हरएक युग की भली बातें और बुरी बातें सामने रख कर नतीजे श्रोताओं से निकलवाए। उन्होंने बतलाया कि आधुनिक युग में भी अच्छाइयां और बुराइयां हैं परन्तु जिन मनुष्यों को कुछ कर्म करना है और जीवन व्यर्थ नहीं गवाना है उनको यही समझना चाहिये कि और युगों से यही युग अच्छा है क्योंकि इसी से हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध है और इसी में हमारा जन्म हुआ है।

श्री महाराज जी दिन रात निरन्तर भजन किया करते थे। उनकी निद्रा योग निद्रा थी कि जिससे उठ कर वे एक अद्भुत् उपदेश दिया करते थे। ऐसी निद्रा के बाद उनकी अवस्था एक विशेष रूप से दिव्य हो जाती थी और जिस किसी ने भी उनकी उस अवस्था की गुलाबी आंखें देखी हैं वह कह सक्ता है कि उन में ध्यान की कितनी एकाग्रता पाई जाती थी। इसीसे श्री महाराज जी के लिये यह एक साधारण बात थी कि वे किसी के मन की बात या उस का रोग, या उसका शोक जान लें। इस का परिचय भी दे देते थे परन्तु एक ऐसे साधारण प्रसंग में कि जिससे कोई यह न जान ले कि श्री महाराज जी में यह दिव्य शक्ति भी है। उनकी तपस्या का इतना बल था कि वे मरते हुए आदमियों को बचा देते थे। इस का तो उन्होंने बहुत ही प्रत्यक्ष परिचय दिया है। सेठ बनवारी लाल लोहिया, राव बहादुर कप्तान बलबीर सिंह जी इसके साक्षी हैं।

जो कि शक्ति श्री राम कृष्ण परम हंस में सुना करते थे वही श्री महाराज जी में प्रत्यक्ष देखीं। जिसको चाहते वे उसे ही ईश्वर और आत्मा का साक्षात्कार करा सके थे। इन सब शक्तियों की प्राप्ति उनको प्रार्थना द्वारा होती थी। प्रार्थना ही उनका अस्त्र शस्त्र और सब से बड़ा यन्त्र था। गायत्री मन्त्र को श्री महाराज जी इसी लिये सब से ऊंचा स्थान देते थे कि उसमें स्तुति और उपासना के अतिरिक्त सब से पवित्र प्रार्थना भी है। जब कभी सत्संग में वे "राम नाम नहीं छोड़ूं रे बाबा गाते थे तो उसे एक विशेष ज़ोर

हो जाते कि जिस से साफ़ मालूम हो जाता कि उनका शक्ति स्रोत क्या है। इस दृष्टि कोण से श्री महाराज जी ईश्वर के बड़े बड़े महबूबों में से एक थे जैसे कि हज़रत महबूब सुभानी।

वे मनुष्य मात्र का उद्धार हर प्रकार से चाहते थे। मुख्य उद्धार इसमें मानते थे कि मनुष्य का सम्बन्ध उसी ब्रह्म शक्ति से हो जाय कि जिसकी विभूति वे स्वयं थे, और इसका सब से बड़ा साधन प्रार्थना मानते थे। इसीलिये उन्होंने कई एक महत्व पूर्ण प्रार्थनाएं भी लिखवाईं और उनमें से सब से ज्यादा चमत्कार वाली उनकी गायत्री मन्त्र के आधार पर लिखवाई हुई प्रार्थना है जिस को कि उन्होंने अपने जाने से कुछ ही दिन पहिले लिखवाया था। उनका विश्वास भगवान की दयालुता और कृपालुता में इतना बढ़ा चढ़ा हुआ था कि वे कहा करते थे कि ईश्वर सच्ची प्रार्थना को कभी नहीं टालता चाहे वह बुरी ही क्यों न हो।

परम पूज्य श्री महाराज जी में यह गुण विशेष था कि वे किसी की प्रार्थना को टालते नहीं थे। जिसने जो कुछ मांगा उन्होंने उसे अवश्य मेव वही दिया और यदि किसी ने शायद उनसे जीवन भी मांगा तो उन्होंने परोपकारार्थ जीवन भी दे दिया और वह भी बिना जितलाए हुए। वे अन्तर्यामी थे और अन्तर्यामी रूप से प्रेरणा भी कर सकते थे इसलिये यह आवश्यक नहीं था कि उनसे मुंह फाड़ कर ही मांगा जाय। मन की गति को, मन की इच्छा को वह स्वयं समझ जाते थे। परन्तु जिस किसीने बेसब्री से मुंह फाड़ कर भी उनसे कहा, उसको उन्होंने शीघ्र ही पूरा किया।

लेखक को याद है कि एक रात्रि को सत्संग में उसने श्री महाराज जी के प्रति विख्यात कवि हज़रत जोश मलीहाबादी की निम्नलिखित चीज़ एक विशेष भाव को लेकर डरते डरते सुनाई।

"गुज़र रहा है इधर से तो मुस्कराता जा,
चिराग़े मजलिसे रुहानियां जलाता जा,
उठाके नज़र से शब आफ़रीं निगाहों को।
किसी की सोई हुई रुह को जगाता जा॥
निगाहे मेहर से ऐ आफ़ताब आलमताब।
हक़ीर ख़ाक की भी आबरू बढ़ाता जा॥
नज़र मिला के तुझे इज़्ज़ते जुनूं की क़सम।
चिराग़े महफ़िले अक़्लो हुनर जलाता जा॥
असीर करके स्याह का कुलों के हल्के में।
कमन्दे फ़िक्र ज़रा माया से छुड़ाता जा॥
उठाके आरिज़े गुल्गूं से दो घड़ी को नक़ाब।
नज़र से अर्ज़ो समा का हिजाब उठाता जा॥"

उस समय क्या मालुम था कि शिमले की काली काली रातों में इस गीत की गुञ्जार हरक्षण होगी। श्री महाराज जी ने दूसरे दिन बातों ही बातों में हंसते हुए लेखक के सम्मुख लेखक की अन्तर भावना कह सुनाई और यह भी कहा कि एसी भावनाएं अपने समय पर पूरी हो जाती हैं।

परम पूज्य श्री महाराज जी के लिये जीवन मरण कोई समस्या नहीं थी क्योंकि उनकी दृष्टि माया को भेदकर बहुत आगे पहुंच चुकी थी। वे उपदेशों में कहा करते थे कि ब्रह्म के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। और ब्रह्म की व्याख्या उसी प्रकार करते जैसे संसार के बड़े बड़े पीर पैगम्बर, हज़रत ईसा व मूसा व मुहम्मद, व गुरु नानक कर गये हैं, अथवा जैसा कि संसार के मज़हबों

के पवित्र ईश्वरीय ग्रन्थों में लिखी है और मुख्यतया वह ऐसी ही होती थी कि जैसी गायत्री मन्त्र में बीज रूप से की गई है, परन्तु उनके शब्द बहुत ही सरल, गम्भीर और रोचक होते थे कि सहज ही में अटिल से अटिल बात समझ में आजाती थी। फिर उनके शब्दों में एक शक्ति थी कि जो नास्तिक को आस्तिक, दुराचारी को सदाचारी बना देती थी और सर्व साधारण में ईश्वर के लिये श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न कर देती थी। आत्मा को वे ईश्वर, ब्रह्म का ही अंश मानते थे और ज्योति स्वरूप, अजर अमर मानते थे कि जो सर्वदा, शान्त रहता है और जिसमें ज्ञान और आनन्द का भण्डार है। संसार एक क्रीड़ास्थल है कि जहां आत्मा एक शरीर रूपी विचित्र नौका में क्रीड़ा करती है। खेल ही में वह अपने को बन्धन में डाल लेती है, उपाधियां लेकर विषय भोग में फंस जाती है। परन्तु वास्तव में यह एक विशेष अवस्था है कि जिसमें आत्मा को कर्म करने का अवसर मिलता है। यदि ज्ञान रखते हुए क्रीड़ा में आत्मा प्रविष्ट रहे तो बहुत अच्छा है यदि अज्ञान अन्धकार में फंस जाय तो समय व्यर्थ गया समझो। इसी लिये वे ज्ञान प्राप्ति पर ज़ोर दिया करते थे और उसके लिये प्रेम, भक्ति मार्ग, भगवद्भजन कीर्तन आदि ही मुख्य साधन बतलाया करते थे। उनकी दृष्टि में माया रूपी संसार तो क्रीडास्थल था ही, बुरे और भले को भी वे माया ही के बन्धन मानते थे। मनुष्य कृत सामाजिक व्यवस्था के लिये निस्संदेह भला आदमी बुरे से अच्छा है परन्तु उनकी अध्यात्मिक दृष्टि में बुरे भले का कुछ भेद नहीं था। क्योंकि बुरा आदमी तो भलों की दृष्टि से संसार चक्र में फंस ही रहा है, बुरा आदमी भी 'भला' 'भला' कह कर प्रवृत्ति मार्ग पर ही चल रहा है और स्वयं अपने को यह सन्तोष देकर कि मैं भला काम कर रहा हूं धोखा दे रहा है। सारी बात है ज्ञान की। वास्तव में ज्ञान किसी को भी नहीं। और जिस किसी को भी ज्ञान हो गया बस वह भलाई और बुराई से ऊपर उठ गया। और ऊपर उठने का तरीका सिर्फ़ भगवान् की भक्ति और प्रेम बतलाया करते थे। इसी लिये उनके द्वारा कितने ही पापियों, महा पातकियों का आश्चर्य जनक उद्धार दृष्टि गोचर हुआ। परन्तु ज्ञानी का धर्म यह नहीं कि वह क्रीड़ास्थल के मिथ्या होने का ज्ञान होते ही उसे नष्ट भ्रष्ट करदे अथवा उसके प्रति औरों में निराशा के भाव उत्पन्न करे, बल्कि जैसे खिलाड़ी लोग यह ज्ञान करके भी कि अब हमें इस स्थल पर नहीं खेलना है, उस स्थल को नहीं बिगाड़ते अपितु यथा शक्ति और भी सुन्दर बना देते हैं कि दूसरे खिलाड़ियों को खेलने में सुभीता और आनन्द हो, ज्ञानी को भी चाहिये कि वह इस संसार को जितना हो सके हरा भरा और सुभीते वाला, दुःख दरिद्रता से रहित बनाने का प्रयत्न करे। ज्ञान फैलाए, धर्म और सदाचार का प्रचार करे, सच्ची शिक्षा दे, बीमारों दीने दुखियों की सहायता करे, समाज को मिथ्या बन्धनों से मुक्त करे सच्ची स्वतन्त्रता, सच्चे प्रेम के बीज बोए, मनुष्य जाति में से राग, द्वेष, ईर्षा, पाशविकता को दूर करे और उनमें सहिष्णुता, शान्ति, विज्ञान, कला, प्रेम इत्यादि बढ़ावें। जीव मात्र पर दया करना सिखलावें। नीच ऊंच के भाव को मिटा

कर, एकता और समानता फैलावे। क्योंकि सुरे वायु मण्डल से निकलने पर मनुष्य का आत्मा उन्नति पथ पर आ जाता है और वह सदा उन्नति करता रहता है। समाज तो एक मनुष्य कृत व्यवस्था है कि जिसका परिवर्तन मनुष्य पर निर्भर है और जिसके नियम मनुष्य द्वारा बनाए गये हैं। मनुष्य जब चाहे उसमें उथल पुथल कर दे, जब चाहे क्रान्ति मचादे। इसी लिये इसके ऊंचे उद्देश्य होने चाहियें और इसका लक्ष ज्ञान होना चाहिये। उसमें कम से कम बन्धन होने चाहिये और अधिक से अधिक स्वतन्त्रता। समाज की व्यवस्था सर्वथा निषेधात्मक नियमों पर नहीं होनी चाहिये जैसी कि आज कल अवनत हिन्दु समाज जो पुरातन और सनातन कहा जाता है, बल्कि अत्यन्त आवश्यक बातों का ही निषेध होना चाहिये। जिस्से व्यक्तित्व के विकास का क्षेत्र संकुचित अथवा सीमित न हो जाय। इसी लिये सामाजिक रूढ़ियां भी ऐसी होनी चाहिये कि समाज और व्यक्ति की उन्नति में किसी भी प्रकार की बाधा न हो। काल परिवर्तन शील है, संसार चेतन है, जड़ नहीं, इसलिये यह भी उन्नति शील है, मनुष्य की बुद्धि भी दिन प्रति दिन विकास को प्राप्त होती है, इसलिये समाज की भी उन्नति शील व्यवस्था होनी चाहिये और देश, काल, और आवश्यकतानुसार परिवर्तन होते रहने चाहिये। स्वस्थ बुद्धि के नेतृत्व में समाज को चलना चाहिये न कि दकोसलों और बुढ़िया पुराण के। संक्षेप में समाज में एक ऐसे वायु मण्डल का रहना आवश्यक है कि जहां मनुष्य की उन्नति दिन प्रति दिन हो, उसकी बुद्धि विकसित और चमत्कृत हो, उसकी शारीरिक उन्नति हो, वैज्ञानिक उन्नति हो, अध्यात्मिक उन्नति हो और आनन्द ही आनन्द की महक उठती रहे। इसी लिये उन्होंने स्त्रियों को समानाधिकार देने का न्याय कर दिया है, और इस ही लिये उन्होंने वृद्ध यद्यपि प्रचलित विवाह पद्धति के सुधार का भी आदेश कर दिया है। यही कारण था कि श्री महाराज जी नवयुवकों को जिम्मेदारी लेने का बहुत ही अधिक अवसर दिया करते थे, बल्कि वृद्धों पर तो इतना विश्वास भी नहीं करते थे क्योंकि बूढ़े तोते आखिर कौनसा नया पाठ पढ़ सके है और उनमें कितनी शक्ति और कितनी नवीनता होती है कि जो वे किसी नवीन काम को कर दिखा सके हैं सिवाय बाधा डालने के। इस बात का श्रेय श्री महाराज जी ही को है कि उन्होंने नवयुवकों पर इतना विश्वास किया और उन्हे विश्वास के योग्य ठहराया नहीं तो इस देश में तो परम्परा से यही चला आया है कि जब तक किसी मनुष्य के पुत्र या पौत्र विवाह इत्यादि करके समझदार न हो जांय उसे लोग ना समझ, ना तजरबेकार ही समझते हैं यद्यपि यह मानते हैं कि राम, कृष्ण, गुरुगोविन्द सिंह आदि ने जो कुछ भी किया बचपन से ही आरम्भ किया किसी ने लकड़ियों में आरम्भ नहीं किया।

श्री महाराज जी की दया दृष्टि नव युवकों पर ही नहीं बल्कि आधुनिकता और नवयुगता पर भी थी। यह उनकी कृपा विशेष समझनी चाहिये, क्योंकि आधुनिकता पर नवयुवकों के अतिरिक्त सब की कड़ी ही दृष्टि पड़ती है, और सब की बहुत कठोर ही आलोचना होती है। बल्कि

कोई भी उसे भला नहीं बताता, उल्टे सब उसे बुरा ही कहते हैं, धिक्कारते हैं और अनेक सज्जन तो अप शब्द भी कह जाते हैं। श्री महाराज जी इसे सराहा करते थे। वे कहा करते थे नये विचार, नयी स्वतन्त्रता, नये आविष्कार कुछ बुरे नहीं हैं बल्कि आधुनिक बुद्धिमानों के चमत्कार हैं, उनसे पूरा लाभ उठाना चाहिये। जीवन में वह बहुत सहायता देते हैं परन्तु जो अच्छी अच्छी और अमर प्राचीन बातें हैं। उन्हें भी मत भूल जाओ क्योंकि वे ही मूलाधार हैं। यदि प्राचीन बातों को भूल जाने की बुरी आदत पड़ गयी तो उन्नति बन्द हो जायगी। साथ ही साथ जो आजकल की हानि कारक और बुरी बातें हैं, कई प्रकार के जगड़म्बाल और दूषण जैसे निरर्थक फ़ैशन, नास्तिकता, विषय वासनादि, दुर्व्यसन, इन को अपने समीप मत आने दो क्योंकि इनसे ज्ञान का लक्ष जाता रहता है और घोर अवनति तथा अन्धकार और अविद्या में प्रवेश हो जाता है। वेदों को इस युग में ले आओ, तुम्हारे पास तो हवाई जहाज है, वेदों के पास उसी पुराने फैशन के ठेले में बैठ कर पुराने युगों में मत घुस जाओ नहीं तो संसार में तुम पीछे रह जाओगे। वे कहा करते थे कि हर समाज की हर धर्म की, हर मनुष्य की अच्छी अच्छी बातें अपना लो और उन्नति करो। अपने ज्ञान को यथार्थ रक्खो, प्रसन्न रहो, खेलो कूदो, स्वतन्त्र रहो परन्तु बिना नकेल के उपद्रवी ऊंट मत बनो, जहां सुधार की आवश्यकता हो सुधार करलो परन्तु इस क्रीड़ा स्थल को जो विश्व का रंग मञ्च है, दूषित मत करो, हरा भरा रक्खो यही ईश्वर की इच्छा है। और जो आने वाले युग हैं उनके लिये हर प्रकार से तैय्यार रहो। बुरे काम करके भगवान् को दोष मत दो, अपने दुःखों का उत्तर दायक भगवान् को मत ठहराओ। भगवान् ने तो बुद्धि देदी। उसका ठीक प्रयोग करो। क्योंकि जो दुःख होता है वह मनुष्य की अपनी गलती और लापरवाही से होता है भगवान नहीं देता। यदि यह कहा जाय कि भगवान् देता है, तो फिर मनुष्यता और सहानुभूति तो पाप हो जाय। और ईसा और मूसा तो बड़े पापी ठहराए जांय क्योंकि इन्होंने मनुष्यों के दुख दूर करने का विशेष प्रयत्न किया। यदि ये दुख भगवान ने दण्ड के रूप में उन दुःखी मनुष्यों को दिये थे तो इन पैगम्बरों, महात्माओं को क्या अधिकार था कि वे उन्होंने दुःखों से मुक्त करते और भगवान् के विरुद्ध काम करते। परन्तु यह ठीक नहीं है। भगवान् तो सब का भला ही करता है। प्रार्थना किये जाने पर वह अवश्यमेव सुनता है और यद्यपि मनुष्य का ही कुकर्म क्यों न हो अपनी दयालुता से सुधार देता है।

कैसी उत्तम शिक्षा है कि जिसको देकर श्री महाराज जी ने जीव और ब्रह्म, माया और जीव, हृदय और मस्तिष्क, व्यवहार और प्रेम, विज्ञान और धर्म की प्राचीन फूट, पुराना अपवाद, पुराना झगड़ा मिटा दिया और उनमें अनिवार्य एकता स्थापित कर वास्तव में उन्होंने सनातन धर्म को ही उदार बना कर उसही का उद्धार नहीं किया बल्कि सब धर्मों और मत मतान्तरों और उनके अनुयायियों के बीच का झगड़ा हटा दिया और यदि हठ बुद्धि छोड़ कर देखें तो सच्चा भक्ति और प्रेम का रास्ता दिखा दिया।

परम पूज्य श्री महाराज जी जीवन मुक्त थे। फिर उन्हें शरीर रखने की आवश्यकता क्या रह गयी थी जो हम आशा करते हैं कि वे अभी हमें छोड़ कर न जाते। यह नहीं बल्कि श्री महाराज जी ने शरीर क्यों छोड़ा ? इस पर कई मत हैं। पहिला तो यह है कि परलोक गमन सब के लिये है। राम कृष्णादि सब को ही शरीर त्यागना पड़ा। यह तो प्रकृति का नियम संसार की मर्यादा है, न कोई सदा रहा है न कोई सदा रहेगा यद्यपि ऋषिमुनि करोड़ों वर्ष समाधिस्थित रहे हैं और जिनको अमरत्व प्राप्त हो चुका है जैसे श्रीनारद जी, गोपीचन्द भर्थरी, श्री गुरु गोरखनाथ ! दूसरा मत है कि संसार में आना जाना भगवान् की इच्छानुसार है, इसमें किसी का चारा नहीं और जिन्हें वह चाहता है उन्हें तो खास अपने ही पास रखता है। तीसरा मत यह है कि आत्मा अमर है और सर्व सिद्धि सम्पन्न है, ब्रह्म का ही अंश है अज्ञानवश शरीर धारण करता है तथा उपाधियां लेता है और ज्ञान होने पर बन्धनों में बन्दी सा अनुभव करके इसे छोड़ ही देता है और ब्रह्म में लीन होकर अमरत्व प्राप्त कर लेता है। यह भी ठीक है ज्ञान होने पर पञ्च भौतिक शरीर ऐसी वस्तु नहीं कि जिससे प्रेम किया जा सके। तीसरा मत यह कि जब ऐसे महात्मा, ऋषि, महर्षि देख लेते हैं कि उनका मिशन, उद्देश्य पूरा हो गया अर्थात् जिस लिए वे आए थे वह काम ऐसा चल निकला कि अब बाधा नहीं पड़ सकती तो वे शरीर को त्याग देते हैं। कहीं तक यह भी ठीक है। परन्तु ज्ञानियों की बाबत सब सहमत हैं कि उनके लिए मृत्यु नहीं हो तो वह तो नव जीवन होता है और उसका उनको पूरा ज्ञान होता है। ऐसे महात्माओं के लिए इतिहास में प्रमाण है कि उनको पहिले ही से ज्ञान हो जाता है।

परम पूज्य श्री महाराज जी को भी इस बात का ज्ञान था। कई ऐसी घटनाएं हुईं कि जिनसे इस वज्रपात का परिचय मिलता था और हृदय दहल उठता था परन्तु उनकी ओर निहार कर फिर कुछ ध्यान नहीं रहता था।

पांच छः महीने हुए हंसते २ श्री महाराज जी ने एक दिन कोई सुबह के आठ बजे यह कहा कि मनुष्य का शरीर परोपकार के लिये है और तुम सबको परोपकार में रत रहना चाहिये और हमारी तो अब इच्छा शरीर छोड़ने की है। सब लोग जो श्री महाराज जी की गाड़ी के साथ थे घबड़ा गये। फिर महाराज जी हंसे और बात को टाल गये। अबकी बार जब शिमले जाने लगे तो सत्संग भवन के नीचे मोटर तक वे गाड़ी के बजाय चारपाई पर आए और "राम नाम सत्य है" "राम नाम सत्य है" ऐसे शब्द भी कहते आए। जब उनसे किसी ने पूछा कि आप कब आएंगे तो कहने लगे कि जीते रहे तो आजायेंगे इसी तरह और भी ऐसी बातें हैं जिन पर अब ध्यान देने से मालुम होता है कि वे अन्तिम समय की ही हों। परन्तु वह अंतिम समय श्री महाराज जी का नहीं था। यह एक गुप्त भेद है, यह एक रहस्य है जो केवल आस्तकों के लिये है या जो नास्तिकों के लिये है।

मरना एक खेल है जो यमराज खेलता है और जिससे खेलता है जीत ही जाता है। परन्तु महात्माओं के इतिहास से पता चलता है कि वह हार भी जाता है और कई बार बहुत बुरा हारता

है, उल्टी मुंह की खाता है। यह वीरों क्षत्रियों से खेलता है, डाक्टरों वैद्यों हकीमों से खेलता है, प्रेमियों से खेलता और उन्हें चिढ़ाता है, यह भक्तों से खेलता है और ज्ञानियों योगियों से भी खेलता है। सुक़रात, बुक़रात, लुक़मान, अफ़लातून सिकन्दर, बाबर, ईसा, मूसा, मुहम्मद, बुद्ध, राम कृष्ण, सब से इस का खेल हुआ है। आज कल के महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी राम तीर्थ, और परमपूज्य श्री महाराज जी से भी हुआ है। और अब श्री १०८ सच्चे बाबा से भी हो रहा है, जिन्होंने कि घोषणा करदी है कि यमराज जीत ही नहीं सका। परन्तु श्री महाराज जी के साथ इस का खेल एक विचित्र प्रकार से हुआ है।

परम पूज्य श्री महाराज जी के रहते हुए उन के भक्तों पर काल का कोई ऐसा दांव नहीं चल सका कि जिसका शोक उनको या उनके भक्तों को देखना पड़ा हो। जिस तरह हज़रत महबूब सुभानी एक बुढ़िया के दो आंसुओं को नहीं देख सके, और बारह वर्ष की डूबी हुई बारात को सचल कर फिर जीवित करवाए बिना नहीं रह सके, श्री महाराज जी भी किसी की जीवन भिक्षा को नहीं टाल सके थे। तुरन्त ही काल को वे फुसला लेते थे। इस प्रकार कई बार जब काल खाली हाथ लौट कर गया तो उसने अनुभव किया कि मैं तो बहुत धोखे में आ रहा हूं, मेरी व्यवस्था में गड़बड़ मच रही है। ऐसी मित्रतातो ठीक नहीं। स्वभाव चंचल काल ने बाज़ू ठोक के प्रण कर लिया कि अब की बार अपने शिकार को लिये बिन्न नहीं आऊंगा, वहीं बैठ जाऊंगा, धूनी रमा दूंगा धरना धर दूंगा, सारी कसर एक ही बार निकाल लाऊंगा पर खाली हाथ कदापि नहीं आऊंगा। इस कुचेष्टा का, दूषित, मलीन, द्वेष पूर्ण संकल्प का श्री महाराज जी को पहिले ही पता चल गया था। परन्तु आने दो चिरकाल का मित्र है, शायद मान जाय। वह आया और उसने चाहा कि एक ही वार कई व्यक्तियों को हड़प कर जाऊं परन्तु श्री महाराज जी के सामने नम्र हो गया और इस वार के कठिन प्रण की कथा सुना कर आज्ञा चाही कि अपना काम आरम्भ करें परन्तु श्री महाराज जी ने आज्ञा न दी। फिर उसने आग्रह किया। श्री महाराज जी ने उसे शान्ति दिलवाई। परन्तु स्वभाव वश उसने छेड़ छाड़ शुरु कर दी। पहिले हंसी ही होती रही परन्तु फिर काल अपने कमीने पन पर उतर आया। परन्तु काल की कौन सुनता है। उसने धमकी दी डराया जवाब मिलाः—

"डरेंगे वोह जो मोहताजे हवि से जिन्दगी होंगे।
हम अपनी जान तो पहिले ही बक़्फ़ वार कर बैठे॥"

भगवान् के यहां से काल पर डांट पड़ी और हुक्म हुआ कि वह सफल मनोरथ नहीं हो सका। नीच निराश होगा परन्तु लौटते समय उसे एक धूर्तता सूझ गई और उसने नम्रता से प्रार्थना की कि यदि वे नहीं तो आप अवश्य चलें। यह जीवन मुक्त लोगों का एक लक्षण है, सिद्ध योगियों के एक उच्चतम गौरव की बात है कि काल को औरों के लिए मोड़ देंगे, औरों के लिए प्रार्थना कर देंगे परन्तु अपने लिये प्रार्थना किये जाने पर सहर्ष काल के मेहमान हो जायंगे क्योंकि काल उनको रख तो सका ही नहीं, वे तो भगवान् के सिंहासन के साथ रहने वाले लोग हैं

योगेश्वर श्री कृष्ण के हृदय मन्दिर की मूर्तियां हैं, वे किंचित् मात्र भी परवाह नहीं करते । परन्तु नीचकाल का स्वार्थ सिद्ध हो जाता है वे साकार रूप संसार में नहीं रहते और स्थूल दृष्टि से अन्तरध्यान, ओझल हो जाते हैं । बस यही वास्तव में श्री महाराज जी के साथ हुआ है ।

परन्तु उनके जाने का दुःख उनके भक्तों को किस प्रकार हुआ, कोई नहीं जान सका । हां जब उनके शरीर को ११ जुलाई के ११ बजे आश्रम में लेकर आए तो आश्रम की आत्मा अलंकार हीन, भूषण रहित इस प्रकार विमुक रही थी ।

"आज तस्वीरें फ़ना आई है दिल्बर बनकर,
ले चलो बाइलो आंसू को हमारे भरकर,
बिजलियां गर्जें अब आहों की मल्हारें सुनकर,
तुम भी तब बर्सना सावन की बहारें बनकर ।
"आज तस्वीरें फ़ना आई है दिल्बर बनकर,
पाकज़ां लेचली दिल्बर को बहाना भरकर,
हरफ़ना, चक्दे क़ज़ां, दिल न दुखा हंस हंस कर,
हम तसव्वुर में ही भर देंगे समन्दर रोकर,
और तस्वीर को पूजेंगे मुक़ाबिल रख कर ॥"

सत्गुरु

(ले० श्री भक्त नन्द किशोर जी)

श्री १०८ परम गुरु देव श्री महाराज जी के दर्शन का सौभाग्य प्रथम बार ई० सन् १९१२ की शरद ऋतु में संगरूर में सरदार हरिश्चन्द्र जी के बाग में प्राप्त हुआ था । उसी दिन महाराज जी ने कृपा करके उपदेश और प्रेम से मन को आकर्षित कर लिया दूसरी बार देहली के नजदीक नरेला ग्राम के समीप एक बगीचा में जाकर दर्शन किये, उस दिन गुरुदेव जी ने अपनी सिद्धि की झलक दिखलायी, उसके पीछे मन इतना खिच गया, कि महीना दो महीना में दर्शन करने को चित्त बहुत ही व्याकुल सा रहने लगा और जहां कहीं पर भी गुरुदेव जी का पता लगता वहीं जाकर उनके चरणों में रह कर कुछ दिन रह कर सत्संग का लाभ उठाता । गुरुदेव के उपदेशों में इतना आनन्द आता था कि ८-९ घण्टे बीतने पर भी टाइम का पता ही न लगता था । कुछ सत्संगियों की प्रेरणा से श्री महाराज जी भटिण्डा पधारे। मार्ग में एक दिन रामपुरे तथा एक दिन हांसी ठहरे । वहां एक साधू के पास पहुंचे वहां पहुंचते ही वह साधु, और पास बैठने वाले सब ऐसे प्रसन्न हो गये मानो उनको जीवन दान मिला हो । उन सब ने कहा कि महाराज जी यदि आज शाम तक आप दर्शन न देते तो सूर्य अस्त होते ही इस साधू ने जल कर मरने का दृढ़ निश्चय कर रक्खा था । हांसी से भटण्डा पहुंचे भटण्डा में आठ रोज तक खूब सत्संग रहा सत्संगियों को खूब आनन्द रहा । भटिंडा से गुरुदेव हरिद्वार पधारे वहां से राव सहाब की प्रेरणा से पुनः रामपुरे पधारे मुझे भी पता लगा कि गुरुदेव रामपुरे पधारें हैं तो मैं भी वहां आया ।

वहां एक दिन ला० मथुराप्रशाद जी देहली से मैं और ला० रामजीदास भटिंडा से बोर्डिंग से कुंवर दलीपसिंह और रामपुरे से, रावसाहब आये और हम सबने इकट्ठे होकर प्रार्थना की कि यहां पर भी कोई देश की उन्नति का कार्य होना चाहिये । श्री महाराज जी ने फरमाया कि तुम

सब का बहुत अच्छा विचार है लेकिन ऐसे कार्य के लिये एक आदमी का जीवन चाहिये। कुंवर दलीपसिंह ने अपना जीवन देने का वचन दिया। और ४,५ महीने में अपनी धर्मपत्नी, श्रीमती उमराव देवी जो कि एक सुयोग्य विद्वान और डाक्टरी पढी हुई थी, उनके सहित वानप्रस्थाश्रम धारण किया और आश्रम में निवास करने लगे। कुछ दिन पश्चात् बहुत से लड़के इन्ट्रेन्स और एफ. ए. की पढ़ाई छोड़ कर आश्रम में रहने लगे और यहां पर ब्रह्मचर्याश्रम बन गया। उमराव देवी के साथ में सूरज देवी और बदामों देवी भी बहुधा आश्रम में रहती थी, इन्हीं के उत्साह और प्रयत्न से इसी तरह कन्या पाठशाला भी बन गई। इसी तरह अछूतशाला, गौशाला, औषधालयादि बढ़ते २ आश्रम बन गया। वानप्रस्थ के २-३ वर्ष पश्चात् उमराव देवी का देहान्त हो गया और श्री महाराज जी की आज्ञा से महाशय दलीप सिंह जी ने वानप्रस्थाश्रम त्याग कर संन्यासाश्रम धारण किया और म० कृष्णानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए।

गुरु जी के जब से मुझे दर्शन हुये तब से ही दिन प्रति दिन श्रद्धा विश्वास बढ़ता ही गया। जब से श्री पूज्य श्री चरणों में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तब से ही गुरुजी ने कई तरह के परोपकार के कार्य करवाये। महाममना पं० मदन मोहन मालवीय जी से देहली में "अखिल भारतीय गोरक्षा मंडल" स्थापित करा कर कई महीने उनके साथ में मुझे रख कर अकाल में हजारों गौओं के प्राण बचा कर गौ रक्षा का अनुभव करवाया।

देहली, रेवाड़ी आश्रम, शिमला, प्रयाग आदि स्थानों में नेत्र दुःख निवारणी सभा बनवाकर भिन्न २ स्थानों में १६ चक्षुयज्ञ करवाकर कई हजार गरीब अन्धों को नेत्रदान दिलवाकर गरीबों की निष्काम सेवा और ग्राम सुधार का एक नया मार्ग बतलाया और भी बहुत सी अपनी अलौकिक महिमा और विचित्र घटनायें दिखलाई कई। स्थानों व आश्रमों में साधू महात्माओं के पास भेज भेज कर उनका सत्संग और अनुभव करवाया। मल विक्षेप और आवरण का ज्ञान करा, लोभ मोह, काम, अहंकार और इनसे उत्पन्न होने वाला क्रोध मनुष्य को कैसे २ नाच नचाते हैं इनका अनुभव करवा मन मारने का अभ्यास करवाया। यदि लिखे जांय तो एक बहुत बड़ी पुस्तक बने। अतः संक्षेप में जो बात अपने अनुभव से खूब समझी है और श्रीमुख से कईबार सुनी है वोह एक यह है कि श्री महाराज जी सत्गुरु थे। पहिले तो गुरुजी ने उपदेश सुनाये फिर अपने उपदेशों में जो प्राचीन आश्रमों की बात सुनाते थे वैसा ही आश्रम बनाया वोह ज्ञान कल्प के आदि में जो भगवान ने सूर्य के प्रति, सूर्य ने अपने पुत्र मनु के प्रति, मनु जो ने राजा इक्ष्वाकु के प्रति और भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत में अर्जुन को दिया था उसी ज्ञान का श्री सद्गुरु महाराज ने आश्रम में जिन जिनको पात्र समझा उनको अच्छी तरह अभ्यास करा करा कर सिखा गये हैं। जब उन्होंने अपने कार्य को पूर्ण समझ लिया है तभी अपने निज रूप में समाये हैं।